नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2020

Book Title: Nigeria Ki Lok Kathayen-2 (Folktales of Nigeria-2)
Cover Page picture: Nigerian Mask
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Nigeria

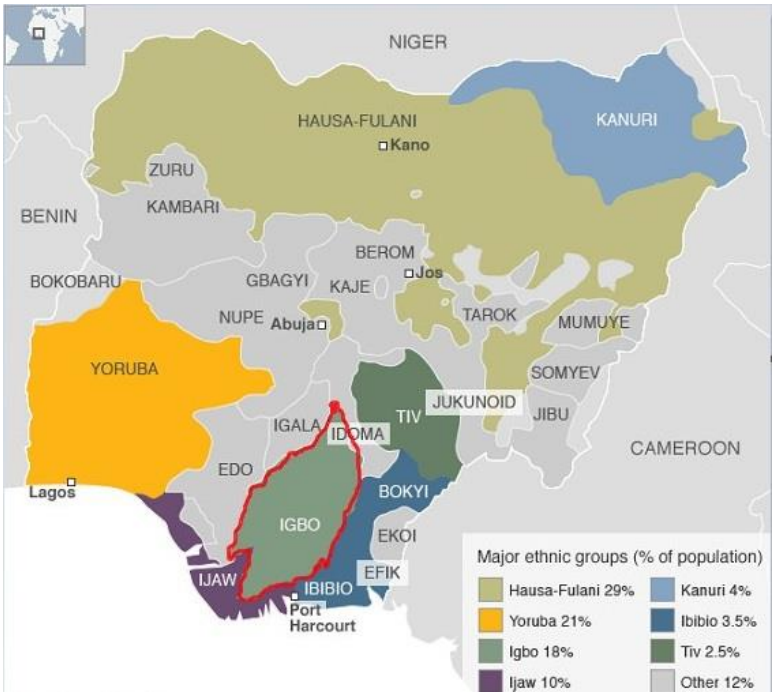

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2 7

1 किन किन और बिल्ला 9

2 जंगल के राजा का दफ़न 16

3 हयीना की मॉ का दफ़न 23

4 ओलोबुन की भेंट 27

5 शिकारी और उसकी करामाती बॉसुरी 31

6 टिनटिन्यिन और भूतों की दुनियॉ का राजा 39

7 एक लड़का और जादू का याम 44

8 एक बेसहारा लड़का और उसकी जादुई डंडियॉ 49

9 मोटिनू और बन्दर 75

10 एक सुन्दर लड़की और मछली 84

11 एक शिकारी और एक हिरनी 91

12 ओनी और एक बड़ी चिड़िया 98

13 ओलूसेग्वे 109

14 जुड़वॉ बच्चे 128

15 टिड्डा और मेंढक ..... **Error! Bookmark not defined.**

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2

नाइजीरिया देश अफ्रीका महाद्वीप के पश्चिम की ओर उसके दक्षिणी तट पर स्थित है। नाइजीरिया दुनियॉ का सातवॉ सबसे ज़्यादा जनसंख्या वाला देश है और अफ्रीका का सबसे ज़्यादा जनसंख्या वाला देश है। यहॉ पेट्रोल बहुत होता है और यही इनकी आमदनी का मुख्य जरिया है।

यद्यपि नाइजीरिया में बहुत सारी जनजातियॉ हैं पर वहॉ की तीन जनजातियॉ सबसे ज़्यादा मशहूर हैं – योरुबा, फुलानी या हौसा और ईबो। यहॉ **500** से भी ज़्यादा भाषाऍ बोली और समझी जाती हैं पर योरुबा हौसा और ईबो भाषाऐं सबसे ज़्यादा बोली और समझी जाती हैं। पर टूटी फूटी अंग्रेजी बहुत सारे लोग बोलते और समझते हैं। इनकी अपनी कोई लिपि नहीं है ये अपनी भाषाऐं लिखने के लिये रोमन लिपि का इस्तेमाल करते हैं।

यहॉ की जनसॅख्या में ईसाई और मुसलमान करीब करीब आधे आधे हैं। नाइजीरिया में खाना बहुत तीखा बनता है और वहॉ के लोग अधिकतर पाम का तेल और मूॅगफली का तेल खाते है। ये लोग बीयर भी बहुत पीते हैं। यहॉ की स्टार बीयर बहुत अच्छी होती है और यह दूसरे देशों तक में भी बहुत मशहूर है। ये लोग फुटबाल और बास्केट बाल खूब खेलते हैं।

अफ्रीका के **54** देशों में से केवल पॉच देशों की ही लोक कथाऐं ज़्यादा मिलती हैं – नाइजीरिया, तनज़ानिया, दक्षिण अफ्रीका, और इथियोपिया। इसलिये इन देशों की लोक कथाऐं इन देशों के नाम से अलग से ही दी गयी हैं। इन सब देशों की अपनी अपनी लोक कथाऍ है और अपनी अपनी दंत कथाऐं हैं।

योरुबा दंत कथाओं के अनुसार दुनियॉ का पहला आदमी नाइजीरिया के एक शहर इले–इफे में पैदा हुआ था इसलिये दुनियॉ यहीं से शुरू होती है और यहॉ की सभ्यता दुनियॉ की हर सभ्यता से पुरानी है। उधर इथियोपिया में करीब साढ़े तीन मिलियन साल पुराना एक ढॉचा ऐसा मिला है जिससे ऐसा लगता कि दुनियॉ का सबसे पुराना आदमी यहीं था। मिश्र के पिरामिडों को कौन नहीं जानता कि वहॉ की सभ्यता कितनी पुरानी है।

इस महाद्वीप से हमने **550** से भी अधिक लोक कथाऐं इकट्ठी की हैं। वे सभी लोक कथाऐं कुछ "अफ्रीका की लोक कथाऐं", कुछ व्यक्तिगत देशों के, और कुछ व्यक्तिगत विषयों के अन्तर्गत दी जाती हैं। जैसे अफ्रीका के देशों में पश्चिमी अफ्रीका के खरगोश, इजापा कछुए और अनन्सी मकड़े की लोक कथाऐं बहुत सारी हैं और बहुत मशहूर हैं इसलिये उनको उनके नाम से ही प्रकाशित किया गया है। वे यहॉ शामिल नहीं की गयीं है।

यहॉ नाइजीरिया देश की लोक कथाओं का पहला संकलन प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम सबको बहुत पसन्द आयेंगी और नाइजीरिया की संस्कृति और सभ्यता के बारे में कुछ जानकारी देंगी।

1 किन किन और बिल्ला[1]

किन किन जंगल का सबसे छोटा पक्षी होता है जो अपने छोटा होने के बावजूद अपने आपको बहुत बड़ा समझता है। एक समय था जब कोई उसकी परवाह नहीं करता था। किन किन को भी यह पता था पर वह भी किसी की चिन्ता नहीं करता था।

एक जंगली बिल्ला भी था जो किन किन की तरह ही था। उसको भी कोई पसन्द नहीं करता था क्योंकि वह जानवरों की किसी मीटिंग में कभी भी नहीं जाता था और अलग अलग ही रहता था।

तुम लोग यह सोच रहे होगे कि जब इन लोगों को जंगल में कोई पसन्द नहीं करता था और दोनों का स्वभाव काफी मिलता जुलता था तो ये दोनों आपस में दोस्त होंगे पर ऐसा भी नहीं था। ये दोनों आपस में भी खूब लड़ते झगड़ते रहते थे।

एक बार जानवरों के राजा ने पक्षियों के राजा से मिल कर यह प्लान बनाया कि वे अपने अपने जानवरों और पक्षियों से कहेंगे कि वे जानवरों के राजा के लिये एक नया खेत बनायें।

पक्षियों के राजा ने अपने पक्षियों को इस काम के लिये एक अच्छी सी जगह चुनने के लिये भेज दिया और उनको कह दिया कि वे खेत बनाने में जानवरों की सहायता करें।

[1] Kin Kin and the Cat – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

सो बिल्ले को छोड़ कर सभी जानवर और किन किन को छोड़ कर सभी पक्षी जानवरों के राजा का खेत बनाने में जुट गये।

जंगल के बीच में एक बहुत बड़ा मैदान साफ किया गया। थोड़ी सी जमीन को जला कर याम[2] बोने के लिये तैयार किया गया। थोड़ी सी जमीन में मक्का उगायी जानी थी। पक्षियों ने भी बीज बोने में सहायता की।

किन किन यह सब कपास के एक पेड़ पर बैठा बैठा देख रहा था। उसको उन सबकी सहायता करने की कोई इच्छा नहीं थी बल्कि उसको तो गुस्सा आ रहा था कि उसको सहायता के लिये क्यों नहीं कहा गया। उधर बिल्ला भी छिप कर यह सब देख रहा था।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो जानवरों के राजा को उसका खेत देखने के लिये बुलाया गया। इतने में किन किन ने एक गीत गाया —

ओ जंगल के राजा, देखो जानवरों और पक्षियों ने क्या किया है
पेड़ उखाड़े, जमीन साफ की है
और जानवरों के राजा ने तुम्हारे राज्य में अपना खेत बनाया है
जो तुम्हारा है उसे ले लो और वहाँ घास फूस उगा दो

[2] Yam is a tuber vegetable and is a staple food of Nigeria. It sometimes more than 5-10 pounds each. See its picture above.

जैसे ही किन किन ने अपना गीत खत्म किया वह साफ किया हुआ मैदान और उस पर बनाया गया खेत सब गायब हो गये और वहॉ जंगल हो गया।

अगले दिन जानवरों के राजा को अपना खेत ही दिखायी नहीं दिया तो उसने जानवरों और पक्षियों को फिर से खेत बनाने का हुक्म दिया। सो एक बार फिर काम शुरू हुआ और खत्म हुआ।

जानवरों के राजा के खेत देखने से पहले किन किन ने फिर वही गीत गाया और उसका बना बनाया खेत फिर गायब हो गया। सो राजा को अपना खेत फिर दिखायी नहीं दिया।

जानवर और पक्षी बेचारे फिर काम पर लगे पर किन किन ने तीसरी बार भी वही गीत गा कर उनकी मेहनत पर पानी फेर दिया।

बिल्ले ने सोचा कि यह काम किन किन का ही हो सकता था और किसी का नहीं पर उसने कहा कुछ नहीं और इस सबका आनन्द लेता रहा।

खेत चौथी बार तैयार किया गया और इस बार उस पर एक चौकीदार तैनात करने का निश्चय किया गया ताकि उसका पता चल सके जो यह सब कर के उनकी मेहनत बिगाड़ रहा था।

इस चौकीदारी के काम के लिये चीते को चुना गया। उसने सारा दिन तो चौकीदारी की पर दिन में गर्मी बहुत होने की वजह से शाम को उसे नींद आ गयी।

तभी किन किन ने गीत गाया और जब तक चीता जगा तब तक तो जंगल की झाड़ियों में वह बुरी तरह से फॅस चुका था।

जितनी बार भी खेत नष्ट होता, जानवरों के राजा का यह विचार और भी ज़्यादा पक्का होता जाता कि उसका काम पूरा हो और अपराधी का पता लगे पर हर चौकीदार का वही हाल हुआ जो चीते का हुआ था।

क्योंकि हर बार किन किन धीरज रख कर अपने समय का इन्तजार करता और समय आने पर अपना गीत गा कर उसे नष्ट कर देता।

अब तो बिल्ले को पूरा यकीन हो गया था कि यह सब किन किन का ही काम था। उसने सोचा कि यही समय था जब वह किन किन को हरा सकता था।

वह जानवरों के राजा के पास गया और बोला कि अबकी बार खेत बनने के बाद वह खुद उस खेत की रखवाली करेगा। अपनी अक्लमन्दी से उसने जानवरों के राजा को भी यह पता नहीं लगने देगा कि यह सब कौन कर रहा था।

राजा को भी इस बात पर आश्चर्य तो बहुत हुआ कि जो काम बड़े बड़े जानवर नहीं कर सके उसे यह छोटा सा बिल्ला कैसे करेगा पर फिर अपने मतलब के लिये उसने बिल्ले की इस प्रार्थना को भी मान लिया।

अब क्या था बिल्ला चल दिया शाही खेत की तरफ। वह शाही खेत को चारों तरफ से घूम घूम कर इधर उधर देखता रहा। आखिर उसको एक पेड़ की शाख पर किन किन बैठा दिखायी दे गया। वह वहॉ धीरज से बैठा खेत पूरा होने का इन्तजार कर रहा था।

इस बार बिल्ला चौकन्ना था। उसने किन किन को उसके गीत गाने और खेत नष्ट करने के पहले ही पकड़ लिया और उसे खा गया। सो अबकी बार उस खेत पर जंगल नहीं उगा।

अगले दिन सुबह जब सारे जानवर और पक्षी खेत पर पहुॅचे तो वे यह सोचते हुए गये था कि उनको खेत फिर से बनाना पड़ेगा पर वे तो बहुत ही खुश हो गये जब उन्होंने देखा कि उनका खेत तो वैसा का वैसा ही है जैसा कि उन्होंने पहले दिन छोड़ा था। उस पर तो कोई जंगल नहीं था।

उन्होंने बिल्ले को बुलाया और उससे पूछा कि उनका खेत कौन बर्वाद करता था।

बिल्ला बोला — "तुम चिन्ता न करो। जो भी यह काम करता था मैंने उसको खा लिया है। अब तुम्हारा खेत बिल्कुल सुरक्षित है।"

बिल्ले को लगा कि हर एक जानवर यह जानने के लिये बेचैन है कि कौन खेत नष्ट करता था पर उसको किन किन का भेद

छिपाने में बड़ा मजा आ रहा था। उसने सोचा कि किसी दिन मैं भी वह गीत अब जंगल के राजा के लिये गा सकता हूँ।

जानवरों के राजा ने बिल्ले को अपना खेत बचाने के लिये धन्यवाद दिया पर वह उससे उसका नाम छिपाने की जिद से खुश नहीं था जो उसका खेत इतनी बार नष्ट कर चुका था।

उधर चीता और दूसरे जानवर जो खेत की चौकीदारी ठीक से नहीं कर पाये थे वे बिल्ले से खार खाये बैठे थे।

चीता जानवरों के राजा के पास गया और बोला — "महाराज, मुझे बिल्ले की बात पर विश्वास नहीं होता। वह यह भी नहीं बताता कि उसने किसको खाया है और उसने खेत तैयार करने में भी हमारा साथ भी नहीं दिया।

जू जू[3] करने में तो वह हमेशा से ही बहुत होशियार है। मुझे तो ऐसा लगता है कि उसने अपने जू जू से ही हमारे खेत को इतनी बार नष्ट किया और अब आपका विश्वास पाने के लिये वह कह रहा है कि उसने खेत नष्ट करने वाले को खा लिया है। इसका केवल एक ही जवाब है और वह यह कि वह खुद ही बदमाश था और साथ में झूठा भी।"

यह सुन कर सभी जानवरों ने चीते की हॉ में हॉ मिलायी क्योंकि बिल्ले को कोई भी पसन्द नहीं करता था। सभी चिल्लाने लगे "बिल्ले को मारो, बिल्ले को मारो।"

[3] Ju Ju is a magic or Black Magic. It is like Tonaa Totakaa of India. It can be for good or for bad.

बिल्ले ने जब यह देखा कि सारे जानवर उसके खिलाफ हो गये हैं तो उसने इस सबकी सारी जिम्मेदारी मरे हुए किन किन पर डाली और जल्दी जल्दी पास के शहर की तरफ चल दिया।

उसने अपने आपको कोसा कि उसने सारा किन किन क्यों खाया। अगर वह उसका थोड़ा सा हिस्सा भी छोड़ देता तो वह आज उसको सबको दिखा सकता था। काफी समय बाद जब मामला कुछ दब गया तब वह जंगल की तरफ लौटा।

2 जंगल के राजा का दफ़न[4]

किन किन की मौत और बिल्ले के शहर भाग जाने के बाद जंगल में काफी दिनों के बाद शान्ति आयी थी और काफी दिनों तक रही भी।

जंगल के राजा ने जानवरों के राजा को अपना खेत बनाये रखने की इजाज़त दे दी थी और पक्षियों को भी छूट थी कि वे भी कहीं भी जा कर अपना मनमाना शिकार कर सकते थे।

एक दिन जंगल का राजा मर गया तो सभी जानवरों ने निश्चय किया कि उसका अन्तिम संस्कार बड़ी धूमधाम से किया जाये क्योंकि वह बहुत दयालु था। बहुत देर तक सभी जानवर उसके लिये की जाने वाली रीति रस्मों के बारे में आपस में बात करते रहे कि क्या क्या कैसे कैसे होगा।

अन्त में यह निश्चय किया गया कि उस समय के लिये एक बहुत बड़ा ढोल बनना चाहिये और वह शुरू से आखीर तक सभी रस्मों में बजता रहना चाहिये जो काफी लम्बी चलने वाली थीं।

किसी ने सलाह दी कि किसी एक जानवर की खाल का ढोल बना लिया जाये। तो दूसरे ने कहा "नहीं, क्योंकि वह सभी के लिये दयालु था इसलिये सभी को इस ढोल बनाने में अपना अपना कुछ हिस्सा देना चाहिये जैसे हर कोई अपने कानों का एक हिस्सा दे

[4] The Funeral of the Forest King – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

सकता है। इन सब टुकड़ों को शहर के किसी दरजी से सिलवा लिया जायेगा और फिर उसका ढोल बनवा लिया जायेगा।"

यह विचार सबको बहुत अच्छा लगा और जंगल के राजा के दफ़न में बजाने के लिये ढोल को बनाने के लिये सभी ने अपने अपने कानों के छोटे छोटे हिस्से दिये।

ऐलिरी चुहिया[5] ने भी अपने कान का एक छोटा सा हिस्सा दिया पर जानवरों ने यह कह कर उसे लेने से इनकार कर दिया कि उसके कान का वह हिस्सा बहुत ही छोटा था। हालॉकि उसने अपने कान का बहुत बड़ा हिस्सा दिया था।

इससे ऐलिरी चुहिया बहुत नाराज हो गयी और अकेली कहीं दूर चली गयी।

जब सारे जानवरों के कानों के टुकड़े इकट्ठे हो गये तो बिल्ला अचानक पता नहीं कहॉ से वहॉ आ गया।

जबसे वह जंगल छोड़ कर गया था तबसे वह यहॉ पहली बार आया था। वैसे उसने पहले ही यह सबको बता दिया था कि वह जंगल के राजा को आखिरी बार देखने जरूर आयेगा।

इस समय कोई भी उसकी इस प्रार्थना को ठुकराने की हालत में नहीं था। इसलिये उससे यह कह दिया गया कि वह आ तो सकता है मगर शर्त यह है कि वह शहर वापस जा कर किसी अच्छे दरजी को बुला कर लाये क्योंकि वह शहर को अच्छी तरह से जानता था।

[5] Eliri mice

बिल्ला तुरन्त ही इस बात पर राजी हो गया। अगले दिन ही वह शहर लौट गया और वहॉ से वह एक अच्छे दर्जी को बुला लाया। उसने जानवरों के कानों के वे सारे टुकड़े सिल दिये। फिर वह एक ढोल बनाने वाले को बुला कर लाया और जल्दी ही ढोल भी तैयार हो गया।

बच्चों ध्यान रहे कि बिल्ले ने इस ढोल को बनाने में अपने कान का एक छोटा सा टुकड़ा भी नहीं दिया था। यह ढोल केवल दूसरे जानवरों के कानों के टुकड़ों से ही बना था।

जंगल के राजा के दफ़न की रस्में अब शुरू होने ही वाली थीं।

इस बीच ऐलिरी चुहिया गुस्से में भरी भरी देवताओं के पास पहुॅची और जा कर अपना दुखड़ा रोया। जब देवताओं ने उसकी बात सुनी तो वह बहुत खुश हुई कि कम से कम कोई तो है जिसने उसकी बात सुनी।

देवताओं ने कहा — "तुम्हारे कान का हिस्सा न ले कर जानवरों ने बहुत बड़ी गलती की है। जानवरों को इस बात की सजा दिलवाने के लिये तुम जो भी सहायता हमसे मॉगोगी हम तुम्हें देंगे।"

ऐलिरी ने यह सुन कर देवताओं को धन्यवाद दिया और कहा कि वह उनको तंग बिल्कुल भी नहीं करना चाहती थी परन्तु अगर

वे लोग उसको ढोलों के देवता अयान[6] की सहायता दे देते तो बड़ा अच्छा होता।

देवताओं ने तुरन्त ही उसको अयान की सहायता दे दी और ऐलिरी ने अयान को बता दिया कि उसको क्या करना है। जब दफ़न की रस्में शुरू हुई तो सारे जानवर ढोल के चारों तरफ इकट्ठा हो गये और उन्होंने ढोल पीटना शुरू किया।

पर यह क्या? ढोल में से तो कोई आवाज ही नहीं निकल रही थी। सभी जानवरों ने बारी बारी से कोशिश की पर सब बेकार।

अन्त में दुखी हो कर उन्होंने वह ढोल वहीं छोड़ दिया और दूसरी रस्मों को पूरा करने में लग गये जो ढोल की आवाज के बिना बहुत ही बुरी लग रही थीं।

जैसे ही राजा का शरीर उठा कर ले जाया जा रहा था कि सभी चौंक उठे। ढोल में से तो आवाज आ रही थी। और यह सब करामात ऐलिरी ने अयान की सहायता से की थी।

सब जानवर ढोल की आवाज सुन कर ढोल के पास दौड़े आये और उन्होंने उसे फिर से बजाने की कोशिश की पर वह उनसे न बजा।

इस तरह हर बार जब भी वे राजा का शरीर ले जाते थे तो ढोल की आवाज सुनते थे परन्तु जब वे लौट कर आते और उसको बजाने की कोशिश करते तो वह उनसे न बजता।

[6] Ayan - god of Drums

अन्त में उन्होंने एक चौकीदार वहॉ छोड़ दिया यह देखने के लिये कि उनके पीछे वह ढोल कौन बजाता है। पर जब भी वह चौकीदार देखता रहता वह ढोल चुप रहता था और जैसे ही उसकी नजर हटती वह बजने लगता।

बिल्ले ने सोचा यह क्या बात है कि जब भी चौकीदार देखता है तो ढोल नहीं बजता और जब वह उधर नहीं देखता तो बजता है। केवल ऐलिरी चुहिया ही यहॉ नहीं है हो सकता है कि वही कुछ कर रही हो।

जब पहला चौकीदार यह पता नहीं लगा सका कि ढोल कौन बजा रहा था तो दूसरा चौकीदार चुना गया। और जब दूसरा चौकीदार भी यह पता न चला सका कि ढोल कौन बजा रहा है तो तीसरा चौकीदार चुना गया।

पर जब तीसरा चौकीदार भी यह पता न चला सका तो बिल्ले ने कहा कि ढोल की चौकीदारी वह खुद करेगा। जानवर राजी हो गये और बिल्ला ढोल के पास जा कर धीरे से लेट गया और ढोल को देखने लगा।

अचानक जब सब शान्त था तो उसने देखा कि ऐलिरी वहॉ आयी जहॉ ढोल रखा हुआ था पर बिल्ले को वहॉ लेटे देखते ही वह वहॉ से भागने लगी।

बिल्ला भी कम नहीं था। उसने तुरन्त ही उसको पकड़ लिया, मार डाला और खा गया।

जब सारी रस्में पूरी हो गयीं तब जानवरों ने पूछा कि क्या हुआ और कौन था वह जो वह ढोल बजा रहा था। बिल्ले ने फिर वही जवाब दिया जो उसने किन किन चिड़े की बार दिया था।

वह बोला — "मैंने उस ढोल बजाने वाले को खा लिया।"

जानवरों ने फिर पूछा — "पर वह था कौन?"

परन्तु बिल्ला फिर से पहले की तरह चुप बैठ गया। उन्होंने फिर से उस ढोल को बजाने की कोशिश की पर फिर उसमें से आवाज ही नहीं निकली।

बिल्ला बोला — "मैंने तुमको बोला कि अब ढोल बजाने से कोई फायदा नहीं क्योंकि यह ढोल अब कभी नहीं बजेगा क्योंकि इस ढोल के बजाने वाले को तो मैंने खा लिया है।"

चीता चीखा — "दोस्तो, यह बहुत पुरानी बात है जब मैंने तुमसे कहा था कि यह बिल्ला बहुत शरारती है और जू जू[7] करने में बहुत होशियार है। और जू जू करने में ही यह होशियार नहीं है बल्कि साथ में झूठा भी है।

इस बार भी इसने हमको धोखा दिया है। यह खुद ही ढोल बजाता रहा है और अब हमें नहीं बता रहा कि ढोल कौन बजाता था।"

सभी जानवर चिल्लाये — "यह बिल्ला हमारी दुनियॉ में रहने के काबिल नहीं है। इसको आदमियों के शहर में भेज दो।"

[7] Ju Ju is a kind of magic or Black magic. It is like Jaadoo Tonaa of India. It may be for good or for bad.

इस बात पर बिल्ले ने जानवरों की तरफ मुँह कर के उनके ऊपर थूका और शहर की तरफ भाग गया।

उस दिन से बिल्ला शहर में रहता है। वह अभी भी चिड़ियें, चूहे और चुहियें खाता है और दूसरे जानवर उसको देख कर भी या तो देखते नहीं या छोड़ देते हैं।

उधर वह ढोल कभी नहीं बजा और कुछ दिनों बाद तो उसको दीमक[8] ही खा गयी।

[8] Translated for the words “White Ants”.

3 हयीना की मॉ का दफ़न[9]

आज तो सारे जंगली जानवर एक दूसरे से डरते हैं पर हमेशा से ही ऐसा नहीं था। सभी आपस में मिलते जुलते थे, आपस में बात करते थे, एक दूसरे के सुख दुख में शामिल होते थे और इसी तरह एक दूसरे से बर्ताव भी करते थे जैसे आजकल के आदमी लोग करते हैं।

यह बदलाव तो बस अचानक ही आ गया है और वह भी तबसे जबसे कि हयीना की मॉ मरी। तो लो सुनो कहानी जानवरों में आपस में एक दूसरे से नफरत और डर पैदा होने की।

पुराने समय में जानवरों के कई समूह थे। उनके कई सरदार थे जो उन पर राज करते थे। इन समूहों में एक समूह था मॉस खाने वाले जानवरों का जिनका राजा था हयीना[10]।

वह बहुत ताकतवर था और अपनी ताकत का उसको घमंड भी बहुत था। उसको केवल अपने पर ही नहीं बल्कि अपने परिवार, अपने नाम और अपने रीति रिवाज सभी पर बहुत घमंड था।

[9] The Funeral of Hyena's Mother – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[10] Hyena – pronounced as Hayeenaa. Hyena is tiger like animal. See his picture above

सरदार हयीना का पिता तो बेटे हयीना की छोटी उम्र में ही मर गया था इसलिये हयीना की मॉ ने ही उसको पाल पोस कर बड़ा किया था।

उसने उसको शिकार करना सिखाया, खतरों से बचना सिखाया, इसलिये यह सरदार हयीना अपनी मॉ को बहुत प्यार करता था और उसकी बहुत इज़्ज़त करता था।

एक दिन हयीना की मॉ चल बसी। सरदार हयीना आपनी मॉ की मौत से बहुत परेशान हुआ पर उसने तय किया कि वह अपनी मॉ को इतने शानदार ढंग से दफ़नायेगा कि जैसा अब तक जानवरों के देश में किसी भी जानवर ने नहीं दफ़नाया होगा।

उसने सब जानवरों को बुलाया और कहा कि वे उसकी मॉ के लिये एक शानदार दफ़न की तैयारी करें।

सो पहले हयीना की मॉ का एक शानदार दफ़न होना था और फिर बाद में बढ़िया दावत होनी थी और उसके बाद नाच गाने का प्रोग्राम था। इस नाच को भी कई दिन तक चलना था।

यह सब प्रोग्राम बनाने के लिये जानवरों की एक कमेटी काम कर रही थी। परन्तु हयीना को लगा कि इस खास काम को करने के लिये कोई खास जानवर ही होना चाहिये।

इसलिये उसने अपने दो दोस्तों चीता और शेर को बुलाया कि वे उसकी मॉ के दफ़न की सारी रस्मों को पूरा करें और आखीर में दस जानवरों की बलि दे कर इन रस्मों को खत्म करें।

ऐसा करने से उनको अच्छा खाना भी मिलेगा, देवता भी खुश होंगे और मॉ की आत्मा को भी शान्ति मिलेगी।

साथ में यह भी तय किया गया कि नाच गाने के बीच में तीनों, यानी हयीना, चीता और शेर उन दस जानवरों पर कूदेंगे और उनको मार डालेंगे।

अगले दिन दफ़न की रस्मों की तैयारियॉ होने लगीं। जंगल के सारे जानवर आये। सभी जानवर नाचते गाते हयीना की मॉ को दफनाने के लिये ले चले।

किसी भी जानवर को दस बलियों का पता नहीं था क्योंकि यह बात गुप्त रखी गयी थी इसलिये अचानक जब हयीना, चीता और शेर अपने अपने शिकारों पर कूदे तो सभी जानवरों में भगदड़ मच गयी।

हयीना ने एक भेड़ मारी, शेर ने एक चिड़िया मारी और चीते ने एक बकरा मारा।

लेकिन इतनी ही देर में सारे जानवर भाग लिये और जब ये तीन जानवर बलि के लिये मारे जा रहे थे तो दूसरे जानवरों के साथ साथ बचे हुए सात बलि वाले जानवर भी भाग गये।

जब ये तीनों जानवर मर गये तो हयीना, चीता और शेर हयीना की मॉ के शरीर के साथ अकेले रह गये। सरदार हयीना यह सब

देख कर बोला कि चलो अब हम लोग खुद ही बाकी रस्में पूरी कर लेते हैं।

परन्तु शेर और चीते के मुँह में तो खून का स्वाद लग चुका था। वे बोले — "हयीना, अब यह काम तुम खुद ही कर लो हम तो अब और जानवरों की खोज में जाते हैं।"

और वे और शिकारों की खोज में चल दिये।

उस दिन से आज तक इतने सारे जानवर फिर कभी इस तरह किसी भी सामाजिक मौके पर नहीं मिले। और सभी जानवर हयीना परिवारों को नफरत से देखते हैं और जहाँ तक होता है उनसे अलग ही रहते हैं।

शेर और चीते के परिवारों को भी कोई पसन्द नहीं करता। सभी उनसे डरते हैं क्योंकि वे अभी भी हयीना की माँ को दफनाने के लिये बाकी बचे हुए शिकारों की तलाश में घूम रहे हैं ताकि वे उनकी बलि चढ़ा सकें।

4 ओलोबुन की भेंट[11]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक मेंढक के पास एक जू जू[12] था। एक दिन वह बाजार गया और एक पेड़ के पीछे छिप कर गाने लगा

ओ सुन्दर फल तुम्हारी जगह तो खेत में है
परन्तु इस बाजार में तुमको लोग खाते हैं
मैं अपने जू जू के साथ यहॉ आया हूँ
इससे सारे फल बेचने वाले यहॉ से भाग जायेंगे
और बस मैं फिर सारे फल खा जाऊँगा

गीत खत्म होते ही सारे फल बेचने वाले बाजार से भाग गये और मेंढक ने खूब सारे फल खूब जी भर कर खाये और फिर वहॉ से चला गया। ऐसा उसने कई बार किया। बाजार के लोग इस घटना से बहुत परेशान थे।

उन्होंने मेंढक के खिलाफ कई चालें खेलीं पर कोई भी कामयाब नहीं हुई। कई लड़ने वाले भेजे पर वे भी उसका कुछ न बिगाड़ सके। कई शिकारी भी भेजे पर वे भी उसको न पकड़ सके। जू जू भी आजमाया पर मेंढक का जू जू उनके जू जू से ज़्यादा ताकतवर था। अब वे क्या करें?

---

[11] Olobun's Sacrifice – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[12] Ju Ju is like magic or Black magic. It is like Jaadoo Tonaa of India wich is done to do some work in Nigeria. It may be for good or for bad.

सभी बहुत दुखी थे। तभी शहर में एक बूढ़ा आदमी आया जिसने दावा किया कि मैं पकड़ूँगा उस गाने वाले मेंढक को।

उसने एक मूर्ति बनायी जिसके दोनों हाथों में उसने एक घड़ा पकड़ा दिया और उस घड़े में बहुत सारी मूँगफलियाँ भर दीं। वह मूर्ति उसने बीच बाजार में रख दी। फिर उसने वह पूरी मूर्ति, घड़ा और मूँगफली सभी कुछ गोंद से लेप दिया।

अगली बार जब मेंढक ने गीत गाया तो पहले की तरह से सभी फल बेचने वाले वहाँ से भाग गये। जब मेंढक अकेला रह गया तो वह पेड़ के पीछे से बाहर निकल आया। आज उसने बाजार में एक नयी चीज़ देखी वह थी एक मूर्ति।

वह मूर्ति उसको बहुत अच्छी लगी। वह उसके पास गया और मजाक में हँसी में बोला — "नमस्कार।"

अब वह तो मूर्ति थी वह क्या जवाब देती सो जब वह कुछ नहीं बोली तो वह फिर बोला — "क्या तुम बोल नहीं सकते?"

तभी उसको उस मूर्ति के हाथ में एक घड़ा दिखायी दे गया। उसने सोचा इसके हाथों में जो यह घड़ा है उसमें क्या है। उसने अपनी आगे वाली टाँगें उठायीं और घड़े पर रख दीं और घड़े में झाँकने लगा।

इतने में उसे लगा कि उसके आगे वाले पैर तो उस घड़े पर चिपक गये हैं। उसने उनको वहॉ से छुड़ाने की बहुत कोशिश की पर सब बेकार। वह किसी तरह भी उनको वहॉ से छुड़ा नहीं सका।

अपने आगे वाले पैरों को छुड़ाने के लिये उसने अपने पीछे वाले पैर इस्तेमाल किये तो उसके पीछे वाले पैर भी चिपक गये।

बाजार वाले लोग वहॉ से ज़्यादा दूर नहीं गये थे सो जैसे ही उन्होंने देखा कि मेंढक के चारों पैर उस मूर्ति से चिपक गये तो वे भी वहॉ आ गये और उन्होंने उस मेंढक को वहीं मार डाला।

अब उस बूढ़े आदमी ने सलाह दी कि इस मरे हुए मेंढक के मॉस को ओलोबुन[13] को भेंट कर दिया जाये।

सो उसका मॉस और हड्डियॉ सब एक बर्तन में रख दी गयीं। बूढ़े आदमी ने फिर एक रस बनाया जो उसके शरीर पर डाला गया। इसके बाद एक गिरगिट[14] को उस बर्तन को अपने सिर पर ओलोबुन के पास ले जाने के लिये कहा।

इस तरह बाजार वालों को तो आराम हो गया पर बेचारे गिरगिट का बुरा समय तो अब शुरू हुआ।

जब वह गिरगिट मेंढक के मॉस और हड्डियों का वह घड़ा अपने सिर पर रख कर ओलोबुन के पास ले जा रहा था तो उसमें से

[13] Olobun – a Nigerian god

[14] Translated for the word “Chameleon”. See its picture above.

थोड़ा सा रस जो उस बूढ़े आदमी ने मेंढक के शरीर पर डाला था नीचे टपक गया और उसके मुँह तक आ गया। उसने उसे चाटा तो वह उसे शहद जैसा मीठा लगा।

उसने तुरन्त ही वह घड़ा नीचे रख दिया और उसमें से मेंढक की हड्डियों को उस रस में डुबो डुबो कर खाने लगा।

लेकिन वह रस मीठा होने के साथ साथ चिकना भी था सो जैसे ही उसने हड्डी उस रस में भिगो कर खायी वह हड्डी उसके हाथ से फिसल कर उसके गले में अटक गयी। गिरगिट ने उसको निकालने की बहुत कोशिश की परन्तु वह हड्डी उसके गले से निकली ही नहीं।

आज भी वह हड्डी उसके गले में वहीं अटकी हुई है। न तो वह उसे निगल ही सका और न ही वह उसे उगल ही सका।

इसी लिये बच्चों तुम गिरगिटों को अपना सिर इधर उधर हिलाते देखते होगे क्योंकि वे उस हड्डी को निगलने या उगलने की कोशिश करते रहते हैं पर वह है कि न तो वह अन्दर जाती है और न ही वह बाहर आती है।

ओलोबुन ने भी उसको अपनी भेंट खाने के लिये कभी माफ नहीं किया।

5 शिकारी और उसकी करामाती बॉसुरी[15]

एक बार ओजो[16] नाम का एक बहुत ही अच्छा शिकारी था। वह भी दूसरे योरुबा शिकारियों की तरह कई कई महीनों तक शिकार के लिये बाहर रहता था।

ओजो जंगल में जा कर ताड़ के पत्तों और डंडियों आदि से अपने रहने के लिये एक झोंपड़ी बना लेता और फिर वहॉ से अपना तीर कमान ले कर वह रोज शिकार के लिये निकल जाता।

हर रात सोने से पहले वह अपने लाये शिकार का मॉस भूनता और जब उसके पास काफी भुना मॉस इकट्ठा हो जाता तब वह उसे अपनी पत्नी के पास ले जाता। उसकी पत्नी उस भुने मॉस को बेच कर घर की जरूरत की चीज़ें खरीद लाती।

ओजो के पास तीन कुत्ते थे। उसने उनके बड़े अजीब से नाम रखे हुए थे। एक का नाम था "टुकड़े कर दो", दूसरे का नाम था "खा डालो" और तीसरे का नाम था "साफ कर दो"।

इन तीन कुत्तों के अलावा उसके पास एक पुरानी बॉसुरी भी थी जिसके बारे में ओजो का कहना था कि वह बड़ी करामाती थी।

उसका कहना था कि जंगल में वह कितनी भी दूर चला जाये पर जब भी वह वह बॉसुरी बजाता था उस बॉसुरी की आवाज

[15] The Hunter and His Magic Flute – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa
[16] Ojo – name of the Nigerian hunter

उसके कुत्तों तक पहुँच जाती थी और उसको सुन कर उसके तीनों कुत्ते उसके पास भागे चले आते थे। इसलिये वह यह बॉसुरी हमेशा अपने पास ही रखता था।

एक बार शिकार पर जाते समय उसने अपने तीनों कुत्तों को घर में बॉध कर छोड़ दिया और अपनी पत्नी को कहा कि वह उनकी ठीक से देखभाल करे और किसी भी समय अगर वे ज़रा से भी बेचैन दिखायी दें तो वह उनको छोड़ दे उन्हें बॅधा न रहने दे।

ऐसा कह कर वह वहॉ से चल दिया।

तीन दिन के सफर के बाद वह एक ऐसी जगह पर आया जहॉ उसको अपना कैम्प डालना था। इस तरफ पहले वह कभी नहीं आया था। उसकी अनुभवी ऑखें बता रहीं थीं कि उसको शिकार के लिये यहॉ पर काफी जानवर मिलेंगे।

ओजो अपना कैम्प लगाने में लग तो गया पर वहॉ उसको बहुत डर लग रहा था। उसको कुछ ऐसा लग रहा था कि जैसे कोई उसको छिपे छिपे देख रहा है। और वह भी कोई आदमी या जानवर नहीं बल्कि कोई भूत देख रहा है।

जब वह छोटा था तो अक्सर जंगल में रहने वाले भूतों के बारे में सुनता रहता था। वह उनसे डरता भी था हालॉकि उसका उनसे कभी सामना नहीं हुआ था।

दूसरे शिकारियों ने तो उनको देखा भी था यहाँ तक कि उनकी तो जंगल की माँ इयाबोम्बा[17] से मुलाकात भी हुई थी।

उनका कहना था कि इयाबोम्बा दस आदमियों के बराबर बड़ी है और उसके शरीर पर बहुत सारे भूखे मुँह लगे हुए हैं।

जब ओजो का कैम्प लग गया तो वह उसमें अन्दर आराम करने के लिये लेट गया। वह आराम करने के लिये लेट तो गया पर कोई उसको देख रहा था यह ख्याल अभी भी उसके दिमाग से निकला नहीं था।

लेटने के बाद उसको लगा कि कोई चीज़ उसके पास आ रही थी। वह उसको देखने के लिये उठ कर खड़ा हो गया कि इतने में उसने देखा कि जंगल की माँ इयाबोम्बा उसके सामने खड़ी है।

वह उसको देख कर इतना डर गया कि उससे भागा भी नहीं जा सका। वह तो बस जहाँ था वहीं का वहीं खड़ा रह गया।

अचानक इयाबोम्बा बोली — "शिकारी, डर नहीं। मुझे मालूम है कि तू यहाँ क्यों आया है। अगर तू मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा तो मैं भी तुझे नहीं खाऊँगी।" और जैसे वह अचानक आयी थी वैसे ही अचानक वह चली भी गयी।

ओजो का शिकार करने का समय आ गया था पर वह सोच रहा था कि क्या इयाबोम्बा के वायदे पर भरोसा किया जा सकता है?

[17] Iyabomba – the mother of Forest

वह सारा दिन शिकार करता रहा और जब वह शाम को शिकार कर के अपने कैम्प लौटा तो जंगल की मॉ का डर उसके दिमाग से निकल चुका था।

रात को उसने अपना लाया मॉस काटा और उसे भूनने के लिये आग जलायी। मॉस भूना, खाना पकाया, खाना खाया और सो गया।

अगले दिन वह फिर शिकार पर निकल गया और जब वह शिकार ले कर फिर कैम्प लौटा तो उसे लगा कि कोई उसके पीछे उसके कैम्प में आया था।

उसे वहॉ इयाबोम्बा के बड़े बड़े पैरों के निशान पहचानने में देर नहीं लगी। जब वह अपनी झोंपड़ी के अन्दर घुसा तो उसने देखा कि उसका तो कल का भुना हुआ मॉस भी गायब था।

ओजो ने सोचा कोई बात नहीं शायद अब जंगल की मॉ सन्तुष्ट हो गयी होगी इसलिये उसने आग जला कर उस दिन का लाया मॉस भूनना शुरू कर दिया।

पर इयाबोम्बा अभी भी सन्तुष्ट नहीं हुई थी क्योंकि ओजो जब भी शिकार कर के कैम्प वापस लौटता तो अपना पहले दिन का लाया हुआ मॉस गायब पाता।

उसको यह भी डर था कि वह किससे पूछे कि इयाबोम्बा ऐसा क्यों करती थी वह रोज उसका मॉस क्यों ले जाती थी। इयाबोम्बा

से तो वह यह बात पूछ ही नहीं सकता था क्योंकि तब तो शायद वह उसी को खा जाती।

एक हफ्ता गुजर चुका था। ओजो रोज शिकार करता, रोज मॉस भूनता पर उसके पास बचाया हुआ भुना हुआ मॉस ज़रा सा भी नहीं था।

ओजो का गुस्सा इसलिये और भी ज़्यादा बढ़ रहा था क्योंकि इतने ज़्यादा शिकार उसको पहले कभी किसी और जगह नहीं मिले थे। पर इस तरीके से तो अगर वह वहॉ पर एक साल भी और रहता तो भी शायद वह कुछ नहीं बचा पाता।

एक दिन ओजो के सब्र का बॉध टूट गया और उसका गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया। इस गुस्से ने उसका डर दूर कर दिया और उस दिन वह इयाबोम्बा का अपनी झोंपड़ी में ही बैठ कर इन्तजार करने लगा पर उस दिन वह वहॉ आयी ही नहीं।

अन्त में उसने अपना सामान बॉधा और वापस जाने लगा। जाते जाते वह चिल्लाया — "तुमने मेरे मारे शिकार का मॉस क्यों खाया? क्या तुम्हारे जंगल में जो भी शिकारी आता है तुम हर उस शिकारी का मॉस चुरा लेती हो?"

उसका इतना बोलना था कि इयाबोम्बा अपने सारे मुँह खोले हुए जंगल में भयानक आवाज करती हुई ओजो के सामने आ खड़ी हुई जैसे कि वह उसको खा ही जायेगी।

ओजो वहॉ से भाग खड़ा हुआ। इयाबोम्बा उसको पीछे से बुला रही थी परन्तु ओजो तो बस भागा ही जा रहा था।

पर भागने का कोई फायदा नहीं था क्योंकि जंगल की मॉ बहुत बड़ी थी और वह पल भर में ही ओजो के पास आ गयी। उसको पास आया देख कर ओजो एक पेड़ पर चढ़ गया।

आश्चर्य की बात कि वह पेड़ पर नहीं चढ़ सकती थी इसलिये वह उस पेड़ के नीचे ही खड़ी हो गयी जिस पेड़ पर ओजो बैठा था और उसने नीचे से पेड़ का तना काटना शुरू कर दिया।

यह देख कर ओजो बहुत डर गया कि जब पेड़ कट जायेगा तब उसका क्या होगा। ओजो को तब अपनी बॉसुरी याद आयी और उसने अपनी बॉसुरी बजानी शुरू कर दी।

बॉसुरी की आवाज उसके कुत्तों के कानों में पड़ी। सुनते ही उसके घर में उसके तीनों कुत्ते भौंकने लगे। ओजो की पत्नी उनकी रस्सी खोलने गयी तो उसके रस्सी खोलने से पहले ही उन कुत्तों ने रस्सी तोड़ ली और वहॉ से भाग लिये।

इधर इयाबोम्बा जल्दी जल्दी पेड़ का तना काट रही थी। ओजो ने कुछ पल तो इन्तजार किया पर उसने देखा कि पेड़ तो बस गिरने ही वाला था।

उसने अपनी जेब से एक चमड़े का बटुआ निकाला और उसमें रखा जादुई पाउडर पेड़ पर डाल दिया इससे पेड़ फिर से साबुत हो गया।

इयाबोम्बा को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह पेड़ साबुत कैसे हो गया पर फिर भी उसने फिर से उस तने को काटना शुरू कर दिया।

पर जब भी पेड़ गिरने को होता तो ओजो उस पर थोड़ा सा जादुई पाउडर डाल देता और वह पेड़ फिर से साबुत हो जाता।

इस तरह पेड़ को काटते और साबुत करते करते काफी देर हो गयी। ओजो का पाउडर भी खत्म हो गया था और अब पेड़ फिर से गिरने वाला था वह बहुत परेशान था कि अब क्या होगा था कि तभी उसने देखा कि उसके तीनों कुत्ते भागे चले आ रहे हैं।

देखते देखते वे तीनों इयाबोम्बा पर टूट पड़े और थोड़ी ही देर में उन्होंने इयाबोम्बा को काम तमाम कर दिया और उसका काफी सारा मॉस खा लिया।

ओजो पेड़ से नीचे उतर आया और अपने सामान और कुत्तों के साथ अपने घर वापस आने लगा कि तभी उसने देखा कि उसके सामने एक बहुत सुन्दर लड़की खड़ी है।

वह बोली — "मुझे इयाबोम्बा ने कैदी बना कर रखा हुआ था अब जब तुमने उसे मार दिया है तो मैं आजाद हो गयी हूँ। क्या तुम मुझे अपने घर ले चलोगे ओजो और मुझे अपनी पत्नी बनाओगे?"

ओजो को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह लड़की उसका नाम कैसे जानती थी। फिर भी वह उसको अपनी पत्नी बना कर अपने घर ले आया।

उसकी पहली पत्नी उन सबको देख कर बहुत खुश हुई और यह जान कर भी कि जंगल की मॉ इयाबोम्बा मर चुकी है और उसके पति ने इस लड़की को उसके चंगुल से बचा लिया गया है।

उसने उन सबका स्वागत किया और उस लड़की को घर में ठहरने की जगह दी।

पर उस रात को उस घर में एक अजीब घटना हुई। ओजो की दूसरी पत्नी उठी और एक बहुत बड़ी औरत के रूप में बदलने लगी जिसके बहुत सारे मुँह थे।

असल में यह कोई कैदी लड़की नहीं थी बल्कि यह इयाबोम्बा की बहिन थी और उसकी हत्या का बदला लेने के लिये ओजो की पत्नी बन कर आयी थी। पर तीनों कुत्तों ने उसको भी खा लिया।

ओजो अब जब उस जंगल में जाता था तो उसको वहॉ कोई तंग नहीं करता था। वह वहॉ आराम से शिकार कर के घर लाता था।

उसने फिर कभी दूसरी शादी भी नहीं की।

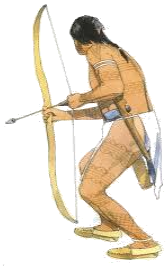

6 टिनटिन्यिन और भूतों की दुनियॉ का राजा[18]

बहुत पुरानी बात है जब योरुबा देश में टिनटिन्यिन नाम का एक लड़का रहता था। उसका पिता तो उसकी छोटी उम्र में ही नहीं रहा पर कुछ साल बाद उसकी मॉ भी चल बसी।

अब वह इस दुनियॉ में अकेला रह गया था और कोई उसकी देखभाल करने वाला भी नहीं था।

वह जंगली जानवरों और पक्षियों के साथ जंगल में रहने लगा। उन्होंने ही उसको खाना खिलाया, उसको कपड़े पहनाये, उसकी देखभाल की और उसको बड़ा किया।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वहॉ रहते रहते उसने जानवरों और पक्षियों की भाषा भी सीख ली थी और योरुबा भाषा तो उसको आती ही थी।

उस जंगल में कुछ दूरी पर एक बड़ा शहर था जिसका राजा बहुत ताकतवर था। उस शहर में हर साल एक बहुत बड़ा त्यौहार मनाया जाता था।

टिनटिन्यिन हर साल उस त्यौहार में जाता था क्योंकि उसको नाचना, गाना, ढोल बजाना, अच्छे कपड़े पहनना सभी कुछ बहुत

[18] Tintinyin and the Unknown King of the Spirit World – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

अच्छा लगता था। उस शहर का राजा देखने में भी सुन्दर था सो टिनटिन्यिन को वह राजा भी बहुत अच्छा लगता था।

पुराने समय में भूत[19] भी ऐसे त्यौहारों पर आया करते थे। पर बस उनको कोई पहचान नहीं पाता था क्योंकि वे सामान्य लोगों के रूप में आते थे और त्यौहार खत्म होने पर चुपचाप वापस चले जाया करते थे।

राजा को भी इस बात का पता था पर क्योंकि कोई उनको पहचान नहीं पाता था इसलिये वह यह बात यकीन के साथ नहीं कह सकता था। पर वह भी यह जानना चाहता था कि वाकई यह बात सच थी कि नहीं।

एक बार राजा ने इस बात का फैसला करने का निश्चय किया कि वाकई यह सच था या नहीं सो उसने इस त्यौहार से पहले ही अपने शहर में यह घोषणा करा दी कि जो भी आदमी इस त्यौहार में भूतों के राजा को पहचानेगा और उसे राजा को बतायेगा उसको बहुत सारी भेंटें इनाम में मिलेंगीं और शहर में ऊँचा ओहदा मिलेगा।

टिनटिन्यिन ने भी यह घोषणा सुनी। वह राजा के महल में गया और राजा से कहा कि वह भूतों के राजा को पहचान कर राजा को बतायेगा।

[19] Translated for the word “Ghost”

अब टिनटिन्यिन को तो यह पता भी नहीं था कि वह भूतों का राजा दिखायी कैसा देता होगा पर उसे विश्वास था कि उसके जंगल के साथी इस बारे में उसकी सहायता जरूर करेंगे।

जब राजा ने इस अजीब से जंगली लड़के के मुँह से ये शब्द सुने कि वह भूतों के राजा को पहचान लेगा तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि ऐसा लड़का भूतों के राजा को कैसे पहचान सकता है।

सो उसको धमकाने के लिये और उसे जनता को बेवकूफ बनाने से रोकने के लिये उसने टिनटिन्यिन से कहा कि अगर वह उसको न पहचान सका तो सजा के तौर पर उसकी भूतों के राजा के लिये बलि चढ़ा दी जायेगी।

इतना कहने पर भी राजा को यह सुन कर आश्चर्य हुआ कि वह लड़का अभी भी अपनी बात पर अड़ा था। उसने कहा कि अगर वह ऐसा न कर सका तो वह मरने के लिये तैयार था।

ऐसा कह कर वह लड़का वहाँ से चला गया और राजा आश्चर्य में पड़ा वहीं बैठा रह गया। वह यह कहे बिना न रह सका "यह लड़का भी अजीब है।"

त्यौहार के दिन टिनटिन्यिन ने देखा कि हर आदमी उसी को घूर रहा है। सारे शहर में टिनटिन्यिन को भूतों के राजा को पहचानने वाली बात फैल चुकी थी और सभी इस ताक में थे कि देखें क्या होता है कैसे वह लड़का भूतों के राजा को पहचानता है।

कुछ लोग टिनटिन्यिन के लिये दुखी भी थे कि यह बेचारा मुफ्त में ही मारा जायेगा क्योंकि इतनी भीड़ में भूतों के राजा को पहचानना आसान नहीं था।

शहर का राजा पेड़ों की छॉह में एक बड़े ऊॅचे सिंहासन पर बैठा था। उसने टिनटिन्यिन को बुलाया और कहा — "लड़के, अब बताओ वह भूतों का राजा इस भीड़ में कौन सा है।"

टिनटिन्यिन भी राजा से बात करने के बाद चिन्तित था क्योंकि हालॉकि उसने जंगल के सारे जानवरों और पक्षियों से कह रखा था कि उसको भूतों के राजा को पहचानना है पर अभी तक भूतों के राजा का कोई नामो निशान नजर नहीं आ रहा था।

वह परेशान सा यह सोच ही रहा था कि भूतों के राजा को पहचानने के लिये वह क्या करे कि उसको एक नन्हा सा ईगा चिड़ा[20] दिखायी दिया। नन्हा ईगा गा रहा था।

उसकी भाषा और तो कोई समझ नहीं पा रहा था पर टिनटिन्यिन की समझ में सब आ रहा था। वह गा रहा था —

टिनटिन्यिन, हालॉकि तुमने बहुत बड़ा बोल बोला है
कि तुम भूतों के राजा को जानते हो जो मरे हुओं और शैतानों का राजा भी है
पर तुम उसे नहीं जानते और तुमने अपनी ज़िन्दगी दॉव पर लगा दी है
तुम मेरे दॉये पंख की सीध में देखो एक आदमी अकेला खड़ा है
उसके शरीर पर कोई ऐसा निशान नहीं है जिससे वह राजा लगे
वह एक डंडे पर झुका खड़ा है पर वही राजा है भूतों का और मेरे बेटे मैं तुम्हारा पिता हूॅ

[20] Ega Bird – a very small black and yellow bird found in Western Nigeria from Senegal to Cameroon countries

इस तरह टिनटिन्यिन को पता चल गया कि उसका पिता ईगा चिड़े की आवाज में बोल रहा है और उसकी सहायता कर रहा है।

उधर शहर का राजा उसके जवाब के इन्तजार में था। वह बोला — "बताओ लड़के, वह भूतों का राजा कौन सा है। मैं तुम्हारे जवाब का इन्तजार कर रहा हूँ।"

टिनटिन्यिन सीधा उस आदमी के पास गया और उसको पकड़ कर राजा के पास ले आया। जब लोगों ने देखा तो लोग हँस पड़े कि या तो वह लड़का उनका बेवकूफ बना रहा है या फिर उस बूढ़े आदमी का।

उस बूढे आदमी ने अपना पैर खोल कर अपने टखने पर बँधा एक काला मोती दिखाया। यही भूतों के राजा का निशान था। बस फिर उसने न तो राजा से ही कुछ कहा और न ही वह किसी और से बोला और गायब हो गया।

शहर के राजा ने अपना वायदा निभाया। उसने उसको बहुत सारी भेंटें दीं और शहर में ऊँचा ओहदा दिया। इसके बाद तो टिनटिन्यिन बहुत बड़ा आदमी हो गया।

हालाँकि भूतों के राजा को फिर किसी ने उस त्यौहार में नहीं देखा पर तब से उस शहर के किसी और राजा ने भी उसको देखने की इच्छा प्रगट नहीं की। पर लोगों का कहना है कि वह अभी भी एक गरीब आदमी के वेश में वहाँ आता है।

7 एक लड़का और जादू का याम[21]

एक बार एक योरुबा लड़का जब पैदा हुआ तो उसकी मुट्ठी में याम[22] का एक छोटा सा टुकड़ा था। वह याम इतना छोटा सा था कि उसकी छोटी सी मुट्ठी में ठीक से आ रहा था।

धीरे धीरे वह लड़का बड़ा होने लगा पर उसकी मुट्ठी का याम उसी छोटे से रूप में ही उसकी मुट्ठी में ही रहा। वह उस तरीके से नहीं बढ़ा जैसे कि बच्चा बढ़ रहा था।

वह याम जादू का था और वह लड़का हमेशा उसे अपने पास ही रखता था। वह याम हमेशा ताजा ही रहा और कभी सड़ा भी नहीं जैसे और सब्जियॉ सड़ जाती हैं।

एक दिन उसके माता पिता ने उसको आग जलाने के लिये जंगल से लकड़ियॉ काटने के लिये भेजा। लड़के ने जंगल में जा कर लकड़ियॉ काटीं और घर लाने के लिये उनको बॉधने लगा।

जब वह लकड़ियॉ बॉध रहा था तो आसानी के लिये उसने अपने हाथ का याम पास में पड़े एक लकड़ी के टुकड़े पर रख दिया। उधर उस जंगल के जानवरों को पता था कि वह लड़का अपने हाथ में एक जादू का याम लिये पैदा हुआ था।

---

[21] The Boy and the Magical Yam – **a** folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[22] Yam is a tuber vegetable – a staple food of Nigeria. It sometimes weighs 5-10 pounds each. See its picture above.

जब वह लड़का जंगल में लकड़ी काट रहा था तो वे जानवर जंगल में इधर उधर छिपे हुए थे। उन्होंने उस लड़के को अपना याम उस लकड़ी के टुकड़े पर रखते देख लिया।

लड़का अपना याम उस लकड़ी के टुकड़े पर रख कर भूल गया और अपनी लकड़ियॉ ले कर घर चला गया। लड़के के जाने के बाद सारे जानवर अपनी अपनी छिपी जगहों से निकल आये और उस याम को उत्सुकता से देखने लगे।

चीता बोला — "इस याम मे कोई बहुत ही ताकतवर जू जू[23] होना चाहिये इसलिये इसको अपने पास रखना अच्छा है।"

यह सुन कर सभी जानवर उसको उठाने के लिये बढ़े तो सबमें आपस में झगड़ा होने लगा कि कौन उस याम को अपने पास रखे।

उधर घर पहुॅचने से पहले ही उस लड़के को ध्यान आया कि वह अपना याम तो जंगल में ही छोड़ आया है। उसने तुरन्त ही अपना लकड़ी का गट्ठर सड़क के किनारे रख दिया और तेज़ी से जंगल की तरफ भाग लिया।

वहॉ पहुॅच कर वह क्या देखता है कि बहुत सारे जंगली जानवर उस लकड़ी के टुकड़े को घेरे खड़े हैं जिस पर उसने अपना याम रखा था। उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ और वह सोचने लगा कि वह अब क्या करे।

[23] Ju Ju means magic or Black Magic. In India it is called Jaadoo Tonaa. It may be for good or bad.

उसे एक तरकीब सूझी। उसने जानवरों का ध्यान याम से हटाने के लिये एक गीत गाना शुरू किया —

मेरे छोटे याम ओ मेरे छोटे याम, मैं तुमको जंगल में छोड़ गया था
मेरी माँ ने कहा था कि मैं तुमको कहीं न छोड़ूँ
मेरे पिता ने कहा था कि मैं तुमको अपने हाथ में ही रखूँ
फिर भी मैं भूल गया और याम के बिना ही चला गया
मेरे छोटे याम ओ मेरे छोटे याम

लड़के की मीठी आवाज में यह गीत सुन कर सारे जानवर तो उसके गीत में इतने खो गये कि उन्होंने उसको यह गीत बार बार गाने के लिये कहा।

जब उसने दोबारा यह गाना गाया तो कुछ जानवरों ने ढोल बजाना शुरू कर दिया और बाकी जानवर नाचने लगे। वे अपने इस नाच गाने में याम को बिल्कुल ही भूल गये।

लड़का धीरे धीरे उस लकड़ी के टुकड़े की तरफ बढ़ा और उसने चुपके से वह याम उठा कर अपने कपड़ों में छिपा लिया। जानवर अपने नाच में अभी भी मस्त थे सो वह चुपचाप वहाँ से अपना याम ले कर खिसक लिया।

कुछ देर बाद चीते को उस याम का ध्यान आया तो वह नाचते नाचते रुक गया और बोला — "अरे वह लड़का कहाँ है? और मेरा वह जादू का याम कौन ले गया।"

यह सुन कर सभी जानवर नाचते नाचते रुक गये और सबने उस लकड़ी के टुकड़े की तरफ देखा तो वहॉ तो याम सचमुच में ही नहीं था।

यह देख कर चीते ने गरज कर फिर पूछा — "मैं पूछता हूॅ मेरा वह जादू का याम किसने लिया? और वह गाने वाला लड़का कहॉ चला गया?"

इसका जवाब हाथी ने दिया — "हम सभी बेवकूफ हैं। लगता है हमारी नजर बचा कर वही लड़का वह याम यहॉ से उठा कर ले गया।"

चीता बोला — "उसको घर पहुॅचने से पहले ही रोको। हमें उससे वह याम लेना है। हाथी, तुम उसके पीछे दौड़ो और उसे पकड़ कर लाओ।"

हाथी बोला — "मैं ऐसे काम नहीं करता। यह तुमने सुझाया है तुम ही उसको वापस लाओ।"

चीता जल्दी जल्दी बोला — "ठीक है ठीक है, मैं खुद ही जाता हूॅ और उसको ले कर आता हूॅ। पर अगर वह याम मैं ले कर आया तो फिर वह जादू का याम मेरा हो जायेगा।" और किसी के कुछ बोलने से पहले ही वह लड़के के घर के रास्ते की तरफ दौड़ गया।

लड़का भी तेज़ी से अपने घर की तरफ भागा जा रहा था। अब उसे रास्ते में पड़ी अपनी लकड़ियों की भी कोई फिक्र नहीं थी।

घर जा कर अपनी मॉ को उसने जानवरों के नाच और उनकी उसके जादू के याम को लेने के बारे में सारी कहानी बतायी।

इस लडके की मॉ दूसरी योरुबा स्त्रियों की तरह कपड़े रंग कर अपना और अपने बेटे का पालन पोषण करती थी।

जब उसने अपने बेटे से उसकी यह कहानी सुनी तो वह डर गयी कि शायद वे जानवर उसके घर आ कर भी उसके बेटे को कुछ नुकसान पहुॅचायें। सो उसने अपने नौकरों को बुलाया और उनके हाथ में नीले रंग से रंगे डंडे दे कर अपने घर के चारों तरफ खड़ा कर दिया।

लड़के की मॉ का सोचना ठीक ही था। थोड़ी ही देर में चीता वहॉ आ पहुॅचा और उस लड़के के घर की चहारदीवारी में घुसा। पर घर के कम्पाउंड में घुसते ही उसको लगा कि वह तो जेल में आ गया क्योंकि उसके चारों तरफ तो भयानक और डरावने लोग खड़े थे।

एक आदमी ने पीछे से दरवाजा बन्द कर दिया और फिर वहॉ खड़े सभी आदमियों ने उसे अपने डंडों से मार मार कर नीला कर दिया। किसी तरह वह जान बचा कर जंगल की तरफ भाग पाया।

उस दिन के बाद से हर चीते के शरीर पर धारियॉ होती हैं। समय के साथ साथ वे नीले रंग की बजाय अब काली पड़ गयी हैं। और अब वह कभी भी जादू के याम के लिये बस्ती की तरफ नहीं भागता। जंगल में ही रहता है।

8 एक बेसहारा लड़का और उसकी जादुई डंडियॉ[24]

अजाओ[25] एक बेसहारा लड़का था। वह जब पॉच साल का ही था कि उसके मॉ और बाप दोनों ही चल बसे। क्योंकि वह अभी छोटा ही था इसलिये उसके चाचा ने उसके पालने पोसने का जिम्मा ले लिया।

पर तीन साल के बाद वह भी चल बसे तो उन चाचा के एक दोस्त ने उसको अपने यहॉ रख लिया। चाचा के उस दोस्त का नाम था ओगुनमोडे[26]।

अजाओ बड़ा ही शान्त लड़का था सो ओगुनमोडे उसको बहुत प्यार करता था और उसको अपने बेटे की तरह रखता था। ओगुनमोडे के अपना कोई बच्चा नहीं था वह इसलिये भी वह उसको बहुत चाहता था।

पर ओगुनमोडे की पत्नी बहुत ही ईर्ष्यालु स्वभाव की थी। जब उसने देखा कि ओगुनमोडे अजाओ को बहुत प्यार करता है तो उससे वह सहा नहीं गया। उसने अजाओ को तंग करना शुरू कर दिया।

---

[24] An Orphan Boy and His Magical Twigs – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[25] Ajao – name of the orphan boy

[26] Ogunmode – name of the friend of the uncle of Ajao. Ajao lived with him after the death of his uncle.

उसको वह बहुत मुश्किल मुश्किल काम करने को देती और जब उसका पति काम से वापस घर आता तो हमेशा ही उसकी शिकायत करती।

अजाओ का जीना हराम कर रखा था उसने। जैसे जैसे अजाओ बड़ा होता गया उसके लिये वहॉ रहना बहुत ही मुश्किल होता गया।

जब अजाओ करीब बीस साल का हो गया तो ओगुनमोडे ने पत्नी के कहने से उसको घर से निकाल दिया और उसको कह दिया कि अब वह वहॉ कभी वापस न आये।

अजाओ का कोई ऐसा दोस्त नहीं था जो उसे अपने पास रख लेता और उसके अपने पास कोई पैसा नहीं था। इसके अलावा कोई उसको सामान खरीदने के लिये भी पैसा देने को तैयार नहीं था ताकि वह कोई धन्धा कर सके सो सिवाय भीख मॉगने के उसके पास और कोई चारा नहीं था।

एक दिन उस गॉव के एक बड़े रईस के घर में चोरी हो गयी तो लोगों ने अजाओ का नाम लगा दिया कि यह चोरी अजाओ ने की है। डर के मारे अजाओ गॉव छोड़ कर भाग गया। अजाओ के पास केवल एक लुंगी[27] के

[27] Lungi is a cloth to cover the lower part of the body from the waist to knee or to feet. See its picture above.

अलावा और कुछ भी नहीं था। वह इतना परेशान हो गया था कि उसने अपनी जान देने का फैसला कर लिया।

जब वह गॉव से भाग रहा था तो रास्ते में उसे एक रस्सी दिखायी दी। उसने वह रस्सी इस इरादे से उठा ली कि वह उसको गले में बॉध कर फॉसी लगा लेगा।

गॉव से बाहर आ कर अब वह किसी ऐसे पेड़ की तलाश करने लगा जिसकी शाख से रस्सी बॉध कर वह फॉसी लगा सकता। कुछ देर बाद इधर उधर घूमने के बाद उसे एक लम्बी सी शाख दिखायी दे गयी जिसे वह अपनी फॉसी के लिये इस्तेमाल कर सकता था।

वह उस पेड़ पर चढ़ गया और उस शाख पर रस्सी बॉधने ही वाला था कि उसको पत्तियों और शाखों के बीच से कुछ दूरी पर बसा एक गॉव दिखायी दिया।

अपने मरने की बात तो वह भूल गया और सोचने लगा कि उसको तो पता ही नहीं था कि उधर कोई गॉव भी था। किसी ने उससे कभी इस गॉव का जिक भी नहीं किया।

जैसे जैसे वह इस गॉव की तरफ देख रहा था उसको वह गॉव कुछ अजीब सा लगा। उसके घर और सड़कें सभी कुछ बिना आदमियों का लग रहा था।

उसे वहॉ सब कुछ शान्त लग रहा था, सब कुछ खाली था, धुॅआ भी नहीं था, पर साथ ही वह साफ सुथरा भी लग रहा था। ऐसा लगता था जैसे वहॉ कोई रहता ही न हो।

अजाओ ने सोचा कि कम से कम उसको यह गॉव जा कर देखना तो चाहिये क्योंकि इससे उसको कोई नुकसान तो होगा नहीं बल्कि हो सकता है कि उसे वहॉ पर उसे कोई काम ही मिल जाये।

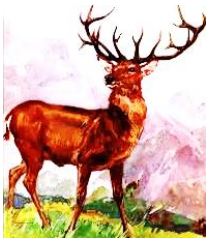

सो अजाओ ने रस्सी तो वहीं छोड़ दी और जंगल के रास्ते उस गॉव की तरफ चल दिया। कुछ ही दूर जाने पर उसको एक बारहसिंगा[28] मिला।

उसने सोचा कि वह बारहसिंगा उसे देख कर वहॉ से भाग जायेगा पर यह देख कर उसे आश्चर्य हुआ कि ऐसा नहीं हुआ। वह वहीं खड़ा रहा और उसे देखता रहा।

अजाओ के पास कोई हथियार नहीं था और उसे उसको मारने का कोई इरादा नहीं था सो वह उससे बच कर गॉव की तरफ जाने वाले रास्ते पर चल दिया।

अचानक उसने अपने पीछे किसी को पुकारते हुए सुना — "अजाओ, तुम कहॉ जा रहे हो?"

एक बारहसिंगे के मुँह से अपना नाम सुन कर अजाओ बड़े आश्चर्य में पड़ा और इधर उधर देखने लगा कि उसको किसने पुकारा पर उसे बारहसिंगे के अलावा वहॉ और कोई दिखायी नहीं पड़ा।

[28] Translated for the word "Stag". It is a deer like animal with two horns but with many branches in them. See its picture above.

इतने में वह बारहसिंगा फिर बोला — "अजाओ, यह मैं ही तुमसे पूछ रहा हूँ तुम कहाँ जा रहे हो?"

अजाओ बारहसिंगे के मुँह से यह सुन कर कुछ डर सा गया पर फिर बोला — "पास में ही मैंने एक अजीब सा गाँव देखा था मैं वहीं जा रहा हूँ।"

बारहसिंगा बोला — "जिस पेड़ से तुमने वह गाँव देखा था वह एक जादुई पेड़ था और वह गाँव जानवरों का एक गाँव है। यह जानवरों का देश है। तुम उस गाँव में मत जाना। तुम तुरन्त ही अपने आदमियों के देश में चले जाओ क्योंकि तुम जानवरों के देश के नहीं हो।"

यह सुन कर तो अजाओ और भी डर गया और घबरा गया। उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे। वह कुछ दूर वापस गया और एक बड़े से पत्थर पर बैठ कर सोचने लगा कि वह अब क्या करे —

"क्या मैं उस पेड़ के पास फिर जाऊँ और फाँसी लगा कर अपनी जान दे दूँ? या उस जानवरों के गाँव में जाऊँ और फिर वहाँ जा कर देखूँ कि वहाँ क्या होता है? और या फिर यहीं रह कर भूखा रह कर अपनी जान दे दूँ?"

वह बहुत थक गया था सो वह वहीं लेट गया और सो गया। जब वह उठा तो रात होने वाली थी। उसने सोचा कि वह रात में

उस गॉव में जायेगा और देखेगा कि वहॉ क्या होता है। अगर वहॉ कोई खतरा होगा तो वह रात में वहॉ से बच कर भाग भी सकता है सो वह फिर सो गया।

अबकी बार जब वह उठा तो पूरी तरह रात हो गयी थी केवल तारों की रोशनी ही चमक रही थी। अजाओ उठा और जानवरों के गॉव की तरफ चल दिया। केवल मेंढक और झींगुरों की आवाजें ही उसको सुनायी दे रही थी।

इस गॉव में जानवर तीन समूहों में रहते थे — एक समूह था मॉस खाने वाले जानवरों का, दूसरा समूह था घास खाने वाले जानवरों का और तीसरा समूह था रेंगने वाले जानवरों का।

हालॉकि वे सभी आपस में दोस्ती से रहते था पर फिर भी वे अपने अपने समूहों में ही ज़्यादा रहते थे।

अजाओ धीरे धीरे गॉव की तरफ बढ़ा और मिट्टी के एक बड़े से मकान में रोशनी देख कर उसकी खिड़की में से अन्दर झॉका। पास में काफी पेड़ पौधे थे इसलिये वह आसानी से वहॉ छिपा खड़ा रह सकता था।

अजाओ इस समय घास खाने वाले जानवरों के समूह वाले हिस्से में था और यह मकान उनके मिलने की जगह थी। सभी वहॉ मिल कर कोई मीटिंग कर रहे थे। जब अजाओ उनकी बात सुन रहा था तो वे दवाओं के बारे में अपनी अपनी तारीफें कर रहे थे।

एक बड़ा सा हाथी कह रहा था — "दोस्तो, अगर आप लोग कुछ पल के लिये बाहर आयें तो मैं आपको एक जादू दिखाना चाहता हूँ।"

कहते के साथ ही उसने डंडियों का एक गट्ठर उठा लिया और उस मकान के बाहर आ गया। उस मकान के सामने एक बहुत बड़ी खुली जगह थी।

अजाओ जहाँ खड़ा था वहाँ से वह उन सबको अच्छी तरह देख सकता था पर उसको कोई नहीं देख रहा था क्योंकि सारे जानवर अपनी मीटिंग की कार्यवाही में मस्त थे।

हाथी की बात सुन कर सारे जानवर बाहर निकल कर आ गये और हाथी का दिखाया जाने वाल जादू देखने के लिये एक गोला बना कर खड़े हो गये।

हाथी बाहर निकल कर बोला — "अब आप देखें।"

उसने एक डंडी उठायी, उसको दो हिस्सों में तोड़ा और जानवरों के घेरे में फेंक दिया। तुरन्त ही वहाँ पर एक बहुत बड़ी इमारत खड़ी हो गयी।

सभी जानवरों ने आश्चर्य से अपने अपने सिर हिलाये और वे उस इमारत को देखने के लिये उसके अन्दर घुस गये।

हाथी अभी उस इमारत के बाहर ही खड़ा था। उसने दूसरी डंडी उठायी और उसे तोड़ कर जमीन पर फेंकी तो वह इमारत

गायब हो गयी और सारे जानवर एक कमरे के अन्दर खड़े रह गये।

इतने में अजाओ को एक जानी पहचानी आवाज सुनायी दी। यह आवाज उस बारहसिंगे की थी जो उसे जंगल में मिला था।

वह बोला — "यह तो सचमुच ही बहुत अच्छा है परन्तु मेरे भाई लोग अगर मुझे भी कुछ दिखाने का मौका दें तो मैं भी कुछ दिखाना चाहता हूँ।"

जानवरों ने फिर से एक गोला बना लिया और बारहसिंगे ने एक डंडी उठायी और उसको तोड़ कर जो उसने जमीन पर फेंका तो वहाँ कौड़ियों[29] का एक थैला प्रगट हो गया। उसने दूसरी डंडी तोड़ कर फेंकी तो वह गायब हो गया।

इस तरह वे घास खाने वाले जानवर एक एक कर के आगे आते गये और एक एक डंडी से कुछ कुछ चीज़ें प्रगट करते गये और दूसरी से उन्हें गायब करते गये।

किसी ने कपड़े प्रगट किये तो किसी ने खाने का सामान, तो किसी ने बहुत सुन्दर मोती और जवाहरात। ऐसा लगता था जैसे डंडियों को तोड़ने से ही सब कुछ प्रगट किया जा सकता था और फिर उनको गायब किया जा सकता था।

[29] Translated for the word "Cowries". Cowry is a kind of sea shell. See its picture above. Long beore they were used as money.

अजाओ को खाना पकाने वाली डंडियॉ सबसे ज़्यादा अच्छी लग रही थीं क्योंकि सुबह से उसने कुछ खाया नहीं था।

उसने वह जगह अच्छी तरह से देख ली जहॉ उन जानवरों ने अपनी करामातें दिखाने के बाद उन डंडियों को फेंका था। यह मीटिंग रात भर चली और सुबह होने पर सब जानवर अपने अपने घर चले गये।

जब सब कुछ शान्त हो गया तो भूखे अजाओ ने उन डंडियों में से खाना पैदा करने वाली डडियॉ उठायीं और उस गॉव से दूर जंगल की तरफ भाग चला। दूर पहुँच कर वह आराम से एक जगह पर बैठ गया।

उन डंडियों में से उसने एक छोटा सा टुकड़ा तोड़ा और जमीन पर फेंक दिया। वहॉ बहुत सारी खाने की चीज़ें प्रगट हो गयीं। वह उनको देख कर बहुत खुश हुआ। उसने पेट भर कर खाना खाया।

उस डंडी के सहारे अब वह कहीं भी अकेला रह सकता था। क्योंकि अब उसे खाने पीने की कोई परेशानी नहीं थी।

पर रोज रोज डंडियॉ तोड़ने से उसकी डंडियॉ छोटी होती जा रहीं थीं। वह हर रात उस गॉव में चुपके से पहुँच जाता इस उम्मीद में कि वह उन जानवरों को और डंडियॉ तोड़ता देखे और वह और डंडियॉ वहॉ से ले आये पर उस रात के बाद वह मकान खाली ही रहा।

अजाओ ने सोचा कि अब तो उसके पास केवल दो दिन के लिये ही खाने की डंडियॉ बची हैं इसलिये उसे जल्दी ही जानवरों का दूसरा समूह देखना चाहिये। सो अगली रात वह उस गॉव के दूसरी तरफ चला गया जहॉ मॉस खाने वाले जानवर रहते थे।

जब वह जंगल के दूसरे किनारे पर पहुँचा तो उसने देखा कि एक जगह आग जल रही है और उसके चारों तरफ बहुत सारे जानवर बैठे हैं।

वहॉ एक चीता भाषण दे रहा था — "मेरे मॉसाहारी दोस्तो और भाइयो, कुछ दिनों पहले हमारे घास खाने वाले भाइयों ने अपनी मीटिंग में कुछ जादू के करतब दिखाये थे।

अपने गॉव में अब यह बात फैल गयी है कि केवल वे ही जादू के करतब दिखा सकते हैं और उनके पास ही सबसे ज़्यादा ताकतवर जू जू[30] हैं। ऐसा लगता है कि जैसे हमारे पास कोई जादू और जू जू है ही नहीं।"

यह सुन कर बहुत सारे जानवर चिल्ला पड़े — "यह सच नहीं है, यह झूठ है। हमको भी अपने जू जू और दवाओं का जादू दिखाने का मौका मिलना चाहिये।"

एक शेर बोला — "मैंने सुना था कि वहॉ डंडियॉ तोड़ कर जादू दिखाया गया था।"

[30] Ju Ju means magic or Black Magic. It is like Jaadoo Tonaa of India. It may be for good or bad.

चीता बोला — "आप ठीक कहते हैं शेर जी कि वहॉ कुछ खास तरह की डंडियॉ तोड़ी गयीं थीं। हमारे कुत्ते भाई कुछ जादू की डंडियॉ ले कर आये हैं। और अब हम भी इस गॉव को दिखा देंगे कि हमारे पास भी ताकतवर दवाऐं और जूजू हैं।"

सो इस मीटिंग में भी पिछली मीटिंग की तरह ही हुआ। एक एक जानवर सामने आया। उसने एक डंडी तोड़ कर एक चीज़ पैदा की और दूसरी डंडी तोड़ कर उसे गायब कर दिया।

अजाओ ने फिर सब ध्यान से देखा और खाना पैदा करने वाली डंडियों को ठीक से देख लिया कि वे उन्होंने कहॉ फेंकी थीं।

यह मीटिंग भी सारी रात चली और सुबह होने पर सब अपने अपने घर चले गये। सारे जानवर बहुत खुश थे कि उन्होंने भी घास खाने वालों जानवरों की तरह जादू के करतब दिखाये।

जब सब चले गये तो अजाओ ने एक बार फिर खाना पैदा करने वाली डंडियॉ इकट्ठी की और उनको अपने रहने की जगह पर ले आया। अजाओ को शहद की केक बहुत अच्छी लगती थी और उन डंडियों से मॉगने पर वह उसको मिल जाती थी।

अब उसको यह भी पता चल गया था कि इस गॉव में जानवर तीन समूहों में रहते थे। उसने जानवरों के दो समूहों की मीटिंग तो देख ली थी सो उसने सोचा कि इसका मतलब यह है कि रेंगने वाले जानवरों की मीटिंग भी अब किसी भी समय होने वाली होगी इस लिये मुझे उसका ख्याल रखना चाहिये।

इस मीटिंग को देखने के लिये अब वह हर रात गॉव की तरफ जाने लगा। साथ में वह शहद वाले केक ले जाता ताकि भूख लगने पर उनको खा सके।

उधर मॉसाहारी जानवरों की मीटिंग के अगले दिन एक कुत्ता उधर से गुजरा तो उसको लगा कि वे डंडियॉ उस तरह से नहीं पड़ीं थीं जिस तरह से उनको जादू दिखाने के बाद फेंका गया था और साथ में कुछ अजीब सी बू भी आ रही थी।

वह इधर उधर घूम घूम कर देखने लगा तो उसको अजाओ के पैरों के निशान दिखायी दिये। वह मन ही मन बोला — "ओह तो उस दिन आदमी का बच्चा यहॉ आया था।"

कुत्ता तुरन्त दौड़ा दौड़ा गया और अपने सारे मॉसाहारी भाइयों को इस बारे में बताया।

तुरन्त ही एक मीटिंग बुलायी गयी। मॉसाहारी जानवरों ने घास खाने वाले जानवरों को भी इस बारे में बताया तो बारहसिंगा बोला कि वह एक आदमी अजाओ से जंगल में मिल चुका था हो सकता है कि ये पैरों के निशान उसी के हों।

दोनों समूहों ने अपने अपने जानवरों को गॉव के आस पास अजाओ का पता लगाने के लिये तैनात कर दिया। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि एक दिन अजाओ गॉव के आस पास घूमता पकड़ा गया।

एक बड़े बन्दर ने उसको पकड़ा और उसे गॉव में ले आया। अबकी बार मॉसाहारी और घास खाने वाले जानवरों की मीटिंग एक साथ बुलायी गयी ताकि वे आदमी के बच्चे को देख सकें और उस बिन बुलाये मेहमान के साथ क्या बरताव किया जाये यह निश्चय कर सकें।

कुछ चिल्लाये — "हमको इस आदमी के बच्चे को दिखाओ।"

कुछ मॉसाहारी जानवर चिल्लाये — "इसको मार दो, इसको मार दो।"

कुछ घास खाने वाले जानवर बोले — "हाथी इसको कुचल कर मार देगा।"

ऐसा लग रहा था जैसे सभी जानवर अजाओ की मौत चाहते हों। अजाओ बेचारा बन्दर के पास जमीन पर पड़ा था।

बारहसिंगा बोला — "मुझे ठीक से देखने दो। शायद यह अजाओ ही है।"

जानवर चिल्लाये — "इसको हमें ऊपर उठा कर दिखाओ। यही हमारे गॉव में चुपके चुपके चोर की तरह आता है।"

हाथी ने अजाओ को अपनी सूँड़ से ऊपर उठा लिया और बोला — "देखो यही है वह आदमी का बच्चा।"

अजाओ अभी तक अपने हाथ में शहद वाली केक पकड़े था। जैसे ही हाथी ने बोलने के लिये अपना मुँह खोला उसने तुरन्त ही केक का एक टुकड़ा हाथी के मुँह में डाल दिया।

हाथी ने शहद वाला केक पहले कभी नहीं चखा था। जैसे जैसे उसने वह केक खाया तो उसको लगा कि उसको तो वह केक बहुत अच्छा लग रहा है। अच्छा लगने की वजह से हाथी को वह केक खाने में कुछ देर लगी तो सुनने वालों का धीरज छूट गया।

इतने में जानवर चिल्लाये — "इसको नीचे फेंक कर मार दो।"

हाथी बोला — "नहीं, मैं इसको नहीं मारूँगा। मेरी सलाह है कि हम इसे अपना पालतू बना लें। इसने मुझे अभी अभी बहुत ही स्वादिष्ट खाना खिलाया है। मैं उसका नाम तो नहीं जानता पर वह खाने में बहुत स्वाद है।"

कुछ जानवर चिल्लाये — "अरे तुम यह क्या बेवकूफी की बात कर रहे हो। क्या कभी किसी ने आदमी को भी जानवरों का पालतू बनते सुना है?"

बिल्ला बोला — "हॉ, यह काम तो आदमी का है हमारा नहीं।"

इतने में शेर बोला — "वह स्वादिष्ट खाना कहॉ है ज़रा मैं भी तो खा कर देखूँ।"

हाथी ने धीरे से अजाओ को उतार कर मॉसाहारी जानवरों के सरदार शेर के पास रख दिया और बोला — "देखो तो कितना सुन्दर लड़का है।"

अजाओ ने शहद वाला केक शेर को भी खिलाया। केक शेर को भी बहुत स्वादिष्ट लगा।

केक खा कर शेर बोला — "हाथी ठीक कहता है। लड़का बहुत सुन्दर है इसको मारना हमारे लिये बड़े शरम की बात होगी। इसको तो हमारे साथ ही रहना होगा और यह बताना होगा कि यह खाना कैसे बनता है।"

जब हाथी और शेर ने यह फैसला सुना दिया कि लड़के को उनके साथ ही रहना है तो दूसरे जानवरों को भी मानना पड़ा। जिनको इस फैसले पर थोड़ा बहुत भी शक था तो अजाओ ने उन सबको वह शहद वाला केक खिला कर राजी कर लिया।

इस तरह अजाओ उन जानवरों के बीच रहने लगा। उसने उनको बताया कि आदमियों ने उसके साथ कितनी बेरहमी का बर्ताव किया था और किस तरह उसको अपने गॉव से निकाल दिया था।

और किस तरह वह अपने आपको मारना चाहता था। फिर कैसे उसको जानवरों के इस गॉव का पता चला और कैसे वह रात को इस गॉव को देखने के इरादे से यहॉ आ पहुँचा था।

अजाओ ने उन जानवरों को बहुत सारी बातें सिखायीं जैसे आदमी के बिछाये जाल से कैसे बचना चाहिये। शिकारियों से कैसे बचना चाहिये और किन आदमियों पर भरोसा किया जा सकता है किन पर नहीं। उसने उनको भालों और तीरों की ताकत के बारे में भी बताया।

धीरे धीरे जानवर अजाओ को प्यार करने लगे और उस पर उनका विश्वास बढ़ गया। अब वह उनके समूह का ही एक सदस्य बन गया था।

जानवरों ने उसको डंडियों के जादू सिखाये और बदले में सबने शहद वाले केक खाये। अजाओ को रेंगने वाले जानवरों के समूह से भी मिला दिया गया और वे भी उसको खूब प्यार करने लगे थे।

पर कई साल उन जानवरों के साथ बिताने के बाद उसको लगा कि उसको अब अपने आदमियों के पास जाना चाहिये।

सो एक दिन उसने यह बात जानवरों की एक मीटिंग में कही तो कोई जानवर उसकी इस बात पर राजी नहीं हुआ। कोई उसको वहॉ से जाने नहीं देना चाहता था।

परन्तु शेर बोला — "अजाओ ठीक कहता है। इसको अपने लोगों में ही जा कर रहना चाहिये। वहॉ जा कर इसको शादी कर लेनी चाहिये और फिर इसके बच्चे भी होने चाहिये।

अब तक यह हमारा बहुत अच्छा दोस्त था और हम सबको इस पर पूरा विश्वास है कि यह आदमियों की दुनियॉ में पहुँच कर भी हमको धोखा नहीं देगा।"

फिर वह अजाओ से बोला — "तुम्हारे जाने का हम सभी को बहुत दुख होगा। तुम अकेले ही आदमी के बच्चे हो जो हमारे साथ इतने दिनों तक हमारे बन कर रहे। हम तुम्हें बहुत प्यार करते हैं और तुम पर भरोसा करते हैं।

अगर तुम्हारे अपने लोग कभी भी तुम्हारे साथ बुरा बरताव करें तो तुम बिना किसी हिचकिचाहट के यहॉ लौट आना। हम तुम्हारी हर तरीके से सहायता करने की कोशिश करेंगे।

लो ये कुछ जादू की डंडियॉ अपने साथ ले जाओ। ये तुमको तुम्हारी नयी ज़िन्दगी शुरू करने में सहायक होंगी।"

सभी जानवरों ने अजाओ को रोते हुए विदा किया और गॉव के बाहर तक छोड़ने आये। जाते समय वे बोले — "अजाओ, कभी कभी हमसे मिलने भी आ जाया करना।"

अजाओ अपने उसी गॉव में वापस पहुॅच गया जहॉ से वह एक बार चोरी के झूठे इलजाम में निकाला गया था। वहॉ पहुॅच कर उसने एक छोटी सी जमीन देख कर हाथी वाली डंडी तोड़ कर फेंकी तो वहॉ एक सुन्दर मकान खड़ा हो गया।

उसके बाद वह कुछ और डंडियॉ तोड़ता रहा जिनसे उसको कपड़े, घर का सामान और खाने पीने का सामान मिला।

अजाओ अब एक अमीर आदमी था और अब वह अपनी नयी ज़िन्दगी आसानी से शुरू कर सकता था।

अजाओ की बदकिस्मती से उस गॉव के लोग अभी भी अजाओ के चोर होने को भूले नहीं थे और उन्होंने उसको अभी तक माफ भी नहीं किया था।

सो गॉव में अब यह बात फैलने लगी कि अजाओ अब अपनी लूट के सामान के साथ फिर से इस गॉव मे रहने के लिये आ गया

है। क्योंकि इतना सारा पैसा वह ईमानदारी से इतने थोड़े समय में नहीं कमा सकता था तो वह पैसा जरूर ही लूट का होगा।

कुछ ही दिनों बाद गॉव के लोग इकट्ठा हो कर उसके पास आये और यह सोच कर कि वह पास के गॉवों से चोरी कर के वह यह सब माल जमा करता रहा है पकड़ कर उसको गॉव के सरदार के पास ले गये।

सरदार ने अजाओ से पूछा कि उसके पास इतनी सारी दौलत कहॉ से आयी। पर अजाओ जानवरों और उनकी डंडियों की कहानी उनको बताना नहीं चाहता क्योंकि उसको पता नहीं था वे उसके साथ कैसा बर्ताव करेंगें।

उसको जानवरों के साथ किया हुआ अपना वायदा भी याद आया। सफाई न देने की वजह से सरदार ने उसको तो जेल में बन्द कर दिया और उसकी सारी चीज़ें अपने कब्जे में कर लीं।

उन्होंने अजाओ को बहुत समय तक जेल में रखा।

और जब वह जेल से छूटा तो वह फिर से जानवरों के गॉव की तरफ चल दिया। उसने सोचा कि पहली बार से यहॉ से जाने में और इस बार के यहॉ से जाने में एक फर्क है। पहले वह यहॉ से अपने आपको मारने के इरादे से गया था इस बार वह अपने दोस्तों के पास जा रहा है।

अजाओ जब जानवरों के गॉव पहुॅचा तो जानवर उसको अपने बीच पा कर बहुत खुश हुए। अजाओ ने उन्हें अब तक की अपनी सारी कहानी बतायी।

तीनों समूहों ने फिर अपनी अलग अलग मीटिंग कीं और फिर उनके नेताओं शेर, हाथी और मगर ने उसको बुलाया।

उन्होंने उससे कहा — "अजाओ, हमने तुम्हारी बात को गौर से सुना। तुमने जो हमारे लिये वफादारी दिखायी है उससे खुश हो कर एक बार फिर हम तुमको अपनी दुनियॉ में आने की इजाज़त देते हैं और अपने राजा को हमारे और हमारी डंडियों के बारे में सब कुछ बताने की इजाज़त देते हैं।"

सो अजाओ ने डंडियों का एक बंडल उठाया और अपने गॉव की तरफ चल दिया।

इस बार वह सीधे राजा के पास गया और बोला — "हे राजा, आप अपनी प्रजा में अजाओ को अच्छी तरह जानते है। उसको लोगों ने दो बार चोरी का इलजाम लगा कर गॉव के बाहर निकलने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने उसको जेल में भी रखा।

शायद आपको याद होगा कि कुछ दिन पहले अजाओ यहॉ था और उसने अपनी दौलत पाने के भेद को खोलने से इनकार कर दिया था। आज वही अजाओ जिन्होंने मुझे वह ताकत दी थी उनकी इजाज़त से उस भेद को खोलने के लिये आपके सामने हाजिर है।

आप कोई एक दिन तय कर लें तो उस दिन मैं आप सबको बहुत सारे आश्चर्यजनक जादू दिखाऊँगा और शायद इस तरह अपने माथे पर लगा यह काला दाग धो सकूँ।"

सो राजा ने एक दिन तय कर लिया। उस दिन गॉव के बहुत सारे लोग आये और उस दिन अजाओ ने अलग अलग डंडियों से अलग अलग जादू दिखाये।

वह सब देख कर लोगों को आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी हुई। उसकी बहुत सारी दौलत देखते हुए उनमें से बहुत सारे लोग अपनी अपनी बेटियों की शादी उसके साथ करने तैयार हो गये।

अजाओ ने राजा की बेटी का रिश्ता ले लिया और उसके साथ उसकी शादी का एक दिन भी तय हो गया। जैसे जैसे शादी का दिन पास आता गया गॉव में खुशियॉ और तैयारियॉ बढ़ती गयीं।

शादी के एक दिन पहले सारे जानवर अपने जानवर वाले गॉव से आये और अजाओ की शादी की खूब खुशियॉ मनायी गयीं।

जिस समय जानवर आये उस समय अँधेरी रात थी। एक जानवर ने चारों तरफ खूब सारे नीबू फेंके तो वे सारे नीबू लैम्प बन गये और गॉव भर में उजाला फैल गया।

लोगों को जानवरों के बढ़िया कपड़े देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि पहली बात उन्होंने तो जानवरों को इससे पहले कभी कपड़े पहने देखा नहीं था। दूसरे उनके कपड़े तो आदमियों के कपड़ों से कहीं ज़्यादा अच्छे थे।

हाथी का सिर बढ़िया जरी की टोपी से ढका था तो शेर के सिर पर मोतियों का ताज था। छिपकली के गले में लाल मोतियों की माला थी तो बारहसिंगा एक बहुत ही सुन्दर गाउन पहने था। मगर बहुत बढ़िया रेशम के कपड़े पहने था तो सूअर मखमल की चादर ओढ़े था।

शादी की दावत के सारे खाने और चीज़ों की तरह जादू की डंडियों से ही पैदा किये गये थे। रात बीत गयी और लोगों ने कहा कि इतनी अच्छी शादी की रात, नाच गाना दावत आदि, उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था।

सुबह राजा ने अपनी बेटी अजाओ को दे दी साथ में एक बढ़िया घोड़ा गाड़ी भी दी। जानवरों ने अपने जादू से अजाओ को चीलों से जुती उड़ने वाली एक गाड़ी दी जिसमें बैठ कर अजाओ और उसकी पत्नी सारा दिन गॉव के ऊपर उड़ते रहे।

रात को वे अपने अपने घर चले गये और फिर अगले दिन उनकी शादी हो गयी। जानवर भी अपने गॉव लौट गये।

कुछ समय बाद अजाओ की पत्नी ने एक बेटे को जन्म दिया। उसका नाम उन लोगों ने अकानो[31] रखा। जब अकानो थोड़ा बड़ा हो गया तो अजाओ अकाने को जानवरों के गॉव ले गया। वहॉ उनको जानवरों के तीनों समूहों ने अलग अलग दावत दी।

[31] Akano - name of the son of Ajao

उन्होंने कहा — "अजाओ, जब तुम हमारे गॉव में पहली बार आये थे तब तुम अपने बेटे अकानो से कुछ ज़्यादा बड़े नहीं थे। उस समय हमने तुमको बहुत कुछ सिखाया। क्या अब तुम अपने बेटे को यहॉ नहीं छोड़ोगे ताकि वह जानवरों को जान सके और उन्हें ठीक से समझ सके।"

अजाओ बोला — "मेरी तो बहुत इच्छा है।"

और वह अकानो को जानवरों के गॉव में छोड़ गया। वहॉ उसने उनकी भाषा, उनके रीति रिवाज आदि बहुत कुछ सीखा।

अकानो अपने पिता को बहुत प्यार करता था। उसका पिता सबसे पहले जानवरों के गॉव में कैसे आया इसकी कहानी सुनते सुनते वह कभी थकता ही नहीं था।

उधर जानवर भी अकानो को प्यार तो बहुत करते थे परन्तु उन्होंने कभी उसको डंडियों का भेद नहीं बताया।

जब भी कभी उसने उनके बारे में पूछा भी तो बूढ़े शेर ने जवाब दिया — "आदमियों में यह भेद केवल तुम्हारा पिता ही जानता है। जब वह मर जायेगा तो उसके बाद इस भेद को और कोई नहीं जान पायेगा।

क्योंकि हम तुम्हारे पिता को बहुत प्यार करते हैं इसी लिये यह भेद हमने उसको बताया। मगर तुमको अगर हमारी किसी और सहायता की कभी भी जरूरत हो तो हम तैयार हैं।"

अकानो जानवरों के गॉव में कई साल रहा। फिर एक दिन वह हाथी से मिलने पहुॅचा। हाथी उसको देखते ही बोला — "अकानो, मुझे मालूम है कि तुम मुझसे मिलने क्यों आये हो। कई साल पहले तुम्हारा पिता भी इसी तरह मुझसे मिलने आया था। क्या तुम अपने देश वापस जाना चाहते हो?"

अकानो बोला — "जी हॉ।"

उस रात अकानो को विदा करने के लिये एक बहुत बढ़िया दावत दी गयी और अगले दिन सुबह अकानो अपने गॉव की तरफ चल पड़ा। बहुत सारे जानवर उसको छोड़ने गये।

जब वे गॉव की सीमा पर पहुॅचे तो हाथी बोला — "हमने तुम्हें डंडियों का जादू कभी नहीं बताया पर देखो यह एक जादू की डंडी है जो हम तुम्हें जाते समय एक भेंट के रूप में दे रहे हैं। तुम इस को तोड़ कर जो कुछ भी मॉगोगे वह इससे तुमको मिल जायेगा।"

अकानो ने सब जानवरों को धन्यवाद दिया और सारे जानवर उसको विदा कर गॉव वापस लौट गये।

अकानो को भी इन जानवरों से प्यार हो गया था और वह इन को छोड़ कर दुखी था पर अपने गॉव जाते समय वह खुश भी था क्योंकि अपने लागों को उसने बहुत दिनों से देखा नहीं था।

पर जब वह गॉव के पास पहुॅचा तो उसे लगा कि उसके गॉव की तो सारी सड़कें खाली पड़ी हैं। वहॉ कोई आदमी ही नजर नहीं आ रहा था।

अकानो घबरा गया और सोचने लगा कि उसको आने में लगता है देर हो गयी। शायद यहाँ उसको और पहले आना चाहिये था। जब अकानो गाँव के अन्दर पहुँचा तो उसे इस खालीपन की वजह समझ में आ गयी।

सारा गाँव उजड़ चुका था, घर जल गये थे या फिर टूट गये थे। अकानो अपने नाना के महल के पास पहुँचा, अपने पिता के घर के पास पहुँचा और सब कुछ उजड़ा हुआ सा देख कर फिर से दुखी हो गया।

उसी समय उसको हाथी की दी हुई डंडी याद आयी। उसने डंडी तोड़ी और इच्छा की कि वह सारा गाँव फिर से बस जाये और उसके लोग वहाँ फिर से वापस आ जायें।

जैसे ही उसने डंडी तोड़ कर फेंकी और यह इच्छा की तो तुरन्त ही सारा गाँव फिर से बन गया और उसको कुछ लोग सड़क पर चलते फिरते नजर आने लगे।

उसने उनसे अपने परिवार वालों के बारे में पूछा तो वे बोले — "यह बड़े दुख की बात है अकानो कि उधर तो तुम जादू की डंडियाँ ले कर जानवरों के गाँव से आये और इधर यह आदमियों का गाँव एक दूसरे समूह ने नष्ट कर दिया।

तुम्हारे नाना और तुम्हारे पिता लड़ाई में मारे गये और तुम्हारी माँ को वे लोग बन्दी बना कर ले गये। इस लड़ाई में बहुत से लोग

मारे गये और बहुत से लोगों ने जंगल में भाग कर अपनी जान बचायी।"

अकानो ने उनको ढोल बजा कर बुलाने के लिये कहा। सब लोग वापस आ गये और उन्होंने अकानो को अपना नया राजा चुन लिया।

यह सब करने के बाद अकानो फिर से जानवरों के गॉव गया और जा कर उनको अपने गॉव का सारा हाल सुनाया और उस दूसरे समूह से लड़ाई लड़ने के लिये सहायता मॉगी।

हाथी बोला — "अकानो, जो कुछ भी हुआ उसका हमको बहुत दुख है। हमें अजाओ के मरने का भी बहुत दुख है क्योंकि हम उसे बहुत प्यार करते थे पर हमारी मुश्किल यह है कि हम आदमी से नहीं लड़ सकते।

वैसे हम तुम्हारी मॉ को वापस लाने में तुम्हारी सहायता जरूर करेंगे। पर इससे ज़्यादा और कुछ नहीं कर पायेंगे। तुम घर जाओ और अपने सिपाही इकट्ठा कर के इन्तजार करो कि हम कैसे तुम्हारी सहायता करते हैं।"

अकानो ने ऐसा ही किया। वह अपने गॉव वापस चला गया और जानवरों की सहायता का इन्तजार करने लगा।

उसने देखा कि सब जानवरों ने दूसरे गॉव को घेर लिया। वे उनसे लड़े नहीं। घास खाने वाले जानवरों ने उनकी सारी खेती खा डाली।

जब उस गॉव से आदमी फसल लेने आये तो मॉसाहारी जानवरों ने उनको खा लिया और रेंगने वाले जानवरों ने भी उनके ऊपर हमला किया।

धीरे धीरे उनका सारा खाना खत्म हो गया और उनको शान्ति के लिये अकानो की मॉ को छोड़ना ही पड़ा। अकानो की मॉ वापस आ गयी और फिर अपने बेटे के साथ बहुत दिनों तक सुख से रही।

9 मोटिनू और बन्दर[32]

एक बार योरुबालैंड के ओवो शहर[33] में एक लड़की रहती थी जिसका नाम था मोटिनू[34]। मोटिनू बहुत ही ज़्यादा सुन्दर थी इसलिये बहुत सारे लड़के उससे शादी करने की इच्छा प्रगट कर चुके थे पर न जाने क्यों मोटिनू ने सभी को मना कर दिया था।

एक दिन वह पास के कुँए से पानी भर रही थी कि कुँए के पास उसने एक बड़े सुन्दर नौजवान को बहुत अच्छे कपड़े पहने बैठे देखा।

मोटिनू उसको देख कर आश्चर्य में पड़ गयी। इसलिये नहीं कि वह बहुत बहुत सुन्दर था या फिर वह बहुत अच्छे कपड़े पहने था बल्कि इसलिये कि वह नौजवान उसके लिये बिल्कुल अजनबी था। उसको विश्वास था कि वह ओवो शहर का नहीं था।

पर फिर उसने अपना पानी भरा और अपने घर वापस लौटने लगी। जब वह अपना पानी भर कर वापस लौट रही थी तो वह नौजवान उससे बोला — "मोटिनू, क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

मोटिनू ने आश्चर्य से पूछा — "मगर तुम मेरा नाम कैसे जानते हो?"

---

[32] Motinu and the Monkey – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, West Africa.

[33] Owo City of Nigeria

[34] Motinu – name of the Nigerian girl who did not want to marry anybody

वह नौजवान बोला — "जो लड़की सारे लड़कों से शादी करने से इनकार कर दे उसे कौन नहीं जानेगा? मैं यहाँ अजनबी हूँ और मैं बहुत अमीर भी हूँ। मेरे बहुत सारे दोस्त भी हैं।

हालाँकि मेरे दोस्त इस शहर के नहीं हैं परन्तु वे सब बड़े ताकतवर हैं और चारों तरफ उनका बहुत दबदबा है। मेरा घर यहाँ से बहुत ज़्यादा दूर नही है। क्या तुम मेरे घर चलोगी और मेरे घर वालों से मिल कर मेरी पत्नी बनना पसन्द करोगी?"

मोटिनू उसको पसन्द करने लगी थी सो वह उसके घर जाने के लिये राजी हो गयी। वह जल्दी जल्दी घर लौटी, उसने अपना थोड़ा सा सामान लिया और उस अजनबी के साथ चल दी।

शहर से बाहर निकल कर वे जंगल में घुस गये। वह नौजवान बड़ी तेज़ी से चल रहा था और मोटिनू उसके साथ चल नहीं पा रही थी।

काफी दूर जाने के बाद भी जब उस नौजवान का घर नहीं आया और मोटिनू चलते चलते हाँफने लगी तो वह रुक कर बोली — "कहाँ है तुम्हारा घर? हम लोग तो बहुत दूर निकल आये हैं।"

वह नौजवान जल्दी जल्दी चलते हुए बोला — "बस तुम मेरे पीछे पीछे आती रहो मोटिनू। मेरा घर अब ज़्यादा दूर नहीं है।"

आखिर मोटिनू चलते चलते जब बहुत थक गयी तो उस नौजवान ने उसे घास पर बिठा दिया। मोटिनू को यह जगह कुछ

नयी नयी सी लगी क्योंकि वह इधर पहले कभी नहीं आयी थी पर फिर भी वह उस नौजवान के साथ चलती रही।

कुछ दूर जा कर वह नौजवान बोला — "तुम यहीं बैठ कर मेरा इन्तजार करो मैं अपने परिवार वालों को यहीं बुला कर ले आता हूँ।" और यह कह कर वह भागता दौड़ता जंगल में गायब हो गया।

मोटिनू को यह सब देख कर कुछ घबराहट सी हुई और वह पछताने लगी कि वह इस अजनबी के साथ आयी ही क्यों। उसकी तेज़ चाल ढाल से उसको कुछ ज़रा ज़्यादा ही डर लग रहा था पर अब क्या हो सकता था अब तो वह उसके साथ आ ही गयी थी।

वह यही सब सोच रही थी कि वह नौजवान जहाँ गायब हुआ था उसी जगह उसको एक बहुत बड़ा बन्दर दिखायी दिया। वह कूदता फाँदता आया और आ कर मोटिनू के पास बैठ गया। मोटिनू उसकी तरफ आश्चर्य से देखने लगी।

अचानक वह बोला — "मोटिनू मैं ही तुम्हारा पति हूँ। मैं यहाँ रहता हूँ और अब तुम मेरी पत्नी की तरह यहीं रहोगी। तुमने देखा कि मेरे पास कितनी ताकत है कि मैं अपने आपको जब चाहूँ आदमी के रूप में बदल सकता हूँ और जब चाहे मैं बन्दर बन सकता हूँ। लेकिन मैं अपने दोस्तों के बीच बन्दर बन कर रहना ही ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

यह सब सुन कर मोटिनू तो बहुत ही डर गयी और रोने लगी। इस पर बन्दर ने उसे अपने अगले पंजों से थपथपाया।

मोटिनू को लगा कि अगर उसने अपनी देखभाल ठीक से नहीं की तो यह बन्दर तो उसको मार ही डालेगा इसलिये उसने तय किया कि वह अभी तो इस अजीब जानवर की हर बात मान लेगी पर बाद में उससे पीछा छुड़ाने की कुछ और तरकीब सोचेगी। उसने रोना छोड़ कर फिर ऐसा ही किया।

बन्दर तो यह देख कर खुशी के मारे किलकारी मारने लगा और कूदने लगा। उसकी किलकारी की आवाज सुन कर दूसरे बन्दरों ने भी कहीं दूर से किलकारियॉ मारीं और कुछ ही देर में तो वहॉ बहुत सारे बन्दर इकट्ठा हो गये।

सब वहीं घास पर चुपचाप शान्ति से बैठ गये। कुछ तो मोटिनू को इधर उधर से देख रहे थे, कुछ घास से खेल रहे थे और कुछ अक्लमन्दों की तरह गम्भीर बने बैठे थे।

जब वहॉ बहुत सारे बन्दर इकट्ठा हो गये तो वह बोलने वाला बन्दर यानी मोटिनू का पति एक पेड़ की ऊॅची सी डाल पर जा कर बैठ गया और सब बन्दरों की तरफ मुॅह कर के कुछ बोला।

वह क्या बोला यह तो मोटिनू की समझ में नहीं आया परन्तु उसके हावभाव से लग रहा था वह उन बन्दरों से उसी के बारे में कुछ कह रहा था। जब वह अपनी बात कह चुका तो सभी बन्दरों ने देर तक अपनी गर्दन हिलायी।

उसके बाद मोटिनू की तरफ मुँह कर के उसने कहा — "मेरा परिवार इस बात पर राजी हो गया है कि तुम यहाँ मेरी पत्नी की तरह रह सकती हो। अब तुम मेरी बात ज़रा ध्यान दे कर सुनो जो मैं तुमसे कहता हूँ फिर तुम पर कोई मुसीबत नहीं आयेगी।

तुमको यहीं इन जंगलों में मेरे साथ रहना पड़ेगा और तुम कभी भी आदमी और उसके शहर की तरफ नहीं लौट पाओगी। हम लोग तुमको एक ढोल देंगे जब हम नाचेंगे तब तुम वह ढोल बजाओगी।

तुमको यहाँ कोई खास काम नहीं करना पड़ेगा क्योंकि हम लोग आदमी की तरह पका हुआ खाना नहीं खाते। हाँ तुमको हमारे लिये ताजा जंगली फल और पानी जरूर लाना पड़ेगा।"

और मोटिनू वहाँ बन्दरों के साथ रहने लगी। उन्होंने उसको एक लकड़ी का ढोल ला दिया था। रोज सुबह वह ढोल बजाती और बन्दर नाचते।

फिर वह पानी भरने और ताजा भुट्टे[35] लाने जाती। खा पी कर बन्दर जंगल में घूमने चले जाते और मोटिनू को तीसरे पहर में कुछ आराम मिल जाता।

शाम को वापस आ कर वे बन्दर मोटिनू के ढोल पर फिर से नाचते। हालाँकि वे बन्दर मोटिनू को कुछ कहते नहीं थे फिर भी

[35] Translated for the words "Ear Corn". See its picture above.

मोटिनू उनसे कुछ डरी डरी सी रहती और उनको खुश रखने के लिये जो कुछ भी कर सकती थी करती रहती।

एक दिन मोटिनू जब बन्दरों के लिये भुट्टे इकट्ठा कर रही थी तो उसने एक शिकारी को पास से गुजरते हुए देखा। उसको देख कर मोटिनू बहुत ही खुश हुई। उसने धीरे से उस शिकारी को पुकारा।

उधर वह शिकारी भी इतनी सुन्दर लड़की को शहर से इतनी दूर जंगल में अकेली देख कर हैरान रह गया। मोटिनू ने उससे कहा कि वह बड़ी मुश्किल में थी और उसे उसकी सहायता चाहिये।

इस डर से कि कहीं बन्दर उसको देख न लें उसने उस शिकारी को अगले दिन तीसरे पहर के समय आने के लिये कहा।

अगले दिन वह शिकारी तीसरे पहर के समय आया। मोटिनू उस समय अकेली थी। उसने शिकारी को अपनी सारी कहानी सुनायी और कहा कि अगर वह उसको इन बन्दरों के चंगुल से छुड़ा लेगा तो वह उससे शादी भी कर लेगी।

शिकारी ने उसकी सब बातें बड़े ध्यान से सुनी और जो कुछ भी वह उसके लिये कर सकता था करने का वायदा किया। शिकारी ने मोटिनू से कहा कि वह बन्दरों के साथ ऐसे ही रहती रहे जैसे वह अब तक रह रही थी और वह उससे बाद में आ कर मिलता है।

ओवो लौटने पर शिकारी ने एक बढ़ई को बुलाया और उसको मोटिनू के बाल बनाने का ढंग बताया और चेहरे के कुछ निशान बताये। और

उससे कहा कि वह मोटिनू की शक्ल की लकड़ी की आठ छोटी छोटी मूर्तियॉ बना दे।

जब वे मूर्तियॉ बन गयीं तो उनको मोटिनू जैसा रंगा गया। शिकारी उन मूर्तियों को ले कर मोटिनू के पास गया और उससे अकेले में मिला।

वहॉ से उसने मोटिनू को लिया और उसको ले कर ओवो की तरफ जल्दी जल्दी चला। हर कुछ मील के बाद वह मोटिनू की एक मूर्ति सड़क पर डालता जाता था।

उस शिकारी का नाम था ओगुनयेमी[36]। उसको यह मालूम था कि जब भी बन्दर उनका पीछा करेंगे तो ये मूर्तियॉ उनको ओवो पहुॅचने में देर लगायेंगी। और शिकारी ने ठीक ही सोचा था।

कुछ देर बाद जब बन्दर शाम के नाच के लिये घर लौटे तो उन्होंने देखा कि वहॉ तो कोई भी नहीं है। ढोल भी चुपचाप एक तरफ को पड़ा है और मोटिनू का भी कहीं पता नहीं है। गुस्से में भर कर वे सब ओवो की तरफ चल दिये।

कुछ दूर जाने पर रास्ते में उनको मोटिनू की एक मूर्ति पड़ी मिली। उनको लगा कि वह मोटिनू थी। उन्होंने उसको उठा लिया और उसे उत्सुकता से देखना और उसके बारे में बात करना शुरू कर दिया।

[36] Ogunyemi – name of a Nigerian man

एक बोला — "यह क्या है जो मोटिनू से इतनी ज़्यादा मिलती जुलती है?"

वे लोग जब उस मूर्ति को उलट पलट कर देख रहे थे तो बड़े अक्लमन्द लग रहे थे। उन्होंने उसको जमीन पर भी लुढ़काया, उससे खेले भी परन्तु उनको यह किसी तरह भी पता न चल सका कि वह चीज़ क्या थी।

जब वे उससे खेलते खेलते थक गये तो उन्होंने उसको एक झाड़ी में फेंक दिया और मोटिनू को ढूँढने आगे चले।

आगे चल कर उनको मोटिनू की दूसरी मूर्ति मिली। उसको देख कर उनमें और ज़्यादा बातें और बहस होने लगीं। कुछ बोले कि यह तो वही चीज़ है जो उन्होंने पहले देखी थी और जादू से यहाँ उनके सामने फिर से आ गयी है।

मामला सुलझाने के लिये वे लोग फिर से पहली जगह गये और उस फेंकी हुई मूर्ति को वहीं पा कर सन्तुष्ट हो कर फिर आगे बढ़े।

इस तरह आगे मिलने वाली हर मूर्ति उनके गुस्से को बढ़ाती रही। आठवीं मूर्ति तक आते आते उनका गुस्सा इतना ज़्यादा बढ़ गया कि उन्होंने उसको खूब कुचला खूब कुचला और तोड़ कर फेंक दिया।

इतनी देर में मोटिनू और ओगुनयेमी दोनों उन बन्दरों के चंगुल से निकल कर ओवो पहुँच गये। पर इतना सब करने के बाद भी वे केवल ओवो तक ही पहुँच पाये थे कि उन्होंने अपने पीछे आती हुई

बन्दरों की ज़ोर की किलकारियॉ सुनी। वे बन्दर मोटिनू की आठवीं मूर्ति को तोड़ कर वहॉ आ पहुॅचे थे।

जब बन्दर ओवो शहर की चहारदीवारी तक पहुॅचे तो दूसरे बन्दरों की तो अन्दर जाने की हिम्मत नहीं हुई परन्तु मोटिनू का पति फिर से सुन्दर नौजवान बन कर उस शहर के अन्दर चला गया और ओगुनयेमी के घर पहुॅच गया।

मोटिनू ने उसे देखा तो पहचान गयी। उसने ओगुनयेमी को बताया कि वह नौजवान कौन था।

ओगुनयेमी ने यह सब मामला अपने सरदार को बताया तो सरदार ने उस नौजवान को जंजीरों से बॅधवा दिया और क्योंकि वह फिर जंगल नहीं लौट सका इसलिये वह अपने आपको फिर से बन्दर में भी नहीं बदल सका।

ज़िन्दगी के बाकी दिन उसको सरदार की सेवा में ही काट देने पड़े। उधर मोटिनू ने ओगुनयेमी से शादी कर ली और वे भी खुशी खुशी रहने लगे।

10 एक सुन्दर लड़की और मछली[37]

बहुत पुरानी बात है जब नाइजीरिया में हर जगह जादू का बोलबाला था। वहॉ के एक गॉव में एक बहुत सुन्दर लड़की रहती थी।

उस गॉव के बहुत सारे लड़के उससे शादी करना चाहते थे परन्तु उसने सारे लड़कों को मना कर दिया था। उसका कहना था कि उसका पति तो बहुत ही ज़्यादा सुन्दर होना चाहिये।

एक दिन जब वह बाजार में घूम रही थी तो उसने सचमुच में एक बहुत ही सुन्दर लड़का देखा और तुरन्त ही उसको उस लड़के से प्रेम हो गया।

वह उस लड़के के पास गयी और उसको बताया कि किस तरह वह उसकी सुन्दरता पर रीझ गयी थी और अब उससे शादी करना चाहती थी।

उस अजनबी ने जवाब दिया — "मैं तुमसे शादी कर के बहुत ही खुश होता परन्तु बदकिस्मती से मैं इन्सान नहीं हूॅ और तुम लोगों में से एक भी नहीं हूॅ।

मैं एक मछली हूॅ और मैं इडुनमायबो[38] में जो नदी है उसमें रहता हूॅ। देवताओं ने मुझे एक ऐसी ताकत दे रखी है जिससे मैं

[37] The Beautiful Girl and the Fish – a folktale of Yoruba Tribe from Nigeria, Africa

[38] Idunmaibo – name of a place

जब चाहूँ अपने आपको एक आदमी के रूप में बदल सकता हूँ पर मेरा घर तो नदी ही है और मैं फिर वहीं वापस चला जाऊँगा।"

यह सुन कर लड़की बोली — "कोई बात नहीं, चाहे तुम मछली हो या आदमी पर मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। अगर तुम समय समय पर पानी से निकल कर इसी रूप में मेरे पास आने का वायदा करो तो मैं तुमसे खुशी खुशी शादी कर लूँगी।"

मछली आदमी बोला — "हाँ ऐसा तो हो सकता है। ठीक है फिर ऐसा ही होगा।"

और ऐसा कह कर वह उस लड़की को इडुनमायबो की तरफ ले चला। वहाँ पहुँच कर वह एक नदी के पास एक जगह पर रुका और बोला — "यही मेरा घर है। तुम जब भी मुझे बुलाना चाहो तो मैं तुमको जादू का एक गीत बता देता हूँ, उसे गाना तो मैं तुम्हारे पास इसी रूप में चला आऊँगा। वह गीत है —

ओ नदी की सुन्दर मछली क्या मैं इस बहते पानी में से देख सकती हूँ
नदी की सतह से मैं तुम्हें देखूँगी ओ प्यारी नदी जो चाँदी और रत्न जैसी लगती है
जिसके नीचे महल है जो आदमियों के महल से भी ज़्यादा सुन्दर है।

यह कह कर वह मछली आदमी नदी में कूद पड़ा और गायब हो गया। लड़की भी वहाँ से चली गयी।

बाद में वह लड़की अपने प्रेमी के लिये रोज कुछ मिठाई बनाती और इडुनमायबो ले जाती। वहाँ जा कर वह जादू भरा गीत गाती और मछली पानी की सतह पर दिखायी देने लगती।

फिर वह मछली अपने आपको आदमी के रूप में बदल कर किनारे पर आ जाती। तब दोनों कुछ समय साथ में गुजारते।

जब वह आदमी नदी में से बाहर आता तो बहुत तरीके के मूँगे और रत्न ले कर आता और अपनी पत्नी को भेंट करता। वे लोग आपस में बहुत खुश थे और एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे।

जब लड़की के माता पिता ने देखा कि लड़की बड़ी होती जा रही है और वह किसी से शादी नहीं कर रही है तो उन्होंने उससे पूछा कि क्या उसकी निगाह में कोई ऐसा आदमी था जिससे वह शादी करना चाह रही हो।

तो लड़की ने जवाब दिया कि एक आदमी उसका पति था तो पर वह अभी उसके बारे में उनको बता नहीं सकती थी।

इस जवाब से वे बड़े परेशान हुए। वे उसको देखते रहते कि वह अपने पति के लिये खाना बनाती और उसे ले जाती।

उसके छोटे भाई ने उससे कई बार कहा कि वह उसके साथ चलेगा परन्तु लड़की ने कहा कि नहीं, यह काम वह अकेले ही करेगी और कोई उसके पीछे भी नहीं आये।

पर इस जवाब ने उस लड़के की उत्सुकता और जगा दी और एक दिन उसने तय कर लिया कि वह उसके पीछे पीछे जायेगा और देखेगा कि वह कहाँ जाती है और उस खाने का क्या करती है।

जादू से उसने अपने आपको एक मक्खी के रूप में बदला और अपनी बहिन के पीछे पीछे उड़ चला।

उसने देखा कि उसकी बहिन इडुनमायबो की तरफ गयी और वहॉ जा कर नदी के पास पहुँच कर उसने जादू का एक गीत गाया।

फिर एक मछली नदी की सतह पर आयी और वह एक सुन्दर नौजवान बन कर नदी के किनारे पर आ गयी। दोनों ने मिल कर खाना खाया, कुछ देर बातें कीं और फिर वह सुन्दर नौजवान नदी में कूद कर गायब हो गया।

लड़के ने उस जादुई गीत के बोल याद कर लिये और तुरन्त ही घर की तरफ उड़ चला। घर आ कर उसने अपने आपको फिर से लड़के के रूप में बदला और भागा भागा सीधा अपने माता पिता के पास गया।

उसने नदी के किनारे जो कुछ देखा था उसका पूरा हाल उनको सुना दिया और कहा कि उनकी बेटी ने तो एक मछली से शादी कर रखी है।

माता पिता यह सब सुन कर गुस्सा भी हुए और मन ही मन दुखी भी हुए। उन्होंने तय किया कि वे अपनी बेटी को अभी कुछ नहीं कहेंगे। वे अपनी बेटी को उसके बाबा के घर भेज देंगे और उसके जाने के बाद सोचेंगे कि उन्हें क्या करना चाहिये।

सो उस लड़की को उसके बाबा के घर भेज दिया गया। उसके बाबा का घर वहॉ से काफी दूर था और वहॉ से वह इतनी दूर आ कर अपने पति से नहीं मिल सकती थी।

जब लड़की चली गयी तब उन्होंने अपने बेटे से कहा कि वह उनको उस नदी के किनारे ले चले और वहाँ जा कर वह जादुई गीत गाये। बेटे ने ऐसा ही किया। वे सब नदी के किनारे पहुँचे और लड़के ने अपनी बहिन की आवाज में वह जादुई गीत गाया।

गीत सुन कर वह मछली पानी के ऊपर आयी और एक सुन्दर नौजवान का रूप रख कर नदी के किनारे पर कूद गयी। पिता एक झाड़ी के पीछे खड़ा था।

जैसे ही मछली नौजवान के रूप में नदी के किनारे पर कूदी पिता ने अपने हॅसिये से उसे मार डाला और उसे पानी में वापस फेंक दिया। आश्चर्य, वह नौजवान पानी में गिरने के बाद धीरे धीरे फिर से मछली के रूप में आ गया।

पिता यह देख कर चिल्लाया — "मैं अपनी बेटी को इस बुरे काम की सजा जरूर दूँगा।"

उसने अपने बेटे को वह मरी हुई मछली पानी से बाहर निकाल कर घर ले चलने के लिये कहा। घर जा कर उन्होंने उस मछली को सुखाया और लड़की के वापस आने तक रख दिया।

दो दिन बाद लड़की खुशी खुशी घर वापस लौटी कि अब वह नदी के पास जा कर अपने पति से फिर से मिल सकेगी।

वह घर आते ही नदी पर जाने के लिये तैयार हुई तो उसके पिता ने कहा — "पहले कुछ खा लो। तुम्हारी माँ ने तुम्हारे लिये बहुत ही स्वाद मछली पकायी है।"

लड़की बोली — "पिता जी मुझे भूख भी नहीं है और मैं मछली भी नहीं खाना चाहती।"

पिता ने उसको डॉटा — "जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही करो। चलो बैठो और पहले खाना खाओ।"

लड़की बेचारी दुखी सी चुपचाप बैठ गयी और मछली खाने लगी। जैसे ही वह मछली खाने लगी कि उसने अपने भाई को गुनगुनाते हुए सुना।

उसका गाना सुन कर तो वह हक्का बक्का रह गयी। उसके हाथों से खाने का कटोरा गिर गया और वह उसको भौंचक्की सी देखती रह गयी।

उसके भाई ने अपना गीत फिर दोहराया —

कितनी बुरी बात है स्त्रियों के लिये अपने पति का मॉस खाना
जबकि वे अपने पति को बहुत प्यार करती हैं
क्योंकि उनके पीछे उनके पति नदी में से निकाल लिये गये हैं
मछली के रूप में परिवार के खाने के लिये

लड़की यह गीत सुन कर तुरन्त नदी की तरफ दौड़ी गयी और उसने अपना जादुई गीत गाया पर उसका पति नदी से बाहर नहीं आया। फिर उसने एक और गीत गाया —

ओलूवेरी[39] ओलूवेरी ओ नदी देवी
मैं अपनी चॉदी जैसी ऑखें और सितारों जैसे बाल लिये लौटी हूँ
अगर मेरा पति मर गया है तो नदी की पानी की सतह लाल हो जाये

[39] Oluweri – the goddess of the Rivers

और अगर मेरा पति ज़िन्दा है तो वह बाहर आये
और आ कर अपनी प्रेमिका को देखे
जिसको कठोरता के साथ इतनी दूर भेज दिया गया था

उसी समय नदी का पानी लाल हो गया और लड़की जान गयी कि उसके पिता ने उसके पति को मार डाला है। वह तुरन्त नदी में कूद गयी। पर वह डूबी नहीं बल्कि नीचे बैठती चली गयी और मत्स्यांगना बन गयी।

लोगों का कहना है कि आज भी कभी कभी एक मत्स्यांगना नदी में गुनगुनाती सुनायी पड़ती है।

11 एक शिकारी और एक हिरनी[40]

बहुत पुरानी बात है कि नाइजीरिया के एक गॉव में ओगुनलोला[41] नाम का एक शिकारी रहता था। वह रोज अपना तीर कमान ले कर शिकार के लिये जंगल चला जाता था।

वह अपने गॉव में सबका बहुत प्रिय था क्योंकि वह जंगल से कभी भी खाली हाथ नहीं लौटता था। वह हमेशा ही काफी शिकार ले कर लौटता था और कई लोगों को अपने लाये शिकार का मॉस दे देता था इसलिये हर एक को थोड़ा बहुत मॉस खाने को मिल ही जाता था।

लोग उसको उसके शिकार के बदले में उसको चावल, केला, ताड़ी[42] आदि दे दिया करते थे।

एक दिन ओगुनलोला शिकार पर गया तो जंगल में कुछ दूर निकल गया और एक अनजानी जगह जा पहुँचा। जब उसे शिकार करना होता था तो अक्सर वह पेड़ पर चढ़ कर जानवरों का इन्तजार किया करता था।

आज भी वह एक पेड़ पर चढ़ा जानवर का इन्तजार कर रहा था पर काफी देर के इन्तजार के बाद भी उसको कोई शिकार हाथ नहीं लगा।

---

[40] A Hunter and a Hind – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[41] Ogunlola – name of the hunter

[42] Translated for the words “Palm Wine” – made from palm juice.

शाम ढल रही थी और उसको घर वापस भी जाना था। उसका घर वहॉ से थोड़ा दूर था सो वह पेड़ से नीचे उतर कर घर जाने की सोचने लगा।

वह पेड़ से नीचे उतरने ही वाला था कि उसकी नजर पास की झाड़ी में खड़ी एक हिरनी पर पड़ी। उसको देख कर वह बहुत खुश हो गया।

तुरन्त ही उसने अपना तीर कमान निकाला और तीर कमान पर चढ़ा कर उसे चलाने ही वाला था कि उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि उस हिरनी ने अपनी खाल उतारनी शुरू कर दी और कुछ ही पल में वहॉ एक सुन्दर लड़की खड़ी थी।

लड़की बहुत सुन्दर थी। इतनी सुन्दर लड़की ओगुनलोला ने अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखी थी। उस लड़की ने हिरनी वाली खाल पास में पड़े पत्थर के नीचे दबा दी और धीरे से जंगल में गायब हो गयी।

ओगुनलोला यह सब देख कर भौंचक्का रह गया था। उसने कुछ देर तक तो उस लड़की के आने का इन्तजार किया पर फिर जब वह नहीं आयी तो उसने पत्थर के नीचे रखी उस हिरनी की खाल को उठाया और उसे ले कर घर वापस आ गया।

अगली सुबह वह तड़के ही उठा, उस खाल को एक थैले में डाला और फिर से उसी जगह की तरफ चल दिया।

वहॉ जा कर ओगुनलोला ने सारा दिन शिकार और उस लड़की का इन्तजार किया परन्तु उस दिन न तो उसको शिकार ही मिला और न ही वह लड़की आयी।

पर शाम ढले जब वह घर वापस आने के लिये तैयार हो रहा था तो वह लड़की उसको फिर दिखायी दी। वह लड़की पत्थर के पास पहुँच कर अपनी खाल ढूँढने लगी।

ओगुनलोला ऊपर से ही बोला — "क्या तलाश कर रही हो?"

लड़की चौंक गयी पर मजबूरी की वजह से वह डरी नहीं और बोली — "मैं यहॉ एक हिरनी की खाल तलाश कर रही हूँ जो यहॉ इस पत्थर के नीचे रखी हुई थी।"

क्योंकि वह लड़की बहुत सुन्दर थी इसलिये ओगुनलोला ने पहले दिन शाम को जो कुछ भी देखा था उसको सब सच सच बता दिया और कहा कि अगर वह उसके घर चल कर उससे शादी कर लेगी तो वह उसकी खाल वापस कर देगा।

उस लड़की का नाम अयिन्के[43] था। वह इस शर्त पर राजी हो गयी कि उसके रूप बदलने का यह भेद वह किसी को बतायेगा नहीं।

ओगुनलोला उसकी यह शर्त तुरन्त ही मान गया। सो अयिन्के ने अपने वायदे के अनुसार उसे वह खाल भेंट में दे दी और वह उसके साथ उसके घर चल दी।

[43] Ayinke – name of the girl who had the skin of the hind

उससे पहले ओगुनलोला के दो पत्नियॉ और थीं अबाके और अशाके[44]। दोनों ही अयिन्के को देख कर आश्चर्य में पड़ गयीं क्योंकि वह उनके गॉव की नहीं थी और उन्होंने उसको कभी देखा भी नहीं था।

ओगुनलोला ने उनको समझाया कि वह दूर के किसी गॉव की थी। सभी ने उसकी बात मान ली और अबाके और अशाके ने भी उसका स्वागत किया। सभी खुशी खुशी रहने लगे।

कुछ समय बाद अयिन्के ने एक बेटे को जन्म दिया। उसका नाम उन्हों ने ओगुनरिन्डे[45] रखा। अयिन्के अपने बेटे को बहुत प्यार करती थी। अभी तक ओगुनलोला ने यही सोच कर वह हिरनी वाली खाल नष्ट नहीं की थी कि कहीं उसका जादू चला न जाये।

दो साल के बाद अयिन्के में कुछ बदलाव आने लगे। अब उस को ओगुनलोला के घर में सन्तोष नहीं मिलता था। उसको अपने बेटे में भी कोई रुचि नहीं रह गयी थी।

ओगुनलोला ने भी उसका यह बदलाव देखा और सोचा कि शायद वह अपने जंगली जीवन में फिर से वापस जाना चाहती हो इसलिये उसने उस खाल को कोलानट[46] की एक टोकरी में छिपा कर ऊपर छत से टॉग दिया।

[44] Abake and Ashake – names of the two previous wives of Ogunlola

[45] Ogunrinde – name of the son of Ogunlola

[46] Cola Nut is kind of nut of a fruit which is eaten like Indian betel nut. Nigerians offer this nut as an auspicious thing when they meet each other. See its picture above.

एक दिन अयिन्के ने ओगुनलोला से अपनी खाल माँगी तो ओगुनलोला ने उसे देने से इनकार कर दिया और साथ में उसने उसे यह भी बताने से इनकार कर दिया कि वह उसने कहाँ छिपायी थी।

अयिन्के ने ओगुनलोला से कई बार पूछा कि वह खाल उसने कहाँ रखी थी पर ओगुनलोला ने उसे यह बता कर ही नहीं दिया कि वह खाल उसने कहाँ छिपायी थी। इस पर दोनों में झगड़ा होने लगा।

अभी तक ओगुनलोला अबाके और अशाके से इस बात को छिपाये हुए था परन्तु जब झगड़े बढ़ने लगे तो उन दोनों को भी शक हुआ कि यह मामला क्या है।

ओगुनलोला के जंगल जाने के बाद अयिन्के रोज अपनी खाल ढूँढती और अबाके और अशाके के पूछने पर भी वह उन्हें कुछ नहीं बताती कि वह क्या ढूँढ रही है।

यह सब देख कर एक दिन अबाके और अशाके दोनों बाजार जाने का बहाना कर के पास में ही चटाइयों के पीछे छिप कर बैठ गयीं और अयिन्के को देखने लगी कि वह क्या करती है।

उन्होंने देखा कि अयिन्के ने एक सीढ़ी ली और कोलानट की टोकरी में छिपी हुई हिरनी की खाल निकाल ली।

यह देख कर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ पर इससे ज़्यादा आश्चर्य तो उन्हें तब हुआ जब उसने वह खाल पहन ली और हिरनी बन कर ओगुनलोला के घर से चली गयी।

अबाके और अशाके इस बात पर ओगुनलोला से बहुत गुस्सा हुईं कि उसने एक जानवर को अपनी पत्नी बना रखा था। वे तुरन्त अपने मॉ बाप के घर गयीं और वहॉ जा कर गॉव के सरदार को सब बातें बतायीं। उनकी बातें सुन कर सरदार ने एक मीटिंग बुलायी।

इस बीच में उस हिरनी को जंगल में अपना पति दिखायी दे गया। वह उछलती कूदती उसके सामने आ गयी और इससे पहले कि वह उसे मारता वह उससे बोली — "ओ मेरे शिकारी पति, मुझे मारना नहीं। जब तुम नहीं थे तो मैंने अपना रुपहला कोट पहना और अपनी चीज़ें अपने बेटे को दे दीं। मुझे नहीं मारना।"

उसके बाद वह बोली क्योंकि उसने उसको उसकी खाल नहीं दी थी इसलिये अब वह उसके घर नहीं जाना चाहती थी और अब वह हिरनी ही बन कर रहेगी।

वह अब अपने घर जा सकता था और अपनी पत्नियों से उस के गायब होने के बारे में जो चाहे सो कह सकता था। यह कह कर वह भाग गयी।

ओगुनलोला हक्का बक्का सा उसको जंगल में भागते हुए जाता देखता रहा। जब वह गॉव लौटा तो आधा पागल सा दिखायी दे रहा था।

गॉव लौटने पर उसे पता चला कि गॉव के सारे लोग उसके खिलाफ हो चुके हैं और गॉव के सरदार ने उसको एक जानवर को पत्नी बना कर रखने के जुर्म में उसको और उसके बेटे दोनों को गॉव

से बाहर निकाल दिया है। सो वे दोनों गॉव छोड़ कर जंगल में रहने लगे।

ओगुनलोला बहुत दिनों तक जिया और अपना और अपने बेटे का केवल शिकार कर के पेट पालता रहा। बाद में उसका बेटा भी जंगली हो गया और एक दिन जंगल में गायब हो गया।

पत्नियों और बेटे के जाने के बाद वह अकेला हो गया था और जब वह मरा तब भी वह अकेला ही था।

12 ओनी और एक बड़ी चिड़िया[47]

एक बार योरुबा लोगों के एक गॉव में एक अजीब लड़का पैदा हुआ। वह जब पैदा हुआ था तो उसके पैरों में जूते थे। उस लड़के का नाम रखा गया ओनी[48]।

जैसे जैसे ओनी बड़ा होता गया वैसे वैसे उसके जूते भी बढ़ते गये। जब वह अठारह साल का था तो उसके गॉव की एक दूसरे गॉव से लड़ाई छिड़ गयी।

इसी लड़ाई के बीच उसको अपनी एक दूसरी खासियत का पता चला जिसने उसको उसके साथियों से अलग कर दिया।

उसकी यह दूसरी खासियत थी कि दुश्मनों के तीर उसके शरीर को कोई नुकसान नहीं पहुॅचा रहे थे। इस लड़ाई में उसको कई ऐसे तीर लगे जो उसको मार भी सकते थे पर वह उन तीरों से बिना किसी घाव के निकल आया और वह क्योंकि मर नहीं सकता था तो वे उससे डरने लगे और उसके पास जाने से भी कतराने लगे।

जब वह उस लड़ाई से लौट आया तो बहुत सारे लोगों ने उसको मारने की कोशिश की परन्तु सब बेकार। तो उसको गॉव से निकालने का बहाना ढूॅढा गया।

---

[47] Oni and the Big Bird – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa. Available on the Web Site at : http://images.pcmac.org/sisfiles/schools/al/autaugacounty/marburymiddle/uploads/forms/hreader.pdf

[48] Oni – name of the boy who was born with shoes on his feet

उसको एक घर में आग लगाने के जुर्म में गॉव निकाला दे दिया गया। हालॉकि ओनी का उस घर या उस घर की आग से कोई सम्बन्ध नहीं था परन्तु फिर भी उसको गॉव से निकल जाना पड़ा।

ओनी गॉव छोड़ कर बहुत दिनों तक पैदल ही मारा मारा फिरता रहा। एक दिन वह एक बड़ी नदी के किनारे पर आ पहुॅचा। वह पैदल चलते चलते बहुत थक गया था। वहॉ उसको एक खाली नाव दिखायी दी तो वह उस नाव में बैठ कर नदी के नीचे की तरफ चल दिया।

शाम के समय जब थोड़ा सा अॅधेरा हो आया तो ओनी एक शहर के पास पहुॅचा। उसने वह रात उसी शहर में बिताने का निश्चय किया और वह नाव से उतर कर उस शहर में चल दिया। उसने देखा कि उस शहर में बहुत सारे घन्टे बज रहे थे और लोग जल्दी जल्दी इधर उधर आ जा रहे थे।

उसने एक बूढ़े आदमी को रोक कर कहा — "मेरा नाम ओनी है। मैं आपके शहर में एक अजनबी हूॅ। किसी को जानता नहीं जहॉ रात बिता सकूॅ। क्या मैं आपके घर रात बिता सकता हूॅ?"

बूढ़ा आदमी बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। आओ मेरे साथ आओ। पर ज़रा जल्दी जल्दी चलना क्योंकि ये घंटे बज रहे हैं और रात होने वाली है।"

ओनी ने पूछा — "आपके शहर का नाम क्या है और आपके शहर में अॅधेरा होने पर ये लोग घंटे क्यों बजा रहे हैं?"

बूढ़ा बोला — "इस जगह का नाम अजो[49] है। पर तुम ज़रा जल्दी जल्दी चलो। हमको जल्दी ही घर के अन्दर पहुँच जाना चाहिये। घर पहुँच कर मैं तुमको सब बता दूँगा।"

कुछ ही देर में वे उस बूढ़े आदमी के घर पहुँच गये। वहाँ पहुँच कर ओनी ने महसूस किया कि उस बूढ़े आदमी के घर वाले बड़ी बेसब्री से उसका इन्तजार कर रहे थे।

अब तक वे घंटे बजने बन्द हो गये थे। उन लोगों के घर में घुसते ही दूसरे लोगों ने घर का दरवाजा कस कर बन्द कर दिया।

बूढ़ा बोला — "आओ बैठो और हमारे साथ खाना खाओ। मैं तुमको सब कुछ बताता हूँ।"

खाना खाते खाते बूढ़े ने कहना शुरू किया — "कई सालों से हम अजो शहर के लोग रात को एक बहुत बड़े गरुड़ चिड़े के आने से परेशान रहते हैं। हम लोग उसको अनोडो[50] कहते हैं।

वह गरुड़ यहाँ रोज आता है और सुबह होने तक यहीं रहता है। जो भी उस समय में घर के बाहर रह जाता है वह बदकिस्मती से मारा जाता है। तुम किस्मत वाले थे जो अजो शाम होने से पहले ही पहुँच गये।

[49] Ajo – a village in Nigeria
[50] Anodo – name of the eagle

हमारे राजा ने घंटे बजा कर रात होने से पहले घर में घुसने के लिये कहा है। हम लोगों में से कोई नहीं जानता कि वह गरुड़ कहाँ से आता है और सुबह होते ही कहाँ चला जाता है।

हम लोगों के ऊपर यह एक शाप सा है और इसने हमारे बहुत सारे लोगों को मार दिया है।"

बूढ़े ने अभी अपनी बात खत्म ही की थी कि ओनी ने किसी बड़ी चिड़िया के पंखों के फड़फड़ाने की आवाज सुनी। जब वह आवाज उनके अपने घर के ऊपर से आयी तो घर के दरवाजे खिड़कियाँ सभी कुछ हिल गया।

ओनी ने यह देख कर कहा — "इसकी आवाज से ऐसा लग रहा है कि यह चिड़िया तो सचमुच ही बहुत बड़ी होनी चाहिये।"

जब ओनी खाना खा चुका तो बूढ़े ने बिछाने के लिये उसको एक चटाई दी और एक चादर ओढ़ने के लिये दी। ओनी वहीं कमरे के एक कोने में वह चटाई बिछा कर और वह चादर ओढ़ कर लेट गया। चिड़िया के उड़ने की आवाज की वजह से उसको सारी रात नींद नहीं आयी।

सुबह उठ कर ओनी ने बूढ़े को धन्यवाद दिया। गरुड़ वहाँ से जा चुका था। ओनी भी उस बूढ़े के घर से चल दिया। वहाँ से वह सीधा राजा के महल में गया और राजा से मिलने की इच्छा प्रगट की। राजा ने ओनी को बुलाया।

ओनी बोला — "मेरा नाम ओनी है। मैं आपके शहर में एक अजनबी हूँ। मैं आपके शहर को इस अनोडो गरुड़ से छुटकारा दिलाने की इजाज़त चाहता हूँ।"

राजा ने आश्चर्य से पूछा — "सभी लोग इस काम में अभी तक नाकामयाब रहे हैं। तुम ऐसा कैसे सोचते हो कि तुम यह काम कर पाओगे?"

ओनी बोला — "महाराज, मेरे पास कुछ खास ताकतें हैं और जू जू[51] हैं जिनसे मैं यह सोचता हूँ कि मैं यह काम कर पाऊँगा।"

राजा बोला — "ओनी, ऐसा तो औरों के पास भी था पर वे सब शिकारी एक एक कर के या तो मारे गये या अनोडो उनको उठा कर ले गया। हमारे यहाँ बाहर से भी कुछ अजनबी लोग इस काम को करने के लिये यहाँ आये पर वे बेचारे भी मारे गये।

हाँ अब काफी समय से अनोडो को मारने की कोशिश किसी ने नहीं की है और मैंने अब अपने शिकारियों को ऐसी कोई कोशिश करने से भी मना कर दिया है क्योंकि इस काम में काफी जानें जा चुकी हैं। तुम सोच लो।"

इस पर ओनी ने पूछा — "क्या कभी आपने उस आदमी को इनाम देने की भी घोषणा की है जो उस चिड़िया को मारेगा?"

[51] Ju Ju means maghic or Black Magic. In India it is called Jaadoo Tonaa. It may be for good or bad.

राजा बोला — "हॉ, काफी समय पहले एक बार मैंने घोषणा की थी कि जो भी इस गरुड़ को मारेगा मैं उसको अपना आधा राज्य दूँगा।"

ओनी बोला — "तो आज की रात मैं उसको मारने की कोशिश करूँगा।" कह कर उसने सिर झुकाया और वहॉ से चला गया।

ओनी वापस उस बूढ़े के घर आया और उसको राजा से हुई बातों और अपने इरादों के बारे में बताया। बूढ़ा यह सुन कर बहुत डरा और उसको यह काम न करने के लिये कहा क्योंकि यह काम उसके लिये ही नहीं बल्कि बूढ़े के अपने परिवार के लिये भी खतरनाक था और उन सबको मार सकता था।

परन्तु ओनी को कोई डर नहीं था। उसने अपना तीर कमान उठाया, चाकू देखे भाले और उनको ठीक से देखने भालने के बाद रख दिया।

ओनी को अगला दिन एक पहाड़ की तरह लगा। उसको अपनी ज़िन्दगी का कोई भी दिन इतना लम्बा नहीं लगा था जितना कि यह दिन। जैसे तैसे शाम हुई और फिर रात आयी और उसके साथ आयी घंटियों के बजने की आवाज।

बूढ़ा और उसके परिवार वाले यह आवाज सुन कर दुखी हो उठे और डर के मारे कॉपने लगे।

पर ओनी बिल्कुल निडर था। बूढ़े ने तुरन्त अपने घर के दरवाजे और खिड़कियॉ बन्द कर दिये और ओनी को उसने चटाई बिछा कर लेट जाने के लिये कहा।

इतने में ही उस बड़े गरुड़ के पंखों की फड़फड़ाहट सुनायी दी। जब वह गरुड़ उनके घर के ऊपर आया तो ओनी ने गाना शुरू किया —

आज ओनी अनोडो के मुकाबले पर है, उस गरुड़ के जिसकी चोंच चाकू से भी तेज़ है
सो आज प्रकृति के चाकुओं का मुकाबला आदमी से है
ओनी को कोई नहीं जीत सकता उसके चाकू बहुत तेज़ हैं

घर के ऊपर से उड़ते हुए अनोडो ने ओनी का यह गीत सुना तो वह फिर लौटा और उस बूढ़े के घर के ऊपर आ कर गाया —

ओह आज मुझे मेरा शिकार मिला है, बहुत दिन हो गये मुझे कोई शिकार किये
क्या यह गवैया बाहर आयेगा मेरे पंजों की मार सहने के लिये
और मेरी चोंच की मार सहने के लिये
मैं एक पल में उसको मार दूँगा, आ तू बाहर तो आ।

यह सुन कर तो घर के सारे लोग थर थर कॉपने लगे। उन्होंने ओनी को उठा कर घर के बाहर फेंक दिया। जैसे ही ओनी सड़क पर गिरा कि गरुड़ ने उसे अपने पंजों में उठाया और ऊपर उड़ चला।

ओनी ने अपने चाकू से गरुड़ की छाती में चीरा मारा। इससे दर्द से कराहते हुए गरुड़ ने ओनी को छोड़ दिया। ओनी धम्म से नीचे जमीन पर आ गिरा।

बाज़ दोबारा ओनी के ऊपर झपटा। इतनी देर में ओनी ने अपना तीर कमान निकाला और एक तीर अनोडो के ऊपर चलाया पर अनोडो ने ओनी को अपनी चोंच और पंजों से बुरी तरह से घायल कर दिया।

फिर भी ओनी ने हिम्मत कर के गरुड़ की छाती में दो बार अपना चाकू मारा। गरुड़ कराहता हुआ फिर ऊपर उड़ चला। वह फिर एक बार नीचे की ओर आया और ओनी की तरफ बढ़ा। इतनी देर में ओनी काफी सँभल चुका था।

गरुड़ को फिर से आता देख कर ओनी ने उस पर अपने तीर पर तीर चलाने शुरू कर दिये। फिर भी वह गरुड़ ओनी की तरफ बढ़ता ही चला आया और उसको अपने पंजों से ज़ोर से मारा।

ओनी एक तरफ को लुढ़क गया और उसकी ऑखों के सामने तारे नाचने लगे। वह बेहोश हो कर गिर पड़ा। पर वह यह नहीं देख पाया कि गरुड़ तो उसके मारने से पहले ही मर चुका था।

गरुड़ पास के कपास के एक पेड़ के पास पड़ा था। उधर ओनी को जब होश आया तो उसको बहुत कमजोरी महसूस हुई।

गरुड़ के पंखों की पकड़ से बाहर निकलने में उसके पैर का जादू का एक जूता निकल गया और उस चिड़िया के नीचे दबा रह

गया। बड़ी मुश्किल से वह नदी के पास पहुँचा कि फिर बेहोश हो गया।

सुबह होने पर लोगों ने देखा कि अनोडो कपास के टूटे पेड़ के नीचे मरा पड़ा है। उसको मरा देख कर लोगों में खुशी की लहर दौड़ गयी। उन्होंने ढोल पीटना शुरू कर दिया।

ढोल की आवाज सुन कर राजा भी बाहर आया और गरुड़ को मरा देख कर बहुत खुश हुआ।

उसने पूछा — "वह कौन है जिसने अनोडो को मारा है?"

राजा के शिकारियों में से एक शिकारी बाहर आया और राजा को झुक कर प्रणाम कर के बोला — "महाराज, यह काम आपके इस गुलाम का है।"

राजा बोला — "अगर यह काम तुम्हारा है तो तुमको बहुत बड़ा इनाम मिलेगा। मैंने अनोडो को मारने वाले को अपना आधा राज्य देने का वायदा किया है और अगर अनोडो को तुमने मारा है तो वह आधा राज्य तुम्हारा है।"

लोगों ने इस समाचार को सुन कर बहुत खुशियाँ मनायीं और वे उस शिकारी को राजा के घर ले गये और उसको बहुत बढ़िया खाना खिलाया।

उसी समय एक कमजोर और थका हुआ सा आदमी अन्दर आया। उसके कपड़े फटे हुए थे और उसके पैर का एक जूता गायब था।

राजा उसके देखते ही बोला — "ओह यही तो वह अजनबी है जिसने अपना नाम ओनी बताया था और इस गरुड़ को मारने की इच्छा प्रगट की थी। पर मित्र, तुमको बहुत देर हो गयी।"

ओनी बोला — "राजा साहब, अनोडो को मैंने मारा है। यह आदमी झूठ बोलता है।"

यह सुन कर राजा और उसके सरदारों में कानाफूसी होने लगी।

अन्त में राजा बोला — "अनोडो को तुमने मारा है इसका तुम्हारे पास क्या सबूत है?"

ओनी बोला — "पहली बात तो यह कि आप मेरी हालत देख रहे हैं। दूसरे अगर आप केवल इससे सन्तुष्ट नहीं हैं तो आप अपने आदमियों को वह जगह साफ करने लिये भेजें जहॉ वह मरा हुआ गरुड़ पड़ा है और टूटा हुआ कपास का पेड़ पड़ा है। वहॉ आपको मेरे पैर का एक जूता मिल जायेगा।"

राजा ने तुरन्त ही अपने कुछ आदमी उस जूते को ढूँढने के लिये भेजे। कुछ ही देर में वे ओनी का जादू का दूसरा जूता ढूँढ कर ले आये और बोले इस जूते को हमने मरे हुए बाज़ के पंख के नीचे पाया है।

ओनी बोला — "अगर आपको अभी भी विश्वास न हो रहा हो तो आप उसे अपने किसी भी आदमी को पहना कर देख लीजिये अगर यह उसके पैर में आ जाये तो।"

राजा ने सभी से वह जूता पहन कर देखने को कहा पर आश्चर्य, साधारण और सामान्य सा दिखायी देने वाला वह जूता किसी के भी पैर में नहीं आया।

जूता राजा के सामने रख दिया गया। ओनी ने दूर से ही जूते से कहा — "ओ जादू के जूते, अपने स्वामी के पैर में आ जाओ।" और सब लोगों ने देखा कि जूता चल कर ओनी के पास पहुँचा और जा कर उसके पैर में फँस गया।

ओनी के सच बोलने से राजा बहुत खुश हुआ और उसको अपने आधे राज्य का मालिक बनाया। शिकारी को मौत की सजा दे दी गयी।

उस रात बहुत दिनों बाद अजो शहर में घंटे नहीं बजे और लोग रात गये तक खुशियाँ मनाते टहलते रहे।

13 ओलूसेग्बे[52]

बहुत साल पहले की बात है जब योरुबा लोगों ने तभी तभी एक लड़ाई जीती थी और वे लोग कुछ जीते हुए लोग और सामान के साथ घर लौट रहे थे।

ओलूसेग्बे उन सबका सरदार था। अगर देखा जाये तो आज की यह लड़ाई उसी की वजह से जीती गयी थी।

गॉव आते समय दो सिपाही बात कर रहे थे — "ओलूसेग्बे अभी तक अकेला है। इन जीते हुए लोगों में कुछ लड़कियॉ बहुत सुन्दर हैं। हो सकता है कि वह इन्हीं में से एक से शादी कर ले।"

दूसरा बोला — "वह बड़ा अजीब आदमी है। उसने तो अभी तक अपने ही गॉव की किसी लड़की से शादी नहीं की वह इनमें से किसी एक से क्या शादी करेगा।"

उधर ओलूसेग्बे भी यही सोच रहा था पर पकड़ी हुई लड़कियों में से कोई उसको मन नहीं भा रही थी।

चलते चलते एक नदी आ गयी और सभी नदी पार करने लगे। ओलूसेग्बे ने अपने घोड़े पर चढ़ कर नदी तुरन्त ही पार कर ली और नदी के उस पार जा कर दूसरे लोगों को नदी पार करते देखने लगा।

[52] Olusegbe – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

तभी उसकी निगाह किनारे पर उगी एक सब्जी पर पड़ी। उसने उसको तोड़ लिया और उसकी एक पत्ती पकड़ कर बोला — "कितनी सुन्दर सब्जी है यह। अगर यह किसी की पत्नी बन जाती तो कितना अच्छा रहता।"

बस उसका इतना कहना था कि वह सब्जी तो उसके हाथ से फिसल कर नीचे गिर गयी और एक सुन्दर लड़की के रूप में बदल गयी।

ओलूसेग्बे देखते ही उसको चाहने लगा। उसने उससे पूछा — "क्या तुम मेरी पत्नी बन कर मेरे घर चलोगी?"

लड़की ने सिर झुकाया और चुपचाप उसके पीछे पीछे चल दी।

कुछ दूर चलने पर उसको चमकीले रंगों वाली एक अजीब सी चिड़िया दिखायी दी। उसको देख कर ओलूसेग्बे के मुँह से निकला — "काश, किसी आदमी की पत्नी भी इतनी ही सुन्दर होती।"

उसका इतना कहना था कि वह चिड़िया भी एक सुन्दर लड़की में बदल गयी और उसके पीछे पीछे हो ली।

कुछ देर बाद ठंडे पानी का एक झरना आया। दिन गरम था सो सभी वहाँ थोड़ी देर के लिये ठंडक में बैठ गये।

उस ठंडे पानी के देख कर ओलूसेग्बे बोला — "कितना ठंडा पानी है। काश यह एक लड़की होता।"

और उसके यह कहते ही पानी का कैलेबाश[53] लिये हुए एक लड़की वहॉ प्रगट हो गयी। उसने उस लड़की के कैलेबाश से पानी पिया और उसको भी साथ ले कर गॉव की तरफ चल दिया।

आगे जा कर उसने एक हिरन को भी एक लड़की बनाया और उसको भी साथ ले लिया।

जब वह अपने गॉव के पास पहुॅचा तो वह इन घटनाओं के बारे में सोच ही रहा था कि उसने एक बहुत सुन्दर तितली एक फल के ऊपर मॅडराती देखी।

वह सोचने लगा कि अगर मैंने फिर कहा कि "यह तितली कितनी सुन्दर है" या "यह फल कितना सुन्दर है" तो शायद ये भी लड़कियॉ बन जायेंगे और फिर वे लड़कियॉ मेरे पीछे लग जायेंगी।

पर उसका यह बोलना ही था कि सचमुच ही वे तितली और फल दोनों ही लड़कियॉ बन गयीं और अब छह लड़कियॉ उसके घोड़े के पीछे पीछे चल रहीं थी।

वह जब गॉव के अन्दर पहुॅचा तो गॉव वालों ने उन छहों लड़कियों की तरफ कोई खास ध्यान नहीं दिया क्योंकि वे समझ रहे थे कि वे भी शायद जीती हुई लड़कियॉ होंगी। पर ओलूसेग्बे के सिपाही और दूसरे लोग उनको देख कर जरूर आश्चर्य कर रहे थे

[53] Calabash is a dry outer cover of a pumpkin like fruit which is used to keep dry or wet things as in India the pitchers are used. See its picture above.

कि ये लड़कियॉ कहॉ से आयीं। क्योंकि जब वे पहले वाले गॉव से चले थे तब तो ये लड़कियॉ उसके साथ नहीं थीं।

उस रात जीत की खुशी में खूब आनन्द मनाया गया। जीत का माल बॉटा गया और सब सिपाही अपने अपने घरों को लौट गये।

उधर ओलूसेग्बे ने उन छहों लड़कियों से शादी कर ली। अपना घर भी खूब बड़ा बनवा लिया। सब्जी वाली पत्नी उसको अपनी सब पत्नियों में सबसे ज़्यादा प्यारी थी इसलिये वही उसकी पहली पत्नी बनी।

एक दिन उसकी सब्जी वाली पत्नी ने कहा — "ओलूसेग्बे, लोगों का कहना है कि तुम्हारे पास कोई जू जू[54] है इसी लिये लड़ाई में तुमको कोई हरा नहीं सकता। क्या यह बात सही है?"

ओलूसेग्बे बोला — "आज तक मैंने यह बात किसी को नहीं बतायी पर अब क्योंकि मेरी शादी हो चुकी है और तुम मेरी बड़ी पत्नी हो इसलिये मैं तुमको बता देता हूॅ। तुम ठीक कहती हो। हर लड़ाई में मेरी जीत उस जू जू की वजह से ही होती है।

मेरे घर के उस दूर वाले कोने में पानी का एक घड़ा है और एक झाड़ू है जो कभी भी इस्तेमाल नहीं की जाती। जब भी मुझे किसी लड़ाई का डर होता है तो मैं वह झाड़ू उस जादू के पानी में डुबोता हूॅ और फिर मुझे किसी के हमले का डर नहीं रहता।

[54] Ju Ju is a magic or Black Magic. It is a kind of Tonaa Totakaa of India. This is Nigerian traditional magic. It may be for good or for bad.

पर तुम यह बात किसी को बताना नहीं। यह बात केवल हम तुम दोनों के बीच में ही रहनी चाहिये।"

सब्जी वाली पत्नी ने कहा कि ठीक है वह यह बात किसी को नहीं बतायेगी।

क्योंकि आजकल गॉव में शान्ति थी सो ओलूसेग्बे ने राजा से कुछ समय के लिये उस गॉव से बाहर जाने की इजाज़त मॉगी। वह अपने एक दोस्त से मिलना चाहता था। राजा ने उसको इजाज़त दे दी।

कुछ दिन बाद ओलूसेग्बे अपनी सब्जी वाली पत्नी को घर की देखभाल करने के लिये छोड़ कर अपने दोस्त से मिलने चल दिया।

कुछ समय तक तो सब ठीक रहा पर कुछ समय बाद ही पास के एक कबीले ने हमला कर दिया। हमला अचानक था इसलिये गॉव के लोगों को गॉव की दीवार के दरवाजे बन्द करने और इधर उधर सिपाही खड़े करने का समय ही नहीं मिला।

राजा बहुत दुखी हुआ क्योंकि इस समय उसका सबसे अच्छा सेनापति ओलूसेग्बे उसके पास नहीं था और उसको हार जाने का डर था।

ओलूसेग्बे की सब्जी वाली पत्नी कुछ देर तक तो लड़ाई देखती रही पर फिर वह घर के अन्दर गयी और उसने ओलूसेग्बे की बॉसुरी बजायी और उसकी साथिन पत्नियों ने गाया —

ओलूसेग्बे ओलूसेग्बे, ओ मेरे पति सबसे अच्छे सेनापति
तुम्हें वह फल याद है जो तुम्हारी पत्नी बना
तुम्हें वह रंगीन चिड़िया याद है जो पेड़ पर गा रही थी
वह तितली याद है जो फल के पास थी

वह हिरन याद है जो तुम्हारे रास्ते में आ गया था
वह सब्जी याद है जो नदी के किनारे उगी थी
और झरने का वह पानी, ये सब तुम्हारी पत्नियॉ हैं
लड़ाई गॉव की दीवार के पास है और तुम दूर हो बहुत दूर

सब्जी वाली पत्नी जब यह गा रही थी और बॉसुरी बजा रही थी तो अचानक उसे ओलूसेग्बे के जू जू की याद आ गयी। उसने बॉसुरी तो फेंक दी और घर के दूसरे कोने की तरफ भागी।

जा कर तुरन्त उसने झाड़ू जादू के पानी में डुबो दी और वह झाड़ू ले कर लड़ते हुए सेनापति के पास पहुॅची और वह झाड़ू उसको दे दी। तुरन्त ही दुश्मन हारने लगा और अपने गॉव भाग गया।

ओलूसेग्बे ने जब इस अचानक हमले के बारे में सुना तो वह भी जल्दी जल्दी घर आया और उसे यह जान कर खुशी हुई कि दुश्मन को हरा दिया गया है। और यह जान कर उसे और भी ज़्यादा खुशी हुई कि उसकी बड़ी पत्नी की समझदारी से यह सब हुआ।

कुछ दिनों तक फिर गॉव में शान्ति रही तो ओलूसेग्बे ने फिर बाहर जाने की सोची। राजा ने उसको फिर जाने की इजाज़त दे दी।

पड़ोसी कबीले वाले तो इसी मौके की तलाश में थे। उन्होंने सोचा कि पिछली बार शायद हम बदकिस्मती से हार गये थे पर इस बार हम शायद जीत जायें।

यही सोच कर उन्होंने फिर से अचानक हमला कर दिया। अब की बार सब्जी वाली पत्नी तैयार थी। उसने तुरन्त झाड़ू जादू के पानी में डुबोयी और लड़ते हुए सेनापति को दे आयी।

इस बार भी दुश्मन का बहुत नुकसान हुआ और उसने फिर कभी ओलूसेग्बे के गॉव पर हमला करने की सोचा भी नहीं।

कुछ दिनों में ओलूसेग्बे घर वापस आ गया। पर उसके आने के कुछ दिनों बाद ही राजा मर गया तो दूसरा राजा चुना गया। वहॉ यह रिवाज था कि सेनापति को नये राजा से मिलने जाना होता था और उससे यह पूछना होता था कि वह किस देश पर चढ़ाई करना चाहता था।

इसी रिवाज के अनुसार ओलूसेग्बे भी नये राजा से मिलने गया और उसने उससे पूछा कि वह किस देश पर चढ़ाई करना चाहता था तो सबको यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह मेंढकों के देश पर चढ़ाई करना चाहता था।

राजा का हुक्म था सो मानना तो था ही। असल में हुआ यों कि राजा जब बच्चा था तो एक मेंढक ने उसकी ऑख में थूक दिया था सो आज जब वह राजा बन गया था तो वह उनसे अपने उस अपमान का बदला लेना चाहता था।

सो ओलूसेग्बे ने अपनी सेना इकट्ठी की और अपने कैप्टेन लोगों की एक मीटिंग बुलायी। जब मीटिंग चल रही थी तो ओलूसेग्बे ने एक चींटी के भागने की आवाज सुनी पर वह कुछ समझ न सका कि वह चींटी क्यों भागी और कहाँ जाने के लिये भागी।

असल में वह चींटी मेंढकों को राजा के हमले की खबर देने भागी थी। जब चींटी ने जा कर उनको राजा के हमले के बारे में बताया तो सारे मेंढक डर गये।

एक अक्लमन्द मेंढक ने कहा — "अब जब हमको पहले से मालूम चल ही गया है तो हमको ठीक से काम करना चाहिये। मेरी सलाह यह है कि हमको अक्लमन्द कछुए के पास जाना चाहिये और उससे सहायता माँगनी चाहिये। अगर वह हमारी सहायता नहीं भी करेगा तो भी कम से कम हमें कोई तरकीब तो बतायेगा ही।"

सो एक मेंढक कूदता फलाँगता कछुए के पास गया और उसे सारी बातें बतायीं।

कछुए ने सब कुछ ध्यान से सुना और बोला — "मुझे अफसोस है कि मैं इस बारे में कुछ नहीं कर सकता। क्योंकि अगर तुमको ओलूसेग्बे से लड़ना है तो तुमको हारना ही है क्योंकि उसके पास एक ऐसा जू जू है जिसकी वजह से उसे कोई नहीं हरा सकता।"

मेंढक बोला — "यह जू जू क्या है?"

कछुआ बोला — "पिछली लड़ाई के समय में मैं सेनापति के घर के पास ही रहता था वहीं मैंने उसकी बड़ी पत्नी को उसकी दूसरी पत्नियों से उस जू जू की बात करते और गॉव को बचाने की बात सुनी थी।

वह घर के एक कोने में गयी, एक पुरानी झाड़ू उठायी और उसको एक अजीब से पानी में डुबोया और फिर उस झाड़ू को ले कर वह सेनापति के पास भाग गयी और बस फिर वे वह लड़ाई जीत गये।"

मेंढक ने पूछा — "आप क्या सोचते हैं कि यह झाड़ू और वह पानी ही क्या ओलूसेग्बे के जू जू हैं?"

कछुआ बोला — "मुझे तो पूरा यकीन है कि वे ही उसके जू जू हैं। तुम लोग एक काम कर सकते हो। तुम उसकी पत्नी को खुश कर के किसी तरह उसकी वह झाड़ू और पानी का बर्तन ले लो तो फिर देखते हैं कि ओलूसेग्बे की सेना तुमको कैसे हराती है।"

मेंढक कूदता फलॉगता वापस अपने देश में पहुॅचा और कछुए से हुई सब बातें सब मेंढकों को जल्दी जल्दी सुना डालीं।

यह सब सुन कर मेंढकों ने निश्चय किया कि सब मेंढकों से एक एक कौड़ी[55] इकट्ठी की जाये और ओलूसेग्बे की बड़ी पत्नी को भेंट की जायें।

[55] Cowrie is a shell of a sea animal. In olden days it was used as money. It seems in Nigeria also it was used as money in those times. See its picture aove.

जब कौड़ियॉ इकट्ठी हो गयीं तो मेंढकों के सरदार ने उन कौड़ियों में से कुछ कौड़ियों से एक घड़ा शहद खरीदा, कुछ कौड़ियॉ अपने पास रखीं और कुछ कौड़ियॉ कछुए के लिये रखीं। फिर वह ओलूसेग्बे के घर चल दिया।

कूदता फॉदता वह उसकी बड़ी पत्नी के पास पहुॅचा और उसको आदर से नमस्कार किया और बोला कि वह कितनी सुन्दर थी और किस तरह इतनी सुन्दर पत्नी के लिये वह ओलूसेग्बे से जलता था।

ओलूसेग्बे की बड़ी पत्नी यह सुन कर बहुत खुश हुई।

इसके बाद मेंढक ने उसको शहद का घड़ा भेंट किया। ओलूसेग्बे की बड़ी पत्नी को मेंढकों के राजा के इरादों के बारे में कुछ भी पता नहीं था इसलिये उसको शक करने की कोई गुंजायश ही नहीं थी।

कुछ देर बातें करने के बाद वह बोला कि क्या वह उस कोने में रखा बर्तन और झाड़ू कुछ समय के लिये उससे उधार ले सकता था। उसने उससे यह भी कहा कि वह उनको अगले दिन वापस दे जायेगा।

पहले तो वह तैयार नहीं हुई परन्तु कौड़ियों के कई थैले देख कर वह राजी हो गयी। उसने मेंढक से कहा कि ओलूसेग्बे के पता चलने से पहले पहले ही वह उनको वापस कर जाये तो अच्छा है।

मेंढक ने कहा "ठीक है। मैं ऐसा ही करूॅगा।"

और कछुए की सहायता से वह बर्तन और झाड़ू ले जा कर जंगल में छिपा दी।

अगली सुबह जब ओलूसेग्बे लड़ाई पर जाने की तैयारी कर रहा था तो हजारों की तादाद में मेढकों ने गॉव पर हमला कर दिया। वे समुद्र की तरह बढ़े चले आ रहे थे लोगों को मारते हुए, राजा को भी मारते हुए, तोड़ फोड़ करते हुए।

ओलूसेग्बे अपने जू जू की तरफ दौड़ा तो उसे वहॉ न देख कर उसने अपनी बड़ी पत्नी से पूछा — "मेरा जू जू कहॉ है? कहॉ गया मेरा जू जू यहॉ से?"

दुखी होते हुए उसकी पत्नी ने अपनी बेवकूफी की कहानी उसको सुना दी कि किस तरह मेंढक आया, उसको कौड़ियॉ और शहद दिया और यह जू जू ले गया।

ओलूसेग्बे तो गुस्से से पागल सा हो गया पर इस समय उसके पास अपनी पत्नी से लड़ने का समय नहीं था। मेंढक बढ़े चले आ रहे थे। वह उनसे लड़ने के लिये गया भी पर हार गया।

यह पहली बार था जो वह अपने दुश्मन से हारा। उस रात सारे मेंढक गॉव में आ गये और गॉव का सब कुछ अपने कब्जे में कर लिया।

मेंढक जो ओलूसेग्बे के घर गया था बोला — "इस जीत का फल हैं ओलूसेग्बे की छहों सुन्दर पत्नियॉ ले लेना। क्योंकि अब वह

उनका क्या करेगा। अब मैं जा कर अपनी सब्जी वाली पत्नी को धन्यवाद दूँगा और अपना घर देखूँगा।"

जब वह अपने घर पहुँचा तो उसने देखा कि ओलूसेग्बे की छहों की छहों पत्नियाँ रो पीट रहीं हैं।

वह बोला — "यह क्या हो रहा है यहाँ? क्या अपने नये पति का इस तरह स्वागत किया जाता है? जाओ और जा कर मेरे लिये बढ़िया खाना पकाओ। मैं बहुत थक गया हूँ खाना खा कर सोना चाहता हूँ।"

छहों पत्नियाँ एक आवाज में बोलीं — "हमारा पति ओलूसेग्बे कहाँ है?"

मेंढक बोला — "तुम्हारा पति मर गया, भूल जाओ उसको। अब मैं तुम्हारा पति हूँ अब तुमको मेरा कहा मानना पड़ेगा। जाओ मेरे लिये खाना ले कर आओ। हाँ और यह रोना धोना बन्द करो। मुझे यह शोर बिल्कुल पसन्द नहीं है।"

मेंढक की शक्ल और उसके ये शब्द उन पर जहर का काम कर रहे थे। पर अब वे पत्नियाँ हँसी और सबने गाना शुरू कर दिया —

ओलूसेग्बे ओ ओलूसेग्बे तुम चले गये, सबसे सुन्दर तुम्हारी छह पत्नियाँ
सब्जी जो नदी किनारे उगी, रंगीन चिड़िया जो पेड़ पर गाती थी
ठंडे झरने का पानी, फल जो तुम्हारी पत्नी बनी
तितली और हिरन जो तुम्हारी पत्नी बने
अब हम सब अपने अपने घर जाते हैं, ओलूसेग्बे, विदा।

यह गाना खत्म होते ही उसकी छहों पत्नियाँ गायब हो गयीं और मेंढक उस घर में अकेला रह गया। वह बहुत देर तक बिना हिले डुले वहाँ चुपचाप पड़ा रहा। फिर बोला — "आश्चर्य, यह तो बहुत ही अजीब बात है।"

पर ओलूसेग्बे तो अभी मरा नहीं था। जब वह मेंढकों की सेना से हार चुका तो उसने अपने एक कैप्टेन को बुलाया और कहा कि वह उसको अपनी तलवार से मार दे।

कैप्टेन ने उसको ढाँढस बँधाया और कहा कि अभी सब कुछ नहीं लुटा है। अगर ओलूसेग्बे किसी तरह से यह मालूम करने में कामयाब हो जाये कि वह जू जू उसके घर से कौन ले गया था तो वे लोग उसको शायद वापस भी ले सकें और उस मेंढक को उसकी किये की सजा भी दे सकें।

यह बात ओलूसेग्बे की कुछ समझ में आयी और वह यह पता करने चल दिया कि आखिर हुआ क्या था। ओलूसेग्बे जंगल में काफी समय तक यों ही बेकार सा घूमता रहा।

एक दिन उसको एक चीता मिल गया। चीते ने पूछा — "क्या तुम्हीं बहादुर सेनापति ओलूसेग्बे नहीं हो?"

ओलूसेग्बे बोला — "हाँ भाई मैं ही वह बदकिस्मत ओलूसेग्बे हूँ बल्कि कहना चाहिये कि था।"

चीता आगे बोला — "जानवरों का कहना है कि तुम अपने हराने वाले को ढूँढने निकले हो। अगर तुम मेरी बात ध्यान से सुनो ओलूसेग्बे, तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।

जब तुम अपने कैप्टेन लोगों के साथ अपनी मीटिंग कर रहे थे तो एक चींटी ने सुन लिया था कि तुम लोग मेढकों के देश पर हमला करने वाले हो और वह चींटी वह बात सब मेंढकों को बता आयी थी।

उनमें से एक मेंढक ने जो अभी भी तुम्हारे घर में बैठा है सलाह दी कि इस बारे में कछुए से सलाह ली जाये। और यह कछुआ ही तुम्हारी हार की वजह है। क्योंकि उसी ने उस मेंढक को यह सलाह दी थी कि तुम्हारी बड़ी पत्नी को शहद और कौड़ियॉ दे कर उससे वह जू जू ले लिया जाये।

और ऐसा हो गया। वह तुम्हारी पत्नी को शहद और कौड़ियॉ दे कर आया और उससे तुम्हारा जू जू ले आया। और अब कछुआ जानता है कि मेंढक ने वह जू जू कहॉ छिपाया है।

अगर तुम उस कछुए को पकड़ लो तो मुझे विश्वास है कि तुम अपनी खोयी हुई ताकत को फिर से पा सकोगे।"

ओलूसेग्बे बोला — "सत्यानाश हो उस कछुए का और उसके सारे बच्चों का। भगवान करे वह सब जानवरों में कमजोर समझा जाये। मैं उसे ढूँढता हूँ और उसे मारता हूँ।"

चीता बोल — "नहीं, यह काम तुम नहीं मैं करूँगा क्योंकि वह मेरा दुश्मन है।"

ओलूसेग्बे ने पूछा — "पर तुम कछुए से इतनी नफरत क्यों करते हो? उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

चीता बोला — "कुछ दिन पहले की बात है कि हम दोनों में झगड़ा हो गया था और मैं जानता हूँ कि वह बहुत ही चालाक जानवर है।

एक दिन मेरे घर एक अलाबे[56] आया। वह मेरे बच्चों के चेहरों पर निशान बनाना चाहता था। मैं तैयार हो गया। सारी तैयारियाँ हो गयीं तभी उसने कहा कि वह बड़ों के सामने यह काम नहीं कर सकता था सो उसने मुझे वहाँ से जाने के लिये कहा।

मैं बाहर चला गया और इस तरह वह मेरे बच्चों के साथ अकेला रह गया। काफी देर के बाद भी जब वह बाहर न निकला तो मैं परेशान हो गया और कमरे के अन्दर गया कि देखूँ तो अन्दर क्या हो रहा है।

पर वहाँ अलाबे तो था नहीं और मेरे सारे बच्चे मरे पड़े थे। मैंने उस अलाबे को ढूँढने की कोशिश भी की पर वह मुझे मिला ही नहीं।

[56] Traditional doctor who makes tribal marks on peoples' faces according to their tribes. See a picture of those marks above.

बाद में मुझे पता चला कि कछुआ और अलाबे दोनों एक ही थे। अब जब तक उससे अपने बच्चों की हत्या का बदला नहीं ले लूँगा मैं चैन से नहीं बैठूँगा।"

ओलूसेग्बे ने चीते को धन्यवाद दिया और इधर उधर घूमता रहा। उधर चीते ने कछुए का पता लगा लिया कि वह एक नाव के पास वाले घर में है। बस फिर क्या था वह उधर ही चल दिया।

उधर कछुए को भी इस बात का पता चल गया कि चीता उस की तरफ आ रहा है। उस नाव के दो नाविक थे एक अन्धा और एक बहरा।

उसने नाविक से कहा कि वह उसको नाव में बिठा कर दूर ले चले और कछुआ अपने छोटे छोटे पैरों से जितनी जल्दी हो सका उतनी जल्दी नाव में बैठ गया।

वह अन्धे नाविक को चिल्ला कर बोला कि वह उसको दूर ले चले और बहरे नाविक को उसने हाथ से इशारा किया कि वह उस को वहॉ से दूर ले चले। दोनों नाव वाले चल दिये।

इतने में चीता आ गया। कछुए को नदी में नीचे की तरफ जाता देख कर उसने पहले तो उसको पुकारा पर उसके वापस न आने पर उसने भी एक नाव ली और वह भी उनके पीछे पीछे चल दिया।

अन्धे नाविक ने कछुए को कहा भी कि कोई उसको पीछे से पुकार रहा था परन्तु बहरे नाविक ने कहा "मैंने तो नहीं सुना।" और वे आगे चल दिये।

चीते की नाव जल्दी जल्दी चल रही थी यह देख कर कछुआ अपनी नाव किनारे की तरफ ले चला। वह किसी झाड़ी में छिप जाना चाहता था पर बदकिस्मती से कछुए की नाव एक पेड़ से टकरा गयी।

बस फिर क्या था तुरन्त ही चीता उसके ऊपर कूद पड़ा और उसने उसकी एक टॉग पकड़ ली।

कछुआ हॅसा और बोला — "चीते तुमने मेरी टॉग नहीं बल्कि पेड़ की जड़ पकड़ रखी है। मैं तो सुरक्षित हूॅ।"

इस पर उसने कछुए की टॉग छोड़ कर पेड़ की जड़ पकड़ ली। तो कछुआ बोला "मैं मरा, मैं मरा।"

इस तरह काफी देर हो गयी। यह खेल और देर तक चलता रहता अगर उसी समय एक मछली चीते की सहायता के लिये न आ जाती।

आखिरकार कछुआ पकड़ा गया, उसको किनारे लाया गया और ओलूसेग्बे के सामने पेश किया गया। कछुआ ओलूसेग्बे से अपनी ज़िन्दगी की भीख मॉगने लगा।

ओलूसेग्बे ने पूछा — "मेरा जू जू कहॉ है?"

कछुए ने बता दिया कि उसने उसका जू जू कहाँ छिपाया था। ओलूसेग्बे ने उसे तुरन्त ही ढूँढ लिया। फिर उसने देवताओं की प्रार्थना की और उनसे मेंढकों को अपने राज्य से निकालने के लिये सहायता माँगी।

देवताओं ने उसकी सहायता की। उन्होंने बहुत सारे साँप भेजे और मेंढकों को खाने वाली चिड़ियें भेजीं।

कुछ ही दिनों में गाँव में एक भी मेंढक नहीं रहा। इस तरह मेंढकों का अन्त हुआ। उनके साथ ही साँप और चिड़ियें भी गायब हो गयीं।

इसके बाद योरुबा लोग फिर से उसी जंगल से घर लौट रहे थे। इस बार उनके साथ उनका नया राजा ओलूसेग्बे था। उनके पीछे चीता था और चीते के पीछे बन्दी बना कछुआ था पानी का घड़ा और झाड़ू लिये हुए।

एक बार फिर ओलूसेग्बे अकेला ही आगे निकल गया था तो उसके पीछे से उसके दो सिपाही उसके बारे में बात कर रहे थे।

एक बोला — "क्या ही अच्छा हो कि ओलूसेग्बे को अपनी पुरानी छहों पत्नियाँ वापस मिल जायें। वे बहुत ही सुन्दर थीं।"

दूसरा बोला — "वैसे वह बहुत ही अजीब आदमी है।"

पहला बोला — "हो सकता है कि उसका जू जू ही यह काम कर दे।"

दूसरा बोला "हो सकता है।"

ओलूसेग्बे भी यही सोच रहा था। उसने अपनी पत्नियों को बहुत ढूँढा परन्तु वे उसे अभी तक नहीं मिली थीं।

चलते चलते नदी आयी तो वह पहले की तरह सबसे पहले नदी पार कर गया और दूसरी तरफ पहुँच कर दूसरों को नदी पार करते देखता रहा।

जब वह दूसरों को नदी पार करते देख रहा था तो उसकी नजर पास में उगी हुई एक सब्जी पर पड़ी। उसने उसे पत्ते से पकड़ कर कहा — "कितनी सुन्दर सब्जी है अगर यह किसी की पत्नी बन जाती तो कितना अच्छा रहता।"

उसके इतना कहते ही वह सब्जी उसके हाथ से फिसल कर नीचे गिर गयी और उसकी पहली पत्नी में बदल गयी। उसने ओलूसेग्बे से अपनी बेवकूफी की माफी माँगी।

इस तरह गाँव पहुँचने से पहले पहले उसने अपनी छहों पत्नियों को वापस पा लिया।

गाँव वाले उन सबको देख कर बहुत खुश हुए। ओलूसेग्बे बहुत ही अच्छा राजा साबित हुआ। कछुए को चीते को दे दिया गया। चीते ने उसको एक पहाड़ी पर ले जा कर कुचल कर नीचे फेंक दिया और इस तरह कछुआ मर गया।

14 जुड़वॉ बच्चे[57]

एक बार योरुबालैंड में एक पति पत्नी रहते थे। उनके बहुत सारे बच्चे हुए पर दुख की बात यह थी कि सभी मर गये।

एक दिन पत्नी ने पति से प्रार्थना की कि वह इफा पुजारी[58] के पास जाये और पता लगाये कि उनको अपने बच्चे ज़िन्दा रखने के लिये क्या कीमत देनी पड़ेगी।

सो पति इफा पुजारी के पास गया और जा कर उसको अपना दुखड़ा सुनाया। इस पर पुजारी बोला — "तुम लोगों को अपनी सारी चीज़ें जो भी तुम्हारे पास हैं सब छोड़नी पड़ेंगीं। अगर तुम लोग ऐसा कर सकोगे तो देवता तुमको दो बेटे देंगे।"

पति घर लौटा और इस भारी त्याग के बारे में बताया। पत्नी बोली — "फिर हमको ऐसा ही करना चाहिये।"

और उन दोनों ने अपने पास की सारी चीज़ें छोड़ दीं।

हालॉकि यह नुकसान उनके लिये काफी था परन्तु अपने दोस्तों और रिश्तेदारों की सहायता से उन्होंने अपना घर फिर से बसाना शुरू कर दिया।

उनका इफा में यह पक्का विश्वास देख कर लोगों ने भी उन की खुले मन से सहायता की। किसी ने उनको कुत्ता दिया, किसी ने

[57] The Twins – a folktale from Nigeria

[58] Ifa Priest – their traditional religious priest

उनको बिल्ली दी। इस तरह सबने उनकी किसी न किसी तरह उनकी सहायता की।

एक दिन जब पति मछली पकड़ने गया हुआ था तो उसने एक बहुत बड़ी और अजीब सी शक्ल वाली मछली पकड़ी। किनारे पर ला कर जब उसने उस मछली को काटा तो उसे मछली के अन्दर दो चाकू और दो तलवारें मिलीं।

उसको मछली के अन्दर चाकू और तलवार देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह मछली, चाकू और तलवार सभी कुछ अपनी पत्नी को दिखाने के लिये घर ले आया। उसने सोचा कि यह अच्छा शकुन था।

पर घर आ कर उसको और भी ज़्यादा आश्चर्य हुआ जब उसको पता चला कि उसके पीछे उसके घर में दो बेटे पैदा हो चुके हैं। उन्होंने उनका नाम तायवो और केहिन्डे[59] रख दिया।

उसी दिन उनकी बिल्ली के भी दो बच्चे हुए, कुत्ते के भी दो बच्चे हुए और चिड़िया ने भी दो अंडे दिये।

उसी दिन उस आदमी का भाई जंगल में शिकार के लिये गया क्योंकि उन दिनों वहाँ कुछ ऐसा रिवाज था कि उस स्त्री को भेंट दी जाती थी जिसके हाल ही में बच्चा हुआ हो। तो वह अपनी भाभी के लिये भेंट लेने गया था।

[59] Taiwo and Kehinde. Taiwo means who comes first and Kehinde means who comes after.

वह अभी बहुत दूर नहीं जा पाया था कि उसने एक चीता मारा जिसके भी तभी दो बच्चे हुए थे। भाई ने मन में सोचा कि यह तो बहुत ही अच्छा शकुन है सो उसने वह मरा हुआ चीता और उसके दोनों बच्चे ला कर अपनी भाभी को भेंट कर दिये।

इस तरह तायवो और केहिन्डे, कुत्ते के दो बच्चे, बिल्ली के दो बच्चे, चिड़िया के दो अंडे, और चीते के दो बच्चे सभी एक साथ बड़े होने लगे। तायवो और केहिन्डे की शक्ल सूरत एक दूसरे से काफी मिलती जुलती थी और वे आपस में हमेशा प्रेम से रहते थे।

जब वे बड़े हो गये तो उन्होंने अपने माता पिता से कहा कि अब समय आ गया था जब उनको अपना रास्ता अपने आप बनाना था। माता पिता उनके छोड़ कर जाने की बात सुन कर बहुत दुखी हुए। वे उनकी कोई बात नहीं सुनना चाहते थे।

पिता ने उनको बहुत समझाया कि वे वहीं रह कर उसके खेत पर काम कर के उसकी सहायता कर सकते थे। उनको बाहर जाने की जरूरत ही क्या थी पर वे नहीं माने सो बाद में माता पिता को बच्चों की इच्छा के सामने झुकना ही पड़ा।

पिता दुखी आवाज में बोला — "मेरे बच्चो, मेरे पास तुम लोगों को देने के लिये और तो कुछ नहीं है, हॉ तुम्हारे जन्म दिन के दिन जो जो जुड़वॉ बच्चे पैदा हुए थे वे मैं तुम दोनों में बॉट देना चाहता हूॅ।"

सो उसने एक एक चाकू, एक एक तलवार, एक एक कुत्ता, एक एक बिल्ली, एक एक चिड़ा और एक एक चीता दोनों को दे दिये।

दोनों अपने दूसरे जुड़वाओं के साथ अपने अपने माता पिताओं को विदा कह कर चल दिये। वे सब बहुत दिनों तक चलते रहे। इस बीच उन्होंने कई बड़े शहरों को पार किया।

आखीर में वे एक ऐसी जगह आ गये जहॉ से सड़क दो तरफ जाती थी और वहीं कपास का एक पेड़ था। यहॉ आ कर दोनों ने अलग होने का फैसला किया। तायवो ने बॉयी तरफ की सड़क ली और केहिन्डे ने दॉयी तरफ की।

जब वे एक दूसरे को विदा कहने लगे तो तायवो बोला — "आओ भाई, बिछड़ने से पहले हम लोग एक वायदा करें कि हम लोग ठीक पॉच साल बाद यहीं मिलेंगे।"

केहिन्डे बोला — "ठीक है भाई, हम लोग आज से ठीक पॉच साल बाद यहीं मिलेंगे पर बिछड़ने से पहले हम लोग अपने अपने चाकू इस कपास के पेड़ में अपनी अपनी जाने की दिशाओं में गाड़ देते हैं। और फिर जो भी पहले आयेगा वह दूसरे के चाकू की तरफ देखेगा।

अगर दूसरा चाकू जंग लगा या गन्दा हुआ तो उसको समझना चाहिये कि दूसरा भाई या तो मर गया है या फिर बहुत बीमार है और या फिर बड़ी कठिनाई में है।"

उन्होंने ऐसा ही किया और दोनों अपने अपने रास्तों पर चल दिये।

केहिन्डे जो दॉयी तरफ को गया था अभी कुछ ही दूर चला था कि उसको एक बड़ा शहर मिला। उसको वह शहर बहुत अच्छा लगा सो वह वहीं रुक गया। इस शहर में उसने डाक्टरी पढ़ी और जड़ी बूटियों की दवाओं का अच्छा डाक्टर बन गया।

उधर तायवो काफी दिनों तक चलता रहा और आखीर में समुद्र के किनारे आ पहुॅचा। वहॉ से वह समुद्र के किनारे वाली सड़क पर चल दिया और चलते चलते वह भी एक बड़े शहर में आ पहुॅचा।

उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वहॉ की सब स्त्रियों ने अपने बाल खोल रखे थे। उस समय स्त्रियों के बाल खुले घूमना यह बताता था कि वे किसी बड़े भारी दुख में थीं सो उसने उन स्त्रियों से पूछा कि उनको क्या दुख था।

पता चला — "क्या करें, समुद्र के देवता ओलोकुन[60] का धरती से कुछ झगड़ा हो गया सो जब भी उसको ज़्यादा गुस्सा आता है तो वह धरती को पानी से ढक देता है।

हम लोगों को हर साल अपने शहर की सबसे सुन्दर लड़की की बलि दे कर उसे इस काम को करने से रोकना पड़ता है। अब वह समय आ गया है और इस साल राजा की बेटी की बारी है। यही वजह है हमारे इस भारी दुख की।"

[60] Olokun – the god of the Sea

तायवो ने पूछा — "इस बलि का समय कब है?"

एक स्त्री बोली — "आज शाम को जब सूरज डूबेगा।"

तायवो ने उससे तो और कुछ नहीं पूछा पर बाद में बलि की जगह मालूम की तो पता चला कि वह जगह समुद्र के किनारे कहीं अलग थलग को थी।

उस शाम को वह उस जगह पर पहुॅच गया और पेड़ों में छिप कर समय का इन्तजार करने लगा। शाम ढले राजा की बेटी को लाया गया और उसको एक खम्भे से बॉध दिया गया।

रस्में पूरी करने के बाद सभी लोग उस लड़की को वहॉ अकेला छोड़ कर चले गये। सबके जाने के बाद तायवो वहॉ गया और उसने लड़की को खोलना शुरू कर दिया।

लड़की घबरा गयी और डर गयी।

वह बोली — "तुम यहॉ से चले जाओ नहीं तो समुद्र मेरे साथ साथ तुमको भी डुबो देगा। अब तुम कुछ नहीं कर सकते। अगर अब तुमने इस काम में दखल दिया तो वह तुमको मार डालेगा।"

पर तायवो उसकी इस बात पर केवल हॅस कर रह गया।

जब तायवो उसको खोल रहा था तभी उसने समुद्र के पानी में बड़ी तेज़ आवाज सुनी और उस आवाज के साथ निकला एक छह सिर वाला राक्षस।

वह अपने छहों मुॅहों से ज़ोर से चिल्लाया — "कहॉ है मेरा इस साल का शिकार?"

तायवो शान्ति से बोला — "यह रहा आपका इस साल का शिकार।"

बस फिर क्या था दोनों में खूब लड़ाई हुई। यह लड़ाई दो दिन और दो रात तक चली।

तायवो इस लड़ाई में अकेला नहीं था। जब तायवो राक्षस पर तलवार से वार कर रहा था तो चीता भी उस राक्षस पर टूट पड़ा। बिल्ले ने उसकी ऑखें निकाल लीं और कुत्ते ने राक्षस की टॉगों में काट लिया। चिड़े ने चोंच मार मार कर उसको घायल कर दिया।

पर वह राक्षस भी बहुत ताकतवर था। अन्त में वह जीत गया होता अगर तायवो ने बिजली के देवता को अपनी सहायता के लिये न बुला लिया होता।

उसी समय एक तूफान आया। बिजली राक्षस के ऊपर गिर पड़ी और वह मर गया। तायवो ने अपनी तलवार से उस राक्षस के छहों सिर काट डाले। उसने उसके दो सिरों से चार कान काटे और उनको अपने बक्से में रख लिया।

राजा की लड़की ने जो यह सब कुछ अपनी ऑखों से देख रही थी तायवो को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उससे प्रार्थना की वह उसके साथ राजा के पास चले, उसे सारी कहानी बताये और यह बताये कि किस तरह उसने सारे गॉव पर से यह शाप हमेशा के लिये खत्म कर दिया था।

परन्तु तायवो यह सुन कर केवल मुस्कुरा दिया और बोला कि उसको अपने सफर पर बहुत दूर जाना है इस समय वह उसके साथ नहीं जा सकता।

इस पर राजा की लड़की ने अपने गले से एक हार निकाला और उसके दो टुकड़े किये। एक टुकड़ा उसने उसके कुत्ते के गले में बॉध दिया और दूसरा उसके बिल्ले के गले में और वह अपने घर चली गयी।

जब राजा की लड़की अपने पिता के घर वापस जा रही थी तो रास्ते में उसको अपने पिता की सेना का सेनापति मिल गया। इस आदमी ने राजा से वायदा किया था कि वह राजकुमारी को बचाने के लिये समुद्री राक्षस से लड़ेगा परन्तु इस बलि के कुछ देर पहले ही डर के मारे बहाना कर के भाग गया था।

राजकुमारी को ज़िन्दा देख कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने उससे उसके ज़िन्दा बच जाने की सारी कहानी पूछी।

राजकुमारी उसको समुद्र के किनारे ले गयी, उसको मरा हुआ राक्षस दिखाया, उसके कटे हुए छहों सिर दिखाये और सारी कहानी सुना दी कि किस तरह तायवो और उसके साथियों ने बिजली के देवता की सहायता से राक्षस को मार डाला था।

सेनापति ने वहॉ तो कुछ नहीं कहा। वह राजकुमारी को ले कर घर वापस आ गया परन्तु राजा को तायवो वाली कहानी उसने अपने नाम से सुना दी कि किस तरह उसने राक्षस को मार डाला था और

सबूत के तौर पर अपने नौकरों को समुद्र के किनारे से राक्षस के छहों सिर लाने भेज दिया।

राजा अपनी बेटी को ज़िन्दा देख कर बहुत ही खुश हुआ और साथ में यह जान कर भी कि अब राक्षस को बलि चढ़ाने की कभी जरूरत नहीं पड़ेगी।

उसने तुरन्त ही अपनी बेटी की शादी उस सेनापति से करने की घोषणा कर दी। और क्योंकि उसके कोई बेटा नहीं था इसलिये अपने मरने के बाद सेनापति को अपने राज्य का राजा भी घोषित कर दिया।

राजकुमारी ने अपने पिता को बहुत समझाने की कोशिश की कि राक्षस को सेनापति ने नहीं बल्कि तायवो ने मारा था परन्तु राजा ने सोचा कि शायद उसकी बेटी को डर के मारे सेनापति का चेहरा साफ दिखायी नहीं दिया इसलिये वह ऐसा कह रही है।

शादी का दिन भी आ गया। चारों तरफ खुशियॉ मनायीं जा रहीं थीं। सभी लोग बहुत खुश थे पर राजकुमारी बहुत उदास और दुखी थी।

राजकुमारी की शादी के पहले दिन तायवो किसी वजह से उसी गॉव में लौटा। वहॉ वह एक जगह आ कर ठहर गया। वहॉ आ कर उसका कुत्ता बाहर घूमने निकल गया।

राजकुमारी की नौकरानी उधर से गुजर रही थी कि उसने कुत्ते की गर्दन में पड़ा राजकुमारी का हार पहचान लिया। वह तुरन्त ही

घर दौड़ी गयी और जो कुछ उसने देखा था जा कर राजकुमारी को बता दिया।

राजकुमारी यह सुन कर बहुत खुश हुई और उसने अपनी नौकरानी को उस कुत्ते के मालिक का पता लगाने के लिये कहा।

नौकरानी जब उस कुत्ते को ढूँढने गयी तो उसको कुत्ता तो दिखायी नहीं दिया पर इस बार उसको तायवो का बिल्ला दिखायी दे गया। उसने बिल्ले के गले में पड़ा राजकुमारी के हार का दूसरा हिस्सा भी पहचान लिया।

फिर उसने तायवो के रहने की जगह ढूँढ ली और आ कर राजकुमारी को बताया। राजकुमारी दौड़ी दौड़ी अपने पिता के पास गयी और उसको सारी कहानी फिर से बतायी।

इस बार वह यह बताना नहीं भूली कि किस तरह उसने अपने हार के दो टुकड़े कर के तायवो के कुत्ते और बिल्ले के गले में डाल दिये थे और तायवो उन दिनों उसी गॉव में था।

राजा ने सोचा कि शादी से पहले यह मामला तय हो ही जाना चाहिये कि राक्षस को किसने मारा सो उसने अपने नौकरों को सेनापति, तायवो और उसके जानवरों को बुला लाने के लिये भेजा। जब सब वहॉ आ गये तो राजा ने उन दोनों को अपनी अपनी बात कहने के लिये कहा।

पहले सेनापति बोला और अपनी कहानी की सच्चाई साबित करने के लिये उसने राक्षस के छहों सिर राजा को पेश कर दिये।

फिर राजा ने तायवो को अपनी बात कहने के लिये कहा तो तायवो ने भी अपनी कहानी सुनायी और राजा से उन छह सिरों को फिर से ध्यान से देखने को कहा।

लोगों ने उनको ध्यान से देखा तो तुरन्त ही उनको पता चल गया कि उन छह सिरों में से दो सिरों के कान नहीं थे। राजा ने सेनापति से पूछा कि ऐसा क्यों है तो सेनापति कुछ घबरा सा गया।

इस सवाल का तो उसके पास कोई जवाब नहीं था क्योंकि राक्षस को उसने तो मारा नहीं था।

पर फिर सँभल कर बोला — "जब राक्षस समुद्र से निकला तो वह ऐसा ही था पर इस बात से क्या फर्क पड़ता है। मैंने तो आपको सबूत के तौर पर उसके छहों सिर पेश कर दिये हैं। आपको इससे ज़्यादा और क्या सबूत चाहिये?"

अब तायवो ने अपना बक्सा खोला और उसमें से चार कान निकाले और बोला — "आपको यह सबूत चाहिये न। यह रहा वह सबूत। अगर आप लोग ध्यान से देखें तो ये चारों कान इन दो सिरों के ही हैं।"

फिर उसने अपने कुत्ते और बिल्ले के गलों से हार के टुकड़े निकाले, उनको जोड़ा और वह हार उसने राजकुमारी को दे दिया जो उसने तुरन्त ही अपने गले में पहन लिया ताकि लोग पहचान सकें कि वह हार उसी का है लेकिन उसने अपना वह हार तोड़ कर फिर से कुत्ते और बिल्ले के गलों में डाल दिया।

राजा और उसके सलाहकारों को विश्वास हो गया कि उनका सेनापति झूठ बोल रहा था और तायवो सच। सेनापति को उसके झूठ की सजा मिली। उसको मौत के घाट उतार दिया गया।

शादी की रस्में चलती रहीं और राजकुमारी की शादी तायवो से हो गयी। दोनों वहीं महल में काफी दिन सुख से रहे। राजकुमारी ने अपना हार फिर से तोड़ कर तायवो के कुत्ते और बिल्ले के गले में पहना दिया था।

दो साल बाद राजा मर गया और लोगों ने तायवो को अपना राजा बना लिया।

एक दिन जब तायवो महल में अकेला बैठा था तो उसे ध्यान आया कि उसके तो पॉच साल पूरे होने वाले हैं और उसको अपने भाई से मिलने के लिये कपास के पेड़ के पास पहुॅचना है।

वह सोचने लगा कि पता नहीं उसका भाई कैसा होगा। क्या उसके जानवरों के जुड़वॉ भी उसके भाई की वैसी ही सेवा कर रहे होंगे जैसी कि उसके जानवर उसकी कर रहे थे?

वह यह सब कुछ सोच ही रहा था कि उसको महल में बहुत ज़ोर का शोर सुनायी दिया। इतने में उसकी पत्नी दौड़ी आयी और बोली कि महल में एक बहुत बड़ा मुर्गा आ गया है और वह बहुत ज़ोर से शोर मचा रहा है। कोई भी उसको महल से बाहर नहीं निकाल पा रहा।

यह सुन कर तायवो उधर गया जहॉ वह मुर्गा था। उसने भी उस मुर्गे को बाहर निकालने की बहुत कोशिश की पर वह उसके बाहर निकाले भी बाहर नहीं निकला।

इस पर उसने उस मुर्गे को तीर मार कर बाहर निकालने की कोशिश की परन्तु आश्चर्य, जितने भी तीर उसने उस मुर्गे को मारे उनमें से एक भी तीर उसको नहीं लगा बल्कि उलटा वह मुर्गा उसको देख कर उसके ऊपर और ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा।

तायवो ने इतना बड़ा मुर्गा अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखा था। आखिर उसने उस मुर्गे को मारने का इरादा छोड़ दिया और अपने कमरे की तरफ लौटने लगा तो मुर्गे ने उसका पीछा किया और एक खिड़की पर बैठ कर उसकी तरफ मुॅह कर के फिर से ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा।

अन्त में तायवो इस सबसे बहुत चिढ़ गया और उसने अपने चीते, बिल्ले, कुत्ते और चिड़े को बुलाया और अपनी तलवार ले कर उसको फिर से बाहर निकालने की कोशिश करने लगा।

उसके जुड़वॉ जानवर उस मुर्गे के पीछे भागे तो इस बार मुर्गा रुका नहीं वह उन जुड़वाओं के आगे आगे उड़ चला। वह शहर के बाहर गया और समुद्र के किनारे उस जगह की तरफ चला जहॉ तायवो ने पॉच साल पहले राक्षस मारा था।

यहॉ आ कर तायवो ने सोचा कि शायद कुछ अजीब सी बात हो जिसे यह मुर्गा मुझे दिखाना चाहता हो परन्तु तायवो ने महसूस

किया कि यह मुर्गा कोई मामूली मुर्गा नहीं था क्योंकि वह उन जुड़वॉ जानवरों को समुद्र के किनारे किनारे कई मील दूर ले आया था।

और हालॉकि उसके वे जुड़वॉ जानवर सब उसके पीछे पीछे बड़ी तेज़ी से चले जा रहे थे पर फिर भी कोई उसके साथ चल नहीं पा रहा था।

वे सब शाम तक चलते रहे कि अचानक मुर्गा समुद्र के किनारे से किनारे की तरफ के जंगलों की तरफ मुड़ गया।

यहॉ तायवो को एक खेत दिखायी दिया और खेत के पीछे दिखायी दिया उसको एक कम्पाउंड। तायवो ने उस खेत के पीछे के कम्पाउंड को देखने का निश्चय किया क्योंकि उसको कुछ ऐसा लगा कि वह मुर्गा शायद वहीं से आया था।

पर जब सारे जुड़वॉ उस कम्पाउंड में घुसे तो वहॉ तो कोई भी नहीं था और वह मुर्गा भी नहीं था। उस कम्पाउंड में कुछ देर तक घूमने के बाद वे सब वहॉ से चलने ही वाले थे कि उनको एक बुढ़िया दिखायी दी।

उसने उनसे पूछा कि वे लोग वहॉ क्या कर रहे थे।

तायवो बोला — "मॉ जी, मैं यहॉ उस बड़े मुर्गे को ढूँढ रहा हूँ जो हमारे शहर में आ गया था और उसने हमको बहुत परेशान किया। सारा दिन मैं उसका पीछा करता रहा और वह हमको यहॉ ले आया है। अब वह मुझे कहीं दिखायी नहीं दे रहा है। क्या आपने उस मुर्गे को देखा है या आप उसको जानती हैं?"

बुढ़िया बोली — "यकीनन मैं उसे खूब अच्छी तरह जानती हूँ। उसने मुझे भी बरसों से तंग कर रखा है। उसने मेरे पति को समुद्र में धकेल दिया है। अगर तुम उसे मार दोगे तो मैं तुम्हारा बड़ा एहसान मानूँगी।

तुम यहाँ थोड़ी देर ठहरो। जैसे ही उसे पता चलेगा कि तुम यहाँ आ गये हो वह खुद ही यहाँ आ जायेगा।

तुम लोग उसका पीछा करते करते थक गये होगे। अच्छा होता अगर यहाँ आने से पहले ही तुमने उसको मार दिया होता। खैर, अब तुम यहाँ बैठो, थोड़ा आराम करो। मैं तुम्हारे लिये थोड़ी ताड़ी[61] लाती हूँ।"

वे सब वहीं बैठ गये और आराम करने लगे क्योंकि वे लोग सचमुच ही बहुत थक गये थे। बुढ़िया जल्दी ही ताड़ी ले आयी। सबने ताड़ी पी और बुढ़िया उनको आराम करने के लिये छोड़ कर वहाँ से चली गयी।

कुछ ही देर में बुढ़िया लौट आयी। तायवो ने उसके पहले चेहरे से अबके चेहरे में बहुत फर्क देखा। वह अब उनकी तरफ देख कर मुस्कुरा रही थी और उसके पीछे वही मुर्गा था जो उनको यहाँ तक भगा कर लाया था।

वह बोली — "राजा तायवो, तुम और तुम्हारे जानवर अब मेरे जाल में फँस चुके हैं। यह मुर्गा जो मेरा नौकर है यही तुम लोगों को

[61] Translated for the words "Palm Wine".

यहॉ ले कर आया है। यह उस समुद्री राक्षस का घर है जिसको पॉच साल पहले तुमने मारा था और मैं उसकी मॉ हूॅ। अब तुम लोग यहॉ आ गये हो तो अब तुम सब यहीं मरोगे।"

यह सुन कर तायवो चीख कर अपनी तलवार उठा कर बुढ़िया को मारने वाला था कि बुढ़िया के ऊपर उछलने को तैयार सभी जुड़वॉ तब तक जानवर पत्थर के बन चुके थे सिवाय तायवो के।

बुढ़िया बोली — "मेरी जादू की ताड़ी काम कर रही है।

इतने में तायवो का तलवार पकड़ा उठा हुआ हाथ भी पत्थर का हो गया था और वह अब उसको हिला भी नहीं सकता था। धीरे धीरे उसके शरीर से जान सी जाने लगी और थोड़ी ही देर में बुढ़िया के कम्पाउंड में पत्थर की छह मूर्तियॉ खड़ी थीं।

बुढ़िया ज़ोर से हॅसती हुई बोली — "मेरे बेटे के छह सिरों के लिये ये छह पत्थर की मूर्तियॉ।"

मुर्गा भी खुशी से चिल्ला उठा — "कुकडूॅ कूॅ।"

आखिर पॉच साल का समय खत्म हुआ और केहिन्डे जो इन पॉच सालों में डाक्टरी अच्छी तरह सीख चुका था तथा उस शहर में उसका अभ्यास कर रहा था पॉच साल खत्म होने पर अपने भाई तायवो से मिलने के लिये चल पड़ा। उसके साथ उसका चीता, बिल्ला, कुत्ता, चिड़ा और तलवार भी थे।

जब वे उस कपास के पेड़ के पास पहुॅचे जहॉ उन्होंने आपस में मिलने का वायदा किया था तो केहिन्डे ने अपने भाई के चाकू की

तरफ देखा। वह अभी भी पेड़ में उसी तरह गड़ा हुआ था पर बड़ा मैला और जंग लगा हो चुका था जबकि उसका अपना वाला चाकू खूब चमक रहा था।

केहिन्डे ने अपने साथियों से कहा कि तायवो अब उनसे नहीं मिल पायेगा क्योंकि शायद वह किसी भारी मुश्किल में पड़ गया है। पर किसी को यह ही पता नहीं था कि वह गया कहॉ है।

तायवो को ढूँढने का अब एक ही रास्ता था कि पॉच साल पहले तायवो जिस रास्ते पर गया था उसी रास्ते पर चल कर उसके जुड़वॉ जानवरों को ढूँढा जाये।

सो सब लोग वहॉ से बॉयी तरफ चल दिये। वे लोग भी काफी दिनों तक चलने के बाद उसी समुद्र के किनारे पहुँच गये जिधर तायवो गया था और किनारे के साथ वाली सड़क पर चलते हुए तायवो के शहर आ गये।

इधर तायवो करीब एक महीने से महल से गायब था सो उसकी पत्नी और उसके राज्य के लोग उसके बारे में बहुत चिन्तित थे कि वह था कहॉ। वे लोग उसको और उसके अजीब साथियों को ढूँढने चारों तरफ गये हुए थे।

जब केहिन्डे अपने वैसे ही जुड़वॉ साथियों के साथ उस शहर में पहुँचा तो कोई आश्चर्य नहीं कि लोगों ने उसको तायवो समझ लिया। वे तुरन्त ही घर दौड़े गये और बोले कि राजा तो लौट आये हैं।

केहिन्डे जब शहर में पहुँचा तो उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि शहर में शादी के ढोल बज रहे थे और उससे भी ज़्यादा आश्चर्य तब हुआ जब लोग उसको अपना खोया हुआ राजा समझ कर उसको नमस्ते करने लगे।

बहुत सारे लोग उसके पास आ कर यह पूछने लगे कि वह इतने दिन कहाँ था और उसने आने में इतने दिन क्यों लगाये।

केहिन्डे समझ गया कि यह शहर उसके भाई का शहर था और उसने इस शहर के लिये काफी कुछ किया था पर अब वह कहाँ गया यह तो ये लोग भी नहीं जानते।

बाजार में खड़ा खड़ा यही सब सोच रहा था और यह भी सोच रहा था कि उसे अब आगे क्या करना चाहिये कि अचानक उसके सामने उसके सामने एक बहुत बड़ा मुर्गा आ गया और बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा।

वहाँ खड़े शहर के सभी लोग उस मुर्गे को देख कर बहुत गुस्सा हुए और उसको वहाँ से भगाने की कोशिश करने लगे पर वह भागता ही नहीं था। कुछ ने उसको डंडियाँ मारीं कुछ ने उसको पत्थर मारे परन्तु उसको कुछ लगा ही नहीं।

केहिन्डे को यह देख कर बड़ा मजा आ रहा था। वह सोच रहा था कि केवल एक मुर्गे से वे सब लोग इतने परेशान क्यों थे?

पर जब केहिन्डे उसकी तरफ बढ़ा तो उसको यह देख कर आश्चर्य हुआ कि जैसे जैसे वह उसकी तरफ बढ़ता जा रहा था वह मुर्गा पीछे हटता जा रहा था।

भीड़ में से कुछ लोग बोले — "एक महीना पहले ही तो आपने इस मुर्गे को शहर से भगाया था। अब यह फिर आपके पीछे पीछे आ गया। आप इसके साथ अब तक कहॉ थे?"

यह सब सुन कर केहिन्डे को विश्वास हो गया कि यही मुर्गा उसके भाई के गायब होने की वजह थी। सो वह अपने चीते, बिल्ले, कुत्ते और चिड़े को साथ ले कर इस मुर्गे के पीछे पीछे अपने भाई की खोज में चल दिया।

लोगों ने उससे बहुत बार कहा कि वह उस जादुई पक्षी के पीछे न जाये और घर चल कर अपनी पत्नी से मिले जो बहुत दिनों से उसका इन्तजार कर रही थी परन्तु उसने किसी की एक न सुनी और वह उस मुर्गे के पीछे पीछे चल दिया।

थोड़ी देर चलने पर ही केहिन्डे को पता चल गया कि वह वाकई कोई जादू का पक्षी था क्योंकि वह मुर्गा बहुत तेज़ जा रहा था और वे उसके साथ चल नहीं पा रहे थे। उसने उसका पीछा करना छोड़ दिया और आराम से चलने लगा।

इस तरह उसके पीछे चलते चलते शाम तक वे सब भी उसी खेत पर पहुॅच गये जहॉ तायवो और उसके साथी जानवर पत्थर की मूर्ति बने खड़े थे।

केहिन्डे ने शहर वालों से कहा था कि वे शहर में ही रह कर उसका इन्तजार करें और वह उस मुर्गे का पीछा कर के अभी आता है। उसने उनको यह नहीं बताया था कि वह खुद कौन है और उनका राजा तायवो जो उसका जुड़वॉ भाई था अभी तक गायब है।

केहिन्डे जब उस खेत पर पहुँचा तो बुढ़िया दरवाजे पर खड़ी उसका इन्तजार ही कर रही थी।

केहिन्डे ने उससे पूछा — "क्या यह मुर्गा आप ही का है?"

बुढ़िया बोली — "हॉ, यह मुर्गा मेरा ही है। मैंने ही इसको तुम्हारे भाई के शहर से तुमको यहॉ लाने के लिये भेजा था क्योंकि मुझे मालूम है कि तुम किसको ढूँढते फिर रहे हो। तुम राजा तायवो और उसके चीते, बिल्ले, कुत्ते और चिड़े को ही ढूँढ रहे हो न?"

केहिन्डे बोला — "आप कह तो बिल्कुल ठीक रही हैं मगर आप यह सब कैसे जानती हैं?"

बुढिया बोली — "तुम्हारे भाई और उसके जानवरों को ढूँढने में मैं तुम्हारी सहायता करना चाहती हूँ। वे लोग अभी एक महीना पहले ही इधर से गुजरे थे। मैंने उनसे यहॉ रात भर रुकने और आराम करने के लिये बहुत कहा पर वे रुके नहीं।

मुझे डर है कि वे कहीं किसी मुसीबत में न फॅस गये हों। पर तुम अगर यहॉ आराम करो तो मैं तुमको ताड़ी भी पिलाऊँगी और तुम्हारे भाई से मिलने का तरीका भी बताऊँगी।"

यह सुन कर केहिन्डे और उसके जानवर उस बुढ़िया के कम्पाउंड में चले गये और वहॉ जा कर बैठ गये। इतने में बुढ़िया ताड़ी का एक बड़ा सा कटोरा ले आयी।

केहिन्डे ने कई साल तक डाक्टरी की थी इसलिये वह बुढ़िया से बहुत ही सावधान था। जब केहिन्डे ने ताड़ी पी ली तो बुढ़िया ने वह ताड़ी उसके जानवरों को भी पीने को दी। उन्होंने भी वह ताड़ी पेट भर कर पी।

फिर बुढिया ने पूछा — "क्या तुम लोगों ने कटोरे की सारी ताड़ी खत्म कर दी?"

केहिन्डे बोला — "जी हॉ।"

बुढ़िया बोली — "अब तुम लोग मेरे साथ आओ मैं तुमको तुम्हारे भाई से मिलवाती हूँ।"

कह कर उसने तेल का एक दिया जलाया और उन लोगों को घर के बाहर की तरफ ले चली। चारों तरफ दीवार से घिरे कम्पाउंड के पास पहुँच कर बोली — "वे लोग तुमको उस झोंपड़ी में मिलेंगे। जाओ और देखो।"

उस झोंपड़ी में पहुँच कर केहिन्डे ने देखा कि उसका जुड़वॉ भाई और उसके जानवरों के जुड़वॉ जानवर सब मूर्ति बने खड़े हैं जैसे कि वे पत्थर के बने हों।

बुढ़िया दिया ले कर उन सबके पास आ गयी ताकि वे उन मूर्तियों को ठीक से देख सकें।

वह बोली — "देखा तुमने? उन्होंने भी मेरी ताड़ी पी थी और उनका यह हाल हो गया। अब मैंने तुमको तुम्हारे भाइयों से मिलाने का वायदा पूरा कर दिया है। आज से तुम लोग एक दूसरे की तरफ मुँह कर के साथ साथ खड़े होगे।"

केहिन्डे यह सब देख कर डर गया। उसने पूछा — "क्या ये लोग अब किसी भी तरह से ज़िन्दा नहीं हो सकते?"

बुढ़िया यह सुन कर हँसी और उसके जानवरों की तरफ इशारा करते हुए बोली — "देखो इन लोगों ने तो पत्थर की मूर्ति में बदलना शुरू कर दिया है।

कुछ पल बाद तुम्हारे शरीर का खून भी ठंडा पड़ जायेगा और तुम भी पत्थर की मूर्ति बन जाओगे। फिर भी तुम्हारे मरने से पहले मैं तुमको इनको ज़िन्दा करने का तरीका जरूर बताऊँगी।"

वह तने खड़े केहिन्डे की तरफ देखती हुई बोली — "मेरे घर में जादुई पानी के दो कैलेबाश[62] भरे रखे हैं अगर वह पानी तुम सब लोगों के ऊपर डाल दिया जाये तो तुम सब फिर से ज़िन्दा हो सकते हो।

पर यह बात केवल मैं जानती हूँ और मैं तुम सबको ऐसी ही मूर्तियों के रूप में देखना चाहती हूँ क्योंकि तुम्हारे भाई ने मेरे छह

[62] Calabash is a dry outer cover of a pumpkin like fruit which isss used to keep dry or wet things like Indians use pitcher. See its picture above.

सिर वाले बेटे समुद्री राक्षस को मारा है। अब काफी देर हो चुकी है इसलिये अब तुम बच नहीं सकते।"

इतना कह कर वह फिर से एक ज़ोर की हॅसी हॅसी।

केहिन्डे अपने तने खड़े होने के ढंग से हिला और बुढ़िया से बोला — "ओ बुढ़िया, अफसोस, यह तुम्हारी बदकिस्मती है कि मैंने डाक्टरी पढ़ी। तुम्हारे मुझे ताड़ी देने से पहले ही अपनी जेब से निकाल कर यह दवा मैंने उस ताड़ी में डाल दी थी इसलिये तुम्हारा जादू अब मेरे ऊपर काम नहीं करेगा।"

यह सुन कर बुढ़िया भागी पर केहिन्डे उससे तेज़ था। उसने तुरन्त ही अपनी तलवार निकाल कर उसको मार डाला।

फिर वह बुढ़िया के घर में गया और जादुई पानी के कैलेबाश ढूँढे। वे उस बुढ़िया के घर के एक अँधेरे कोने में छिपे रखे थे। उसने तुरन्त वे कैलेबाश ला कर उनका पानी तायवो और उसके जानवरों की मूर्तियों पर छिड़क दिया।

सभी तुरन्त ही ज़िन्दा हो गये।

सभी पॉच साल बाद मिले थे इसलिये सभी बहुत खुश थे। उन्होंने बुढ़िया का घर जला डाला। उन्होंने उस आग में उस मुर्गे को भी जला दिया जो उनको वहॉ तक ले कर आया था।

अगले दिन सुबह वे सब जादुई पानी के दोनों कैलेबाश ले कर तायवो के शहर चले।

तायवो रास्ते में बोला — "हम दोनों कितने एक से लगते हैं। है न?"

इस पर केहिन्डे ने अपने साथ होने वाली शहर की घटना सुनायी कि किस तरह शहर वालों ने उसको अपना राजा समझ लिया था।

इस पर तायवो को हॅसी सूझी सो वह बोला — "हम दोनों लोग घर में दो दरवाजों से घुसते हैं और देखते हैं कि मेरी पत्नी अपने पति को पहचान पाती है या नहीं।"

शहर पहुॅचने से पहले ही वे दोनों अलग अलग हो गये। दक्षिण की तरफ रहने वाले सरदार ने केहिन्डे को जब अपने जानवरों के साथ आते देखा तो सोचा कि वह तायवो था सो उसने तुरन्त ही शहर के बीच में रखा शाही ढोल बजाने के लिये अपने एक आदमी को भेज दिया।

तायवो उत्तरी दरवाजे से उसी समय अन्दर घुसा जिस समय उसका भाई केहिन्डे दक्षिण की तरफ से आया था। सो उत्तरी तरफ वाले सरदार ने तायवो और उसके जानवरों के आते देखा तो उसने भी शाही ढोल बजाने के लिये अपना एक आदमी भेज दिया।

अब क्या था शाही महल में भगदड़ मच गयी पर यह किसी को पता नहीं था कि महल के रक्षकों को कहॉ खड़ा किया जाये।

तायवो की पत्नी शोर गुल सुन कर महल से बाहर निकली कि यह सब क्या हो रहा है तो उसको शोर दो तरफ से आता सुनायी दिया।

और जब दोनों तरफ के लोग आपस में मिले तो सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ यह देख कर कि वहॉ दो राजा थे, दो चीते थे, दो बिल्ले थे, दो कुत्ते थे और दो चिड़े थे और सभी जुड़वॉ थे क्योंकि सबकी शक्लें एक दूसरे से मिलती थी।

तायवो की पत्नी तो यह देख कर बड़े असमंजस में पड़ गयी क्योंकि शहर के लोगों की तरह से वह भी उन दोनों में से अपने पति को नहीं पहचान सकी।

दोनों ने हॅसते हुए उसे अपने पति को पहचानने की चुनौती दी। पहले तो वह बड़ी परेशान हुई पर फिर उसने पहचान लिया।

बच्चों क्या तुम बता सकते हो कि उसने अपने पति को कैसे पहचाना?

उसने दोनों समूहों को अलग अलग कर दिया। हालॉकि दोनों समूह दिखने में एक जैसे थे पर वे यह भूल गये थे कि तायवो के बिल्ले और कुत्ते के गले में उसका अपना हार पड़ा था।

बस इसी से उसने अपने पति को पहचान लिया।

सभी लोग वहॉ दो साल तक खुशी खुशी रहे। दो साल बाद केहिन्डे बोला कि अब उनको अपने माता पिता को देखने जाना चाहिये। सो कुछ ही दिन बाद वे अपने घर की तरफ चल पड़े।

जब वे कपास के पेड़ के पास पहुँचे तो उनके चाकू अभी भी वहीं गड़े हुए थे बस फर्क इतना था कि अब तायवो वाला चाकू मैला और जंग लगा नहीं था। वह भी अब केहिन्डे के चाकू की तरह चमक रहा था। उन्होंने अपने अपने चाकू पेड़ से निकाल लिये और फिर घर की तरफ चल दिये।

दोनों जब घर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि उनका घर खाली है और टूट फूट चुका है। वे बहुत दुखी हुए। उनके माता पिता का कहीं पता न था।

पूछने पर पता चला कि उनकी माँ कुछ साल पहले मर चुकी है और उनका पिता उनके जाने के कुछ दिन बाद ही मछली पकड़ते समय नदी में डूब गया था।

दोनों ने अपनी माँ की कब्र के बारे में पता किया और फिर वहाँ पहुँच कर केहिन्डे ने अपनी कमर से बोझा खोला। वह बोला — "मैं वह जादू का पानी अपने साथ लाया हूँ जिसे तुम्हारे ऊपर छिड़क कर मैंने तुम लोगों को ज़िन्दा किया था। देखें इसका यहाँ क्या असर होता है।"

कह कर उसने थोड़ा सा पानी अपनी माँ की कब्र पर डाला। पानी डालते ही वहाँ की जमीन हिलने लगी। सभी लोग पीछे हट गये।

कुछ ही पल में जमीन फट गयी और वहॉ एक बड़ी चट्टान जमीन के ऊपर आ गयी। उसका नाम था ओलुमो। वह चट्टान आज भी अबैकुटा[63] शहर में देखी जा सकती है।

इसके बाद वे दोनों भाई उस जगह पर गये जहॉ उनका पिता डूब कर मरा था। उन्होंने वहॉ भी थोड़ा सा पानी डाला तो वहॉ पानी फैलने लगा और वहॉ ओसा नाम का एक लैगून बन गया जिसे आज लैगोस[64] कहते हैं।

बच्चो कुछ साल पहले तक यही नाइजीरिया की राजधानी थी।[65]

तायवो और केहिन्डे फिर तायवो के शहर लौट आये। वहॉ तायवो ने कई साल राज किया। काफी दिन भाई के साथ रहने के बाद केहिन्डे ने सोचा कि वह अपने शहर जा कर फिर से डाक्टरी करेगा।

तायवो उसको कपास के पेड़ तक छोड़ने आया। कुछ समय बाद केहिन्डे मर गया और उसके साथ ही मर गये उसके जानवर। इधर तायवो ने बहुत सालों तक राज किया। उसके कई बच्चे हुए। जब वह मरा तो उसके जानवर भी उसके साथ ही मर गये।

---

[63] Olumo rock can still be seen in Abeokuta town in Nigeria

[64] Osa named Lagoon which is now called Lagos. It was the capital of Nigeria till more than 25 years ago.

[65] Its new capital is Abuja since 12 Dec 1991 replacing Lagos.

उसके मरने के बाद उसका बेटा राजा बना और वह ओयो[66] का पहला राजा था।

[66] Oyo is an adjacent state to Lagos in Nigeria.

List of Tales of "Folktales of Nigeria-1"

1. A Sad King and His Sad Kingdom
2. The Lost Heir
3. The Latchkey Prince
4. The Flute
5. Magical Pumpkin
6. A Girl, Frog and the Son of the Chief
7. Juyin Gatan Fara
8. Dog and Lion
9. Master Man
10. Chinye
11. The Farmer's Son Becomes a Hunter
12. Three Brothers and the Pot of Porridge
13. How the Chipmunk Got Stripes
14. Keegbo Keegba and Spirits
15. A Bird Steals Iyawo's Baby
16. Two Sisters and an Old Man
17. How Olomuroro Made Children Thin
18. The Stolen Soup Aroma
19. One Man and His Precious Cow
20. Grasshopper and the Toad
21. The Story of a Tadpole
22. The Wise Dog
23. Why the Hawk Never Steals
24. The Bull and the Fly
25. The Leopard and the Hedgehog
26. The Hen and the Hawk
27. The Elephant and the Cock
28. The Story of the Stranger and the Traveler
29. Taking a Sacrifice to Heaven
30. Concerning the Eagas and Their Young

List of Tales of “Folktales of Nigeria-2”

1. Kin Kin and the Cat
2. The Funeral of the Forest King
3. The Funeral of Hyena's Mother
4. Olobun's Sacrifice
5. The Hunter and His Magic Flute
6. Tintinyin and the Unknown King of the Spirit World
7. The Boy and the Magical Yam
8. An Orphan Boy and His Magical Twigs
9. Motinu and the Monkey
10. The Beautiful Girl and the Fish
11. A Hunter and a Hind
12. Oni and the Big Bird
13. Olusegbe
14. The Twins

Books on African Folk Tales Available in Hindi
By Sushma Gupta

Desh Videsh Ki Lok Kathayen Series

Africa Ki Lok Kathayen. 19 tales. 170 p
Dakshin Africa Ki Lok Kathayen. 28 tales. 172 p
Africa Se Kachhua Aayaa-1. 17 tales. 132 p.
Africa Se Kachhua Aayaa-2. 21 tales. 158 p.
Anansi Makada Africa Mein-2. 24 tales. 228 p
Anansi Makada Duniyan Mein. 33 tales. 210 p
Chalak Khargosh Africa Mein. (23 tales. 226 p.
Ethiopia Ki Lok Kathayen-1. 26 tales. 126p – Published
Ethiopia Ki Lok kathayen-2. 19 tales. 92p - Published
Ethiopia Ki Lok Kathayen-3. (47 tales/204p)
Mishra Ki Lok Kathayen. (13 tales/180p)
Nigeria Ki Lok Kathayen-1. (30 tales/184p)
Nigeria Ki Lok Kathayen-2. (14 tales/164p)

Lok Kathaon Ki Classsic Pustaken Series

No 1. Zanzibar Ki Lok Kathayen. By George W Bateman. 1901. 10 tales. 170 p.
No 7. Nelson Mandela Ki Priya Africa Ki Lok Kathayen. 2002. 32 tales.
No 8. Chaudah Sau Kaudiyan…. By Fuja Abayomi. 1962. 31 tales.
No 12. Africa Ki Lok Kathayen. By Alessandro Ceni. 1998. 18 tales
No 13. Lavaris Ladki Aur Doosari Kahaniyan. By Buchi Offodile. 2001. 41 tales.
No 14. Gaaya Ki Poonchh Ka Chanwar…. By Harold Courlander and George Herzog. 1947. 17 tales.
No 15. Dakshinee Nigeria Ki Lok Kathayen. 1910. 40 tales.
No 20. Pashchimee Nigeria Ki Lom Kathayen. By William J Barker and Cecilia Sinclair. 1917. 35 tales.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022